Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

03rd September 2021

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

निज़ाम के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए चलाया गया

हैदराबाद का धर्म युद्ध

हैदराबाद के धर्म युद्ध में अनेकों लोग शहीद हुए

शहीदों को हमारा सलाम

वीर शहीदों की शहादत रज़ाकारों के पतन का कारण बनी

1938-39 का आर्य सत्याग्रह इतिहास का एक अविस्मरणीय पन्ना

सरदार पटेल द्वारा शुरु किए गए पुलिस एक्शन के

तीन दिन बाद ही निज़ाम ने घुटने टेक दिए

कई रज़ाकार मारे गए व कई भाग निकले

आर्य समाज के संघर्ष के बिना काँग्रेस लूली लंगड़ी थी ।

आर्य समाज के संघर्ष के इतिहास को काँग्रेस व अन्यों ने मिटाने का प्रयास कर अक्षम्य अपराध किया है

हम केन्द्र सरकार से मांग करते है कि आज़ादी की लड़ाई में व नागरिक अधिकारों की लड़ाई में बलिदान हुए वीर शहीदों का इतिहास पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए वरना इतिहास क्षमा नहीं करेगा

आर्य समाज ध्रुवपेट में
श्रावणी वेद प्रचार महोत्सव सम्पन्न

ब्रह्मा पं. प्रियदत्त शास्त्री जी

मुख्य अतिथि : ठा. लक्ष्मण सिंह जी,

वरिष्ठ उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा व

मुख्य वक्ता श्री हरिकिशन वेदालंकार जी

उप-प्रधान सभा व

आर्य समाज ध्रुवपेट के प्रधान श्री राजकुमार सिंह जी, आर्य समाज ध्रुवपेट के मंत्री श्री जे.डी. मनोहर सिंह जी व कोषाध्यक्ष श्री सुरेश सिंह जी कार्यक्रम का संयोजन किया

आर्य समाज दयालबावली में
श्रावणी वेद प्रचार महोत्सव व

पं. सोहनलाल वानप्रस्थी का जन्म दिन महोत्सव सम्पन्न

ब्रह्मा पं. प्रियदत्त शास्त्री जी

मुख्य अतिथि : ठा. लक्ष्मण सिंह जी

वरिष्ठ उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा व

मुख्य वक्ता श्री हरिकिशन वेदालंकार जी

उप-प्रधान सभा व

विशिष्ट वक्ता : श्री विठ्ठल राव आर्य जी

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना

संयोजक : श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी

चित्र में देखे जा सकते हैं।

हिन्दी मिलाप

आर्य प्रतिनिधि सभा ने मनाया स्वतंत्रता दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश-तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम का दृश्य।

हैदराबाद, 14 अगस्त-(मिलाप ब्यूरो)

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश-तेलंगाना के तत्वावधान में सभा कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, सभा के वरिष्ठ उपमंत्री आर. रामचंद्र कुमार ने ध्वजारोहण किया। राष्ट्रगान के पश्चात रामचंद्र कुमार व उप-प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। इसके अलावा वैदिक कन्या गुरुकुल, बेगमपेट में सभा के उप-प्रधान हरिकिशन वेदालंकार ने ध्वजारोहण किया। राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में सभा के वरिष्ठ उप-प्रधन ठा. लक्ष्मण सिंह ने ध्वजा फहराया। कार्यक्रम में श्रीनिवास, अमर कुमार, देवमुनि, बस्सी रेड्डी, एच. सुधाकर व अन्य ने भाग लिया।

इस्लाम से लडे बिना नियति घायल!

America Islam Mushalman : यह शीर्षक अटपटा लगेगा। सोच सकते हैं अमेरिका लड़ कर ही तो घायल है। लेकिन अमेरिका ने इस्लाम से लड़ाई कहां बताई है? अमेरिका अपने को इस्लाम से लड़ता हुआ नहीं बताता है। उसने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध का झूठ, ढोंग बनाया हुआ है। इस्लाम के झंडावरदार ओसामा बिन लादेन और तालिबान से लड़ाई थी बावजूद इसके पश्चिमी सभ्यता झूठमूठ इस्लाम के साथ लिव-इन रिलेशनशिप दिखलाते हुए थी ! अफगानिस्तान में दबाकर पैसा खर्च किया। वहां विकास, लोकतंत्र, मानवाधिकार, संसद, चुनाव, सेना, शिक्षा व्यवस्था, स्त्री-पुरूष समानता के वे तमाम काम किए, जिससे लगे मानो अमेरिका और इस्लाम एक-दूसरे के लिए! यह ढोंग ७५ सालों से लगातार है।

पश्चिमी सभ्यता याकि ईसाईयत बनाम इस्लाम के क्रूसेड में पश्चिमी सभ्यता के हारने (हां, इस्लाम और क्रिश्चियनिटी की नौ क्रूसेड लड़ाइयों में मोटे तौर पर पांच दफा इस्लाम जीता है।), मध्यकाल के लंबे कटु अनुभव के बावजूद आधुनिक काल में इस्लाम के साथ ईसाईयत का, पश्चिमी सभ्यता का सहजीवन अमेरिका-ब्रिटेन का ही बनवाया एक ढोंग है। इसकी वजह में पश्चिमी सभ्यता के दिमाग, बुद्धि के कई विचार हैं। एक स्तर पर अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस ने जीने के अपने अंदाज में निज आजादी को पंख लगाकर ज्ञान-विकास, रिसर्च से जो पाया है तो उससे पश्चिमी समाज का मानना स्वभाविक है कि हमें लिबरल रहना है। यदि अमेरिका और पश्चिमी सभ्यता उदार, लिबरल अंदाज छोड़ चीन, तालिबानी या आम मुसलमान के मध्यकालीन सांचे में ढलेगी तो उससे उन्नति है या अवनति? वे बनेंगे या बरबाद होंगे?

हां, ईतिहास सत्य है, आधुनिक विकास का बीज मंत्र है कि समाज, देश विशेष में बुद्धि, काबलियत की आजाद उड़ान से ही लोगों के सुखकर जीवन का स्वर्ग बनता है। तालिबान या सऊदी अरब या चीन भले कबीलाई समाज बनाए, पैसे के टापू बने या दुनिया की फैक्टरी, सब मौलिक ज्ञान-विज्ञान-विकास में पश्चिमी विकास के आगे छटांग भी नहीं है और न कभी हो सकते हैं। वजह इंसान की निज बुद्धि की आजाद उड़ान। तभी तालिबानी भी पश्चिमी बंदूकें लहराते हुए हैं तो सऊदी अरब की तेल रिफाइनरी पश्चिमी विज्ञान का कमाल है और चीन की फैक्टरियां पश्चिमी तकनीक, पूंजी, उद्यम की नकल। इन सबके पीछे, इन सबकी जड़ में समाज में व्यक्ति को आजादी, समानता, और भाईचारे याकि फ्रांसीसी क्रांति का मूल बीज जिम्मेवार कारण है। जब ऐसा है तो एक स्तर पर इस्लाम से लड़ाई बताकर पश्चिमी समाज अपने आपको छोटा क्यों बनाए?

जंगली ही खोदते हैं सभ्यताओं की कब्र!

दूसरी वजह पश्चिमी सभ्यता की शातिरता है जो इस्लाम के साथ सहजीवन दिखला कर मुस्लिम इलाकों के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, शोषण के आर्थिक-रणनीतिक स्वार्थ साधे हुए हैं। पहले ब्रिटेन, फ्रांस और फिर अमेरिका की कमान में पश्चिमी सभ्यता ने कुल मिलाकर इस्लामी दुनिया को उल्लू बनाया है। इस्लामी देशों के संगठन, ओआईसी और ईरान से लेकर मलेशिया चाहे जो कहें और करें ये भूमंडलीकृत बाजार, उपभोग, उत्पादकता सबमें अमेरिका और पश्चिमी सभ्यता की व्यवस्थाओं में बंधे हुए और आश्रित हैं। पश्चिमी देश क्या ओआईसी देशों को ही हथियार बेच ७५ सालों से बेइंतहा कमाई नहीं कर रहे हैं?

एक बात और। मुसलमानों के लड़ते रहने या आतंकवाद से लड़ाई की बरबादी में बदनाम पश्चिमी सभ्यता है या इस्लाम? पृथ्वी की पौने आठ अरब आबादी में 9/11 के बाद से मुसलमानों को ले प्रेम उमड़ा या नफरत? इस्लाम की वाहवाही हुई या बदनामी? मुसलमान को आज किस निगाह से देखा जा जाता है? कैसा अजब मामला है जो अमेरिका और पश्चिमी सभ्यता को लगे छोटे-छोटे घावों पर इमरान खान से लेकर आम मुसलमान सुकून पाता है बिना यह बूझे कि उनके प्रति बाकी विश्व की निगाह कैसे बदलती हुई है। खुदा के बंदों को यह बेसिक सच्चाई समझ नहीं आती है कि वे पिछले ७५ सालों में भले आबादी बढ़ाते हुए है लेकिन जिंदगी तालिबानी और जलालत वाली बन रही है। सऊदी अरब का अमीर मुसलमान हो या पाकिस्तान का आम मुसलमान सबको गैर-इस्लामी देशों के एयरपोर्ट में कैसे देखा जाता है?

अपना मानना है वाशिंगटन में पहले डोनाल्ड ट्रंप और फिर बाइडेन प्रशासन ने भी अफगानिस्तान से सेनाएं हटाने की ठाने रखी तो इसके पीछे अमेरिकी बुद्धि का यह निष्कर्ष भी है कि २१ साल बहुत हो गए। अब आगे अफगानिस्तान, पाकिस्तान, अगल-बगल के ईरान, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान जैसे इस्लामी देशों और चीन को इस्लामी उग्रता में धंसने दो। पूरा इलाका क्योंकि चीन के साम्राज्यवादी मंसूबे के सिल्क रोड का कोर इलाका बन रहा है तो वहां तालिबानी प्रभाव फैलने दो। इलाके को जंगली बनने दो।

हां, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तालिबान से समझौता और अफगानिस्तान से सेना हटाने का

फैसला भले अमेरिका की अपनी किलेबंदी में किया था (मतलब अमेरिका के भीतर ओसामा बिन लादेन जैसा हमला नहीं हो सकता तो हम सुरक्षित)। लेकिन ट्रंप और बाइडेन दोनों चीन की सामरिक घेरेबंदी और उसे फंसाने का संकल्प भी लिए हुए हैं। पश्चिमी सभ्यता इस समय इस्लाम से ज्यादा चीन के साम्राज्यवादी मंसूबों का खतरा बूझे हुए है। उसे चीन के लिए समस्याएं पैदा करना है। यदि सीआईए का प्रमुख काबुल जा कर आला तालिबानी नेता से गुफ्तगू करने की हैसियत रखता है तो चीन के शिनजियांग प्रांत के उइगर मुसलमानों के नाम पर सीआईए-तालिबान में आगे साठगांठ नहीं बने इसकी क्या गारंटी। आखिर पहले भी सीआईए ने अफगानिस्तान के बहाने सोवियत संघ को खोखला बनाने में दस तरह के मुजाहिदीनी संगठन बनवाए थे।

आंतक से लड़ना बिना आंतक के बीज को मिटाए!

जाहिर है इस्लाम के साथ पश्चिमी सभ्यता के कथित सहजीवन में आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक जंग का ढोंग होशियारी के कई अमेरिका पहलू लिए हुए हैं।

बावजूद इसके पश्चिमी सभ्यता की इस्लाम से लड़ाई और क्रूसेड का सत्य इतिहासजन्य है तो जैसे भारत का भविष्य है वैसे अमेरिका और पश्चिमी सभ्यता का है। यों भारत का वैश्विक सिनेरियो में मतलब नहीं है। वह न तीन में है और न तीन सौ में। हिंदुओं का डीएनए बिल्कुल ही अलग है। वह झूठ और भय के इतिहास, वर्तमान और भविष्य को जीने की जीव रचना की नियति लिए हुए है। सोचें, यदि डोनाल्ड ट्रंप के बाद जो बाइडेन की नेचर जैसा सत्ता परिवर्तन भारत में हुआ होता तो ऐसा संभव था जो सेना हटाने का पहले जो फैसला हुआ उस पर नई सरकार डटी रहती। कश्मीर व पाकिस्तान जैसे मसले पर भी मनमोहन सरकार, मोदी सरकार और आगे की सरकार राष्ट्र, नस्ल, धर्म, बहुसंख्यक हिंदू कौम के दीर्घकालीन हितों मे निरंतरता नहीं रख सकती।

बहरहाल, इस्लाम बनाम बाकी सभ्यताओं का क्रूसेड घोषित-अघोषित तौर पर लगातार है तो वह आगे भी लगातार चलेगा। तालिबान की जींत से जब पाकिस्तान के इमरान खान खुशी से उछल पड़े तो भला आम मुसलमान की मनोदशा का कहना ही क्या! इसे यूरोपीय देशों में बूझा जा सकता है तो भारत में भी! इसलिए अफगानिस्तान से पश्चिमी सेनाओं का हटना सभ्यताओं के संघर्ष का निर्णायक मोड़ भी हो सकता है। अमेरिका अब आंतक के खिलाफ आकाश याकि केवल ड्रोन से लड़ाई लड़ेगा। उससे अमेरिकियों को नुकसान कम होगा और मुस्लिम या इस्लामी इलाके अधिक बरबाद होंगे। इजराइल जो करते हुए है वहीं एप्रोच पश्चिमी सभ्यता की होगी। अमेरिका क्यों कहीं सैनिक भेजे? बगदादी और इस्लामी स्टेट को जैसे आकाशी हमलों से खत्म किया है तो वह वैसे ही अफगानिस्तान या भविष्य में बनने वाले ओसामा बिन लादेन आदि को ड्रोन हमलों से हैंडल करेगा।

इसका सर्वाधिक दुष्परिणाम शायद यूरोप भुगते। फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी जैसे यूरोपीय देशों में आतंकी हमले बढ़ेंगें। २१ सालों में अपने आपको अभेदी किला बना व अफगानिस्तान, इराक, सीरिया, लीबिया आदि से सेना हटा अमेरिका ने अपने किले में सुरक्षित जीवन का बंदोबस्त बना लिया है लेकिन पश्चिमी सभ्यता के बाकी देश क्या करेंगें? ये इस्लाम से लड़ते हुए घायल होते जाएंगे। पश्चिमी सभ्यता हारेगी नहीं लेकिन हमेशा लड़ते रहेगी। ऐसा तब तक होगा जब तक अमेरिका और पश्चिमी सभ्यता सोचे नहीं कि लड़ाई जिस वजह से है और आसमानी किताब व कुरान ने अपने बंदों को जैसी जिंदगी जीने के लिए कहा हैं तो उसका क्या हो? काबुल की बीबीसी की ग्राउंड रिपोर्टिंग में सिकंदर करमानी और महफूज जुबैदी ने एक तालिबानी की जुबानी हकीकत बयां कीद् हमने युद्ध जीता, अमेरिका हारा We have won the war America has lost बाल्ख जिले के शैडो मेयर हाजी हिकमत ने यह खुलासा किया- तालिबान जैसे पहले था वैसा ही अब है। तब और अब में कोई फर्क नहीं है। उनके साथ के सैनिक कमांडर ने कहाद् जिहाद हमारी पूजा है। पूजा वह चीज होती है कि आप कितना ही करते जाएं, कभी थकते नहीं।२ यह जिहाद है२ पूजा है। यह पहवर के लिए नहीं, बल्कि अल्लाह और उनके कानून के लिए है। देश में शरिया लाने के लिए। जो भी हमारे खिलाफ होगा उससे लड़ेंगे

Jihad is an act of worship- Worship is something that however much of it you do you don't get tired. This is jihad…it is worship- We don't do it for power but for Allah and His law- To bring Sharia to this country- Whoever stands against us we will fight against them.

सोचें; आसमानी किताब, कुरान और खुदा को ले कर उसके बंदे कितने सच्चे और कैसे दो टूक! इनसे यूरोपीय देश और पश्चिमी सभ्यता आतंकवाद के खिलाफ युद्ध के ढोंग में लड़ कर क्या जीत सकती है? यही यक्ष प्रश्न है! पश्चिमी सभ्यता घायल होती जाएगी या जिहाद का जवाब जिहाद से देगी? या वह 'अल्लाह और उनके कानून' की आसमानी किताबों पर सोचते हुए स्थायी समाधान का मिशन बनाएगी?

अमेरिका क्यों इस्लाम से हार रहा

चट्टान जैसी अटल सभ्यताएं और विशाल साम्राज्य कैसे खानाबदोश घुड़सवारों की बर्बरता से खत्म हुए, इसकी दास्तां इतिहास में भरी हुई है। इतिहास में खैबर दर्रे से दिल्ली आए हमलावरों की दास्तां है तो आज खैबर से लौटता हुआ अमेरिका है! दोनों वक्त का फर्क है। बावजूद इसके कहमन सवाल हैं क्या शक्ति, स्वास्थ्य, अमीरी, प्रगतिशीलता, वैभव में सिंध के तब के हिंदू राजा और आज का अमेरिका क्या जंगली घुड़सवारों या आज के तालिबान से कमजोर थे या हैं? तब दोनों महान सभ्यताओं को घायल करने वाला कौन? क्या लुटेरे, वहशी और जंगली जुनूनी हमलावर नहीं?

कैसे ऐसा जो सिरमौर सभ्यताएं, महाशक्ति देश खानाबदोश जिहादियों से घायल और पतनगामी दिशा पाते हैं? वजह है सभ्यताओं की अंदरूनी जर्जरता! हां, जब सभ्यताएं ताकत और वैभव से लकदक होती हैं तो वह उसके भार में धंसी होती है। नेतृत्व अपने आपको भगवान समझता है तो प्रजा झूठ, गलतफहमियों, आरामपरस्ती में ताकत का जंगलीपना, किलिंग इंस्टिंक्ट खो बैठती है। वक्त की चुनौतियों का सत्यता से सामना नहीं होता। सभ्यता मौलिकता से, क्रिएटिविटी और दृढता से मुंहतोड़ जवाब नहीं देती। ईंट का जवाब पत्थर से नहीं, बल्कि जुमलों, मान्यताओं, नजरिए में खानबदोश जंगलियों को जंगली नहीं इंसान समझा जाता है। यह मिजाज हिंदू राजा का तब था और २१ सालों से अमेरिका के बुश, ट्रंप व लेकर बाइडेन प्रशासन का है। अमेरिका रियलिटी की अनदेखी करके लड़ाई लड़ रहा है। पिछले २१ सालों से लड़ाई इस्लाम की छेड़ी हुई है जबकि अमेरिका आंतकवाद से लड़ रहा है। वह मानने को तैयार नहीं कि हमलावर बर्बर हैं, धर्मांध हैं, जिहादी जुनून लिए हुए हैं तो लड़ाई की बुनियाद के सत्य की गांठ बांध लड़ाई लड़े। लड़ाई न नरमी से लड़ी जा सकती है और न अधबीच छोड़ी जा सकती है। मगर अमेरिका, पश्चिमी सभ्यता पिछले २१ सालों से कैसे लड़ते हुए है? अपने जीने के संस्कारों से बने सिद्धांतों धर्मनिरेपक्षता, मानवता, इंसानियत, बहुलतावाद, भाईचारे जैसे जुमलों से वह दुविधा में है तो लड़ता हुआ भी है। मूर्खता की हद जो तालिबान, अफगानों में लोकतंत्र, समानता, मानवाधिकार खिलाते हुए वह जंग जीतने के ख्यालों में था। ऐसे में सभ्य समाज को हराना ही है। जीतेगा तो वहीं जुनूनी जो मरने को भी जन्नत मानता है!

यही ज्ञात इतिहास की २६ सभ्यताओं के उत्थान और पतन की दास्तां का लब्बोलुआब है! इतिहासकार आर्नल्ड टहयनबी ने महान साम्राज्यों-सभ्यताओं के पतन का जिम्मेवार कारण वहशी, खानाबदोश, दुस्साहसी, बर्बर, जंगली देशों, कबीलों की किलिंग इंस्टिंक्ट को माना है। यह विश्लेषण पिछले पचास सालों के अनुभवों से भी सही प्रमाणित होता है। क्या इस्लाम ने अफगानिस्तान के जरिए पहले सोवियत संघ और अब अमेरिकी-पश्चिमी सभ्यता को नहीं भगाया? दोनों महाशक्तियां लड़ते हुए दुविधा में थी या नहीं कि करें तो क्या करें! वह भी तब जब सोवियत संघ (आज रूस) और अमेरिका दोनों चट्टान जैसे अटल और अनश्वर मानी जाने वाली महाशक्ति। दोनों के पास क्या नहीं था या क्या नहीं है? हथियार, तकनीक, ज्ञान-विज्ञान, पैसा, जिंदादिली और प्रगतिशीलता सब कुछ है।

ठीक विपरीत 9/11 हमला करने वाले खानाबदोश बिन लादेन, नवंबर २०१५ को बगदादी के हमलावर और १५ अगस्त २०२१ के कबीलाई तालिबानों का क्या बल जो अमेरिका-नाटो देश भागे या घायल हुए? जवाब है इस्लाम!

यह सत्य है या नहीं? यदि है तो 9/11 बाद के २१ सालों में जार्ज डब्लु बुश से ले कर बाइडेन को इस्लाम से लड़ना चाहिए था या नहीं? क्यों नहीं सत्य समझा और बोला कि जो झगड़ा है वह इस्लाम से है। ओसामा बिन लादेन, तालिबानी पठान यदि जिद्दी हैं, इनके कबीलाई जीवन के भाईचारे में जन्नत पाने का जिहादी जोश है तो वैसा इस्लाम से है।

इसलिए पश्चिमी सभ्यता जब खुद दुविधा के अपने जाल में फंसी व अटकी हुई है तो वह जीतेगी कैसे? राष्ट्रपति मैक्रों से जब पूछा गया कि फ्रांस क्या कर रहा है तो कहना था (अक्टूबर २०२० से पहले)- हम फ्रांस में क्या कर रहे हैं? इस्लाम के नाम के आतंकवाद से लड़ रहे हैं न कि इस्लाम से। France is fighting terror-

ism that is being committed in the name of Islam] not Islam itself क्योंकि इस देश को किसी धर्म से कोई समस्या नहीं है। पर उग्रवादी पढ़ाते हैं कि फ्रेंच का सम्मान न करें। महिलाएं नहीं हैं पुरूष के बराबर। छोटी लड़की के छोटे लड़के से बराबरी का अधिकार नहीं। इस सब पर मेरा दो टूक कहना है- इस देश में ऐसा नहीं चलेगा? I tell you very clearly Not in our country जीने का यह तरीका क्या आतंकियों, उग्रवादियों के चलते है?

सो, फ्रांस और यूरोपीय देश लड़ते हुए हैं लेकिन उग्रवाद, आतंकवाद से कि इस्लाम से! यों कईयों ने मस्जिद बनवाना रोका है तो हिज्ब, बुरके पर भी रोक। फ्रांस अगुआ इसलिए हुआ क्योंकि यूरोपीय देशों में मुसलमानों की सर्वाधिक आठ प्रतिशत आबादी फ्रांस में है। तथ्य यह भी कि सन २०१३ के बाद फ्रांस के कोई १७ सौ मुस्लिम नौजवान इस्लामी स्टेट बनवाने के लिए इराक, सीरिया गए। फिर फ्रांस ही आजादी, समानता, धर्मनिरपेक्षता, भाईचारे की क्रांति से अमेरिका-पश्चिमी समाज का वैचारिक-सभ्यतागत गुरू! तो फ्रांस का इस्लाम बनाम पश्चिमी जीवन पद्धति के संघर्ष में खदबदाना स्वभाविक हैं। वह राष्ट्र-राज्य-सभ्यता की अपनी रचना के बुनियादी सिद्धांतों, वैल्यूज में देश में बाद में आए मुसलमानों और बाहरी इस्लामी नेताओं की इस जिद्द को कैसे माने कि फ्रांस को हमारे माफिक बनाओ! हमें इस्लाम जैसे जीने को कहता है वैसे हम जीएंगे। उसमें फ्रांस का संविधान, व्यवस्था, भावना दखल नहीं करे। वह अपने संविधान अनुसार आजादी (अभिव्यक्ति), समानता (स्त्री-पुरूष), भाईचारे (सर्वधर्म समभाव) को ले कर मुसलमान से न कहे कि बच्चों को आधुनिक स्कूली शिक्षा दिलाओ। धर्म-मस्जिद, मौलानाओं पर वैसे ही सोचों-विचारों जैसे मूल फ्रांसीसी नागरिक निज आजादी में पोप, पादरी पर सोचता, बोलता, लिखाता और कार्टून बनाता है।

त्मंक सेव आंतक से लड़ना बिना आंतक के बीज को मिटाए!

सो, फ्रांस इस दबाव में जीता हुआ है कि वह मुसलमान की भावना में, उसके जीने के अंदाज में अपने को बदले। इस्लाम माफिक फ्रांस बने। मगर फ्रांस बदलने को तैयार नहीं। फ्रांस ने अभिव्यक्ति की आजादी (कार्टून) के अधिकार और राष्ट्रीय मूल्यों की जिद्द में इस दलील को सिरे से नामंजूर किया है कि वह धार्मिक (इस्लाम) भावनाओं का सम्मान करके अपने को बदले। अन्यथा नतीजा भुगते। मलेशिया के पूर्व प्रधानमंत्री महातीर के अनुसार- मुसलमानों को गुस्सा होने और लाखों फ्रांसीसियों को मारने का अधिकार है I have a right to be angry and to kill millions of French people½

महातीर का वाक्य अक्टूबर २०२० में फ्रांस में आतंकी वारदातों के बाद तब आया जब राष्ट्रपति मैक्रों ने कुछ ही साल पहले नागरिकता पाए ट्यूनीशियाई, पाकिस्तानी, अफगानी लड़कों द्वारा फ्रांसीसी नागरिकों के गले, हाथ काट कर मारने की एक के बाद एक घटनाओं पर अपने मन का यह सत्य बोला- फ्रांस झुकेगा नहीं never give up।

हम पर हमला हमारी वैल्यूज, आजादी के हमारे स्वाद पर है। हम ऐसे 'इस्लामी पृथकतावाद' को समुदायों में गैर-कानूनी बनाएंगे जो नागरिक कानून पर धार्मिक कानूनों को प्राथमिकता देता हैं।

'इस्लामी पृथकतावाद' फ्रांसीसी गणतंत्र में एक समानांतर व्यवस्था चाहता है, जिसमें उसके कानून सुपीरियर माने जाएं। यह नहीं होने दिया जा सकता कि कोई

धर्म 'धर्मनिरेपक्षता' पर हमला करके उसे बांधे कि हमारे साथ तो ऐसा व्यवहार रखो, वह लोकतांत्रिक आजादी में दखलंदाजी करे।

फ्रांस में इस्लाम को विदेशी प्रभाव से मुक्त होना होगा।इस्लामिस्ट हमारा भविष्य छीनना चाहते हैं Islamists want our future मुस्लिम संगठनों (जैसे मस्जिदों के इमाम संगठन) को गणंतत्र के मूल्यों

the Republic's values½ के सम्मान के अनुबंध पर दस्तखत करने होंगे।

इस्लाम वह धर्म है जो पूरी दुनिया में आज संकट का अनुभव लिए हुए है।

२ जरूरत है एन्लाइटमेंट वाले इस्लाम की। Islam des Lumières Islam of Enlightenment आलोकित इस्लाम या ज्ञानोदित इस्लाम)।

सोचें, राष्ट्रपति मैक्रों द्वारा 'इस्लाम' और 'इस्लामी पृथकतावाद' व इस्लाम को बदलने की जरूरत के जिक्र के साथ फ्रांस के नहीं झुकने के ऐलान पर। तभी इस्लामी देशों में उबाल! तुर्की के राष्ट्रपति अर्दोआन ने मैक्रों को पागल करार दिया तो इमरान खान ने कहा- मैक्रों ने दुनिया के मुसलमानों की भावनाओं को आहत किया है। वे इस्लाम पर हमला कर समाज में ध्रुवीकरण बनवा रहे हैं। ऐसे इग्नोरेंट, अज्ञानी सार्वजनिक बयान नफरत, इस्लामोफोबिया और उग्रवाद को फैलाने वाले

हैं। यही नहीं कई देशों में मुस्लिम संगठनों ने फ्रांसीसी उत्पाद और फ्रांस के बहिष्कार का आह्वान किया।

इस सबके बीच का सत्य क्या इस्लाम की इस जिद्द से लड़ाई नहीं है कि इस्लाम नहीं बदलेगा मगर फ्रांस बदले! अमेरिका और पश्चिमी सभ्यता बदले! क्या यही 9/11 के दिन लड़ाई का चरित्र नहीं था? यदि था तो राष्ट्रपति बुश को सत्य नहीं बोलना था कि ओसामा बिन लादेन और तालिबानी सब सऊदी अरब के फैलाए इस्लामी बीजों की पैदायश है तो लड़ाई भी उससे है।

मगर क्या बोला गया? अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, पश्चिमी सभ्यता तब (अब भी) महाशक्ति होने के बावजूद यह बोलते हुए थे कि जंग आतंक के खिलाफ है न कि इस्लाम के खिलाफ! नतीजा क्या है? 9/11 को चोरी-छुपे जिहादियों ने न्यूयार्क में अमेरिकी वैभव के प्रतीक व्यापारिक टावर ढहाए और २१ साल बाद १५ अगस्त २०२१ को अमेरिकी महासेना अफगानिस्तान से भागते हुए! पुराने-खात्म चेहरों की जगह इस्लामी देश बनाते वे नए तालिबानी चेहरे, जिनके हाथों पश्चिमी सभ्यता की कब्र खुदनी है। पश्चिमी ज़ीवन, लोकतंत्र, आजादी, समानता सब काबुल में दफन! तभी इस्लाम से पश्चिमी सभ्यता के इस हश्र पर गौर करते हुए सोचें कि तानाशाह-बर्बर चीन क्या शिनजियांग में इस्लाम से ऐसे हार सकता है? (जारी)

आर्य समाज जगे तो देश उठे

-डा. वेदप्रताप वैदिक

दो दिन मैंने हैदराबाद में बिताए। मैं सोचता रहा कि निजाम के विरुद्ध आर्यसमाज ने जबर्दस्त आंदोलन न छेड़ा होता तो क्या आज हैदराबाद भारत का हिस्सा होता? हैदराबाद तो क्या, भारत की आजादी और एकता में जो योगदान महर्षि दयानंद और आर्य समाज का था, उसके आगे सिर्फ गांधी की कांग्रेस ही टिक सकती है। कांग्रेस की भी असली ताकत आर्यसमाज ही था। इसके पहले कि कांग्रेस और गांधी का उदय हुआ महर्षि दयानंद ने स्वतंत्रता का शंखनाद कर दिया था। उन्होंने आजादी की नींद पक्की कर दी थी।

महर्षि दयानंद ने १८५७ के स्वाधीनता संग्राम में जो भूमिका निभाई थी, उस पर कई शोधग्रंथ लिखे जा चुके हैं। उत्तर भारत के ज्यादातर प्रमुख कांग्रेसी नेता आर्यसमाजी ही थे। क्रांतिकारियों में लगभग सभी आर्यसमाजी थे या आर्यसमाज से प्रभावित थे। अंग्रेज को भगाने में हिंसा और अहिंसा दोनों के समर्थक आर्यसमाजी रहे हैं। एक तरफ लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानंद थे तो दूसरी तरफ भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल थे।

महर्षि दयानंद ने सिर्फ आजादी की नींव ही नहीं रखी, उन्होंने संपूर्ण भारतीय समाज की शुद्धि की। उन्होंने किसी को नहीं बख्शा। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि धर्मों में चल रहे पाखंडों पर जमकर प्रहार किया। उनके जैसा महान बौद्धिक और निर्भीक संन्यासी भारत के इतिहास में कोई दूसरा नहीं हुआ। उन्होंने सारे विश्व को आर्य बनाने का संदेश दिया। 'कृण्वंतो विश्वमार्यम'।

लेकिन आज आर्यसमाज की दशा क्या है, इसी पर विचार करने के लिए हैदराबाद में अदभुत समागम हुआ। पूरे देश भर से सैकड़ों आर्यसमाजी नेता वहां आए थे। आर्यों का जो विश्व-व्यापी संगठन है, उसका नाम है- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ! इसके आज कल तीन भाग हो चुके हैं। तीनों के पदाधिकारी पहली बार एक मंच पर आए। मैंने उदघाटन-सत्र के अपने भाषण में यही कहा कि यदि आर्यसमाज फिर से पहले की तरह सक्रिय हो जाए तो भारत को महाशक्ति, महासंपन्न और विश्व गुरु बनने से कोई रोक नहीं सकता।

महर्षि दयानंद के सपनों का भारत आज के खंडित भारत की तरह नहीं था। वह आर्यावर्त्त था, जिसमें दक्षिण, मध्य और आग्नेय एशिया के वर्तमान राष्ट्र भी शामिल हैं। इनका महासंघ कौन खड़ा करेगा? इस भारत को नशाखोरी, मांसाहार, रिश्वतखोरी और अंग्रेजी की गुलामी से कौन मुक्त करेगा? केवल आर्यसमाज। आर्य समाज ऐसा संगठन है, जिसके लाखों सदस्यों का चरित्र और व्यक्तित्व ऐसा उज्जवल होता है, जैसे लाखों में किसी एक का होता है। उनका व्यक्तित्व दयानंद के अनुपम सांचे में ढला होता है, जो मौत से भी नहीं डरता। यदि भारत की युवा-पीढ़ी को दयानंद के सांचे में हम ढाल सकें और देश में सुसंस्कारों के लिए एक बड़ा जन-आंदोलन खड़ा कर सकें तो हमारी डगमगाती राजनीति को भी मजबूत सहारा मिल सकता है।

-आर्य समाज प्रेमनगर का ३ दिवसीय वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

'हाथ मुंह धोना कर्म है और सन्ध्याकरना धर्म है। कर्म छूट सकता है परन्तु धर्म नहीं : पं. लेखराम'

आर्य समाज प्रेमनगर, देहरादून का तीन द्रसीय वार्षिकोत्सव आज २६ मार्च, २०१७ को सोल्लास सम्पन्न हो गया। हमें इस आयोजन के अधकांश कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का अवसर मिला। इस आयोजन में भाग लेकर हमें प्रसन्नता है।' आज प्रातः समाज में आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में बृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात भजन एवं प्रवचनों सहित विद्वानों के सम्मान हुए एवं कुछ अन्य कार्यक्रम भी हुए। भजन व सत्संग से पूर्व समाज के प्रधान डॉ. अशोक कुमार बंसल ने समाज के बारे में अनेक सूचनाएं दीं। दो लड़कियों के विवाह आर्य समाज के द्वारा कराए गए जिसमें पर्णव्यय आर्य समाज की ओर से किया गया। योग शिविर भी समय-समय पर आर्य समाज में आयोजित किए जाते रहे हैं। लोकों के घरों में जा जा कर वेद प्रचार के अन्तर्गत यज्ञ एवं सत्संग किया जाता है जिसका समस्थ व्यय आर्य समाज करता है। यदि परिवार चाहे तो स्वयं भी कर सकता है। पहले यह कार्यक्रम वार्षिकोत्सव के कुछ समय पूर्व आयोजित किए जाते थे परन्तु अब इसे वर्ष भर चलाने की सहमति बनी है। गुरुकुल व अन्यत्र कुछ बच्चों की शिक्षा का पूर्ण व्यव वहन किया जाता है। इन सब कार्यों व सेवा भाव की मुक्त कण्ठ से सराहना की और कहा कि उनका मुझे सन्तोषजनक सहयोग प्राप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि हमने अनेक कार्य व उनका प्रबन्ध श्री पीयूष जी को सौंपा हुआ है। प्रधान जी ने आचार्य सुनील जी की भी प्रशंसा की और कहा कि वह हमारी आर्य समाज के अंग है।

प्रधान जी के सम्बोधन के बाद एक १० वर्षीया बालिका चार्वी मेन्दीरत्ता ने शाकाहार के समर्थन में एक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि मनुष्य का मूल स्वभाव शाकाहारी है। मनुष्य शरीर की संरचना एवं उसकी मूल प्रकृति उसका शाकाहारी होना दर्शाती है। मांस मनुष्य का मूल स्वभाव शाकाहारी है। मनुष्य शरीर की संरचना एवं उसकी मूल प्रकृति उसका शाकाहारी होना दर्शाती है। मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है। भारत में विश्व के सबसे ज्यादा लोग, जिनकी संख्या करोड़ों में है, शाकाहारी हैं। भारत में विश्व का एकमात्र देश है जहां सबसे अधिक लोग शाकाहारी हैं। अमेरिका आदि अनेक उन्नत व विकसित देशों में लोग मांसाहार छोड़ रहे हैं। वैज्ञानिक व शरीर विज्ञानियों की दृष्टि में भी मांसाहार अनेक रोगों का कारण है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मांसाहार उच्च रक्तचाप व मधुमेह में हानिकारक व अहितकारी होने के साथ हड्डियों व दांतों को कमजोर करता है। मांसाहार तन को ही रोगी नहीं बनाता अपितु मन को भी रोगी बनाता है। मांसाहार मनुष्यों की एक बुरी आदत है जिसे बदला जा सकता है। इसके बाद समाज के वरिष्ठ सदस्य एवं अधिकारी श्री के.एल. आहूजा जी ने एक गीत पंक्तियां गा कर सुनाई। कविता के बोल ते 'जीते भी लकड़ी मरते भी लकड़ी देख तमाशा लकड़ी का। क्या जीवन क्या मरना कबीरा खेल रचाया लकड़ी का।' इसके बात समाज के मंत्री जी द्वारा समाज को दान में प्राप्त धनराशि की सूचना दी गई। इसके बाद श्री गिरधारी लाल पाहवा जी ने एक भजन गाया जिसके बोल थे 'ओ३म् है जीवन हमारा ओ३म् प्राणाधार है। ओ३म् है कर्ता विधाता ओ३म् पालनहार है।' देहरादून के आर्य समाज के प्रचारक श्री उम्मेद सिंह विशारद ने भी भजन गाने के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि हम सुनते हैं कि सत्य कभी बदलता नहीं है परन्तु हम देखते हैं कि देश, काल व परिस्थिति के अनुसर सत्य बदलता भी है। उदाहरण के रूप में उन्होंने कहा कि अभी ११.०० बजे हैं जबकि एक घंटे बाद हम कहेंगे कि अब १२.०० बजे हैं। उन्होंने कहा कि सभा उसको कहते हैं जहां कम से कम एक व अधिक विद्वान हों।

सभा में उपस्थित मुख्य विद्वान आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में आर्य समाज के नियम 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए' का उल्लेख किया। उन्होंने प्रश्न किया कि क्या प्रत्येक परिस्थिति में सत्य बोलना आवश्यक है? स्वामी दयानन्द जीका उदाहरण देकर उन्होंने बताया कि वह कहते हैं कि यदि लोग उनकी अंगुलियों को बत्तियां बना कर जला भी दे तब भी वह सत्य बोलेंगे, असत्य नहीं। शास्त्री जी ने कहा कि उपदेश वही कर सकता है जिसे भय न खाता हो। विद्वान वक्ता ने महाभारत से द्रोणाचार्य की वीरता का वर्णन किया और कहा कि वह भारी संख्या में पाण्डव पक्ष के योद्धाओं का संहार कर रहे थे। कृष्ण और अर्जुन ने मंत्रणा की और कहा कि यदि इन्हें रोका नहीं गया तो कुछ ही दिन में हमारे सारे योद्धा वीरगति को प्राप्त हो जाएंगे और कौरव पक्ष विजयी हो जाएगा। विचार में द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा की बात कही गई कि यदि कोई द्रोणाचार्य को यहकहे कि उसका पुत्र अश्वत्थामा मारा गया है तो वह युद्ध नहीं करेगा। अर्जुन ने कहा तो द्रोणाचार्य ने विश्वास नहीं किया तब युधिष्ठिर जी को मनाया गया बहुत कठिनाई वह माने। उनका अधूरा वाक्य ही द्रोणाचार्य ने सुना और हथियार फेंक दिए। तत्काल उनका सिर काट दिया गया। आचार्य जी ने पूरा प्रकरण विस्तार से सुनाया। श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि यदि ऐसा न किया जाता तो धर्म व संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती थी। अतः धर्म रक्षा के लिए यह आपद् धर्म के रूप से असत्य वचनों का प्रयोग किया जाता है। धर्म व सत्पुरुषों की रक्षा के लिए ही इसका प्रयोग होना चाहिए, किसी निजी कार्यों के लिए नहीं।

श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने श्रीकृष्ण जी को आप्त पुरुष कहा है। उन्होंने कहा कि आप्त पुरुष वह होता है जिसका प्रत्येक शब्द माननीय व स्वीकार

करने योग्य हो। उन्होंने पूछा कि यदि पाण्डव झूठ का सहारा न लेते तो क्या वह बच पाते ? झूठ बोलकर वहां धर्म बचाया जा रहा था इसलिए वह झूठ झूठ न होकर धर्म व सत्य था। झूठ तब सत्य हो जाता है जब उसके द्वारा धर्म की रक्षा की जाती है। इसी सन्दर्भ में श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी द्वारा आर्य समाज के नियम 'सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए' का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यहां यथायोग्य के साथ जैसे को तैसा व्यवहार करने की अनुमति है। इसके द्वारा ही कई बार अधर्म से धर्म की रक्षा होती है। आचार्य जी ने कहा कि बेशर्म व बेईमान लोगों के साथ यथायोग्य व्यवहार करना ही उचित है। उन्होंने कहा कि यदि कृष्ण जी यथायोग्य व्यवहार न करते तो देश, धर्म और संस्कृति खतरे में पड़ जाती। उन्होंने कहा कि धर्म रक्षा के लिए झूठ का व्यवहार भी सत्य होता है। आचार्य जी ने कहा कि अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलना गलत है।

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि अग्नि के स्वभाव में परिवर्तन कभी नहीं होता। वायु व जल के स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है। आपने इसके उदाहरण में कहा कि गर्मी वा अग्नि के सम्पर्क में आने पर जल शीतलता को त्याग कर गर्म हो जाता है। आपने कहा कि अग्नि आगे ले जाती है। इसके स्वभाव में कभी परिवर्तन नहीं होता। आपने यह भीकहा कि मन शरीर के अन्दर ही रहता हुआ गति करता है। मन चित्त के संस्कारों में रमण करता वा खेलता है। उन्होंने यह भी कहा कि योगियों का मन बाहर गति करता हैं यज्ञ की चर्चा आरम्भ करते हुए आपने कहा कि कितने आर्य समाजों के भाव उज्ज्वल हैं ? आपने यह बात मनसा परिक्रमा के मन्त्रों व यज्ञ प्रार्थना के सन्दर्भ में स्रोताओं को कही। आर्य समाज के अधिकारियों के सन्दर्भ में आपने कहा कि सम्मान से अधिकार व पद छोड़ने से सम्मान बरकरार रहता है। उन्होंने कहा कि जो समाज का अधिकारी प्रतिदिन यज्ञ न करे, ऐसे समाज के अधिकारी ढ़ोगीं होते हैं। आपने कहा कि आपको सर्वसम्मति से जिला सहारनपुर आर्य समाज का अध्यक्ष बनाया गया है। आपने अपने अधीन एक ४ सदस्यीय समिति बनाई है जिसका उद्देश्य सदस्य एवं अधिकारियों के घरों में जाकर उनके परिवार से बातें करना है कि वहां सन्ध्या व यज्ञ होता है या नहीं, स्वाध्याय करते हैं या नहीं ? सत्संग में जाते हैं या नहीं ? मांसाहार, अण्डे व धूम्रपान का कोई सेवन तो नहीं करता ? आचार्य जी ने कहा कि कुछ लोगों के बारे में पुष्ट जानकारी मिलने के बाद हमने दो अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया। आचार्य जी ने कहा कि अधिकारी उन लोगों को बनाएं जो आर्य समाज के नियम व सिद्धान्तों का पालन करते हैं। उन्होंने कहा कि जब तक हम सैद्धान्तिक दृष्टि से आर्य समाजी नहीं बनते, हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी नहीं हो सकते।

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि यज्ञमय जीवन वाला वेदानुयायी बन जाता है। घर में जब यज्ञ होगा तभी परिवा आर्य समाजी बनेगा अन्यथा नहीं। यज्ञ क्यों करें के उत्तर में उन्होंने कहा कि पंचमहायज्ञ करना प्रत्येक आर्य समाजी के लिए अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि दयानन्द जी और मनुस्मृति के अनुसार भी हमें यथाशक्ति पंचमहायज्ञ करने चाहिए। यदि हम पंचमहायज्ञ नहीं करेंगे तो पाप के भागी होंगे। यदि करेंगे तो पुण्य के भागी नहीं होंगे। परमात्मा का हमें धन्यवाद करना है, हम उसके ऋणी है, नहीं करेंगे तो ऋण न चुकाने के कारण हमें पाप लगेगा। बुद्धि की चर्चा पर आचार्य जी ने कहा कि यह हमें ईश्वर की देन है। इसके लिए यदि ईश्वर का धन्यवाद करें तो पाप नहीं लगेगा परन्तु पुण्य नहीं मिलेगा और यदि ईश्वर का धन्यवाद नहीं करते तो ईश्वर का कर्ज व ऋण दूर न होने से पाप लगेगा। उन्होंने कहा कि मनुष्य का शरीर सब प्राणियों से श्रेष्ठ है। परमात्मा ने पशु व पक्षी आदि प्राणियों को बुद्धि नहीं लगता। हम प्रभु के ऋण से उऋण होने के लिए उसका धन्यवाद क्ररते हैं। आचार्य जी ने कहा कि कोई किसी से कर्ज ले और न लौटाए तो उसे पाप लगेगा। लोग उसे बेईमान कहेंगे। उन्होंने पूछा कि यदि मैं किसी का कर्ज लेकर लौटाता हूँ तो क्या कोई माला लेकर आता है ? उन्होंने कहा कि इसी प्रकार से पंचमहायज्ञ करने से कर्ज लौटाया जाता है, पुण्य नहीं होता। आचार्य जी ने कहा कि वह प्रवचन कर ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करते हैं ? यदि कोई मेरा प्रवचन सुनकर सुधार करता है तो मुझे पुण्य मिलेगा नहीं तो उन्होंने कहा कि यज्ञ कि १६ आहुतियां शुदि्ध के लिए होती हैं जितना प्रदुषण हमारे निमित्त से होता है। अन्तःकरण की पवित्रता का महत्व भी उन्होंने बताया। ईश्वर का वाक्य उन्होंने ओ३म बताया। उन्होंने कहा कि जब हम ओ३म का उच्चारण करें तो हमारे भीतर ईश्वर के सर्वरक्षक होने का भाव आना चाहिए। परमात्मा के पास बैठकर यदि हम सन्ध्योपासन करेंगे तो हमारे गुणों में सुधार होगा। आचार्य पतंजलि के पुत्र सौभरी मुनि का उदाहरण देकर बताया कि जल में मछलियों को देखकर उनके संस्कार बदल गए और उन्होंने विवाह कर लिया था। बाद में सौभरी मुनि ने कहा कि आनन्द तो ईश्वर के सान्निध्य में ही है, विवाह व बचों में नहीं। संस्कार बदलने से उन्होंने विवाह किया था.

आचार्य जी ने कहा कि यज्ञ पवित्र एवं उत्तम कार्य हैं। इसके करने से मनुष्य भी पवित्र व उत्तम बन जाता है। यज्ञ को छोड़ने से हम संगतिकरण से वंचित हो गए हैं। इसी कारण परिवार में सभी सदस्यों के एक समान संस्कार नहीं हैं। आचार्य जी ने यज्ञ से जुड़ने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि नित्य प्रति सन्ध्या अवश्य करो। हृदय में ईश्वर को जानकर प्रार्थना ही सन्ध्या है। आपने धर्म-कर्म की चर्चाकी और कहा कर्म छूट जाए परन्तु धर्म नहीं छूटना चाहिए। इसके लिए उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी और पं. लेखराम जी का उदाहरण दिया। उन्होंने बताया कि रेलयात्रा करते हुए सन्ध्या समय होने पर लेखराम जी ने बिना हाथ मुंह धोए सन्ध्या की। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें उलाहरना देते हुए कहा कि कर ली आपने पेशावरी सन्ध्या ? पं. लेखकराम जी उनका आशय समझ गए और बोले, महात्मा जी ! हाथ मुंह धोना कर्म और सन्ध्या करना धर्म है। कर्म छूट सकता है परन्तु धर्म नहीं। इसी के साथ आचार्य जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

आचार्य जी के बाद गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य डॉ. धनंजय जी और दयानन्द आर्य वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय की संस्कृत विभाग कि प्रचार्या सुखदा सोलंकी जी का प्रवचन होना था। हम आर्य समाज सुभाषनगर, देहरादून के वार्षिकोत्सव के लिए चले गए अतः दो महत्वपूर्ण व्याख्यान हम नहीं सुन सके। इसका हमें दुःख है। सत्र की समाप्ति के बाद सामूहिक ऋषि लंगर हुआ है। वार्षिकोत्सव का आयोजन सोल्लास सम्पन्न हुआ।

हैदराबाद सत्याग्रह अमर बलिदानी वीर रामनाथ

-डॉ. अशोक आर्य

ब्र. रामनाथ का जन्म कस्बा असारवा (अहमदाबाद) में ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी सम्वत् १९७३ वि. तदनुसार १६ जून १९१७ ई. को पिता मोती भाई रणछोड़ भाई तथा माता मणिबेन के यहां हुआ। पिता सुधारवादी विचारों के विद्याप्रेमी थे। उनके आठ पुत्र-पुत्रियां थीं। पिता अपने पुत्र को विद्वान्, आर्य संस्कृति का प्रेमी व धर्मसेवक बनाना चाहते थे। इसी हेतु इन्हें नवसारी के गुरुकुल सूपा में प्रवेश दिलाया गया।

एक बार बालक रामनाथ अवकाश में पिता के पास आया था कि गुजरात के वरसोद क्षेत्र में प्लेग फैल गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार व पिता से प्राप्त समाज-सेवा की भावना ने जोर दिया। अतः ब्र. रामनाथ अपनी बहिन को साथ लेकर सेवा-क्षेत्र में जा डटा। गुरुकुल सूपा में दस वर्षीय सिक्षा पूर्ण कर उच्चशिक्षा हेतु गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश लिया। इन्हीं दिनों हैदराबाद के ऐतिहासिक सत्याग्रह का नाद बज उठा। सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी महात्मा नारायण स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों का सत्याग्रह के लिए आह्वान किया। ब्र. रामनाथ ने बी परिवार से तदर्थ स्वीकृति चाही किन्तु स्वीकृति न आने पर भी वह सत्याग्रह के लिए तैयार हो गए। (मां अपने बेटे को संकट में कैसे भेजना स्वीकार करती !) वह जानते थे कि परलोक में तो धर्म ही साथ जाता है, शेष सब कुछ तो यहीं रह जाता है। फिर वह तो आर्य समाज के एक उदीयमान नक्षत्र थे। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का अपार ऋण अपने पर मानते थे, जिसे उतार कर ऋषि-तर्पण करने का यह स्वर्ण अवसर था। आर्य समाज की सेवा ही जिन का धर्म था, वह धर्म से विमुख कैसे होते ? यह कहा भी गया है कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करो किन्तु केवल उसी का, जिससे धर्म की रक्षा हो, दूसरों को सुख पहुंचे, जिसमें परोपकार दिखाई दें। इसी बात को सामने रखते हुए ब्र. रामनाथ जी ने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने का निश्चय किया। वह यह भी तो जानते थे कि जीवन में ऐसे सौभाग्य बार-बार नहीं मिला करते। इस प्रकार के निर्णय के साथ ब्र. रामनाथ जी अपने साथियों के साथ हैदराबाद की ओर सत्याग्रह के लिए रवाना हो गए।

गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों के इस जत्थे को महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ सत्याग्रह करना था, किन्तु समय पर न पहुंच पाने के कारण उन्होंने सीधे हैदराबाद जा कर सत्याग्ह किया। सत्याग्रह करने पर पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया। इन सब को सजा होने के पश्चात् पहले हैदराबाद तथा बाद में वरंगल की जेल में रखा गया। जिस प्रकार की यातनाएं उन दिनों निजाम-राज्य हैदराबाद में दी जाती थीं उनकी चर्चा सुनकर आज भी हृदय कांप उठता है। गुरुकुल कांगड़ी के इन वीर सैनिकों को भी भयंकर व असहनीय यातनाएं दी गई। इन आर्य वीरों ने बड़े साहस के साथ ये यातनाएं सहन कर इस दुःखद परीक्षा की घड़ी में साहस का परिचय देते हुए इसे सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। यह कोई साधारण जेलें तो थीं नहीं, रियासती जेलें थीं तथा लड़ाई थी मजहब की। ऐसी अवस्था में कैसा खाना होगा, कैसा व्यवहार मिलेगा, इस सब का तो पहले से ही सत्याग्रहियों को अनुमान था। अतः यहां जिसने भी सत्याग्रह किया वह पहले से ही अपने सिर पर कफन बांधकर गया था। इसलिए किसी के भी भयभीत होने का प्रस्न ही नहीं था। ब्र. रामनाथ ने भी अन्य साथियों के साथ मिलकर ये सव कष्ट उठाए, यथा प्रतिदिन मलमूत्र उठाना, बन्द कमरों में पिटाई भी सहन की, धर्म व देवी-देवताओं के नाम से गन्दी-गन्दी गालियां सहन की, ऐसे ही अनेक प्रकार के दारुण दुःख सहन किए, परन्तु हृदय से परमात्मा का विश्वास, धर्म पर मर-मिटने का उत्साह कम न हुआ। इसी प्रकार छह महीने भी बीत गए। अन्त में आर्यों के साहस के आगे निजाम के झुकना पड़ा। आर्य विजयी होकर जेलों से छूट कर वापिस लौटने लगे।

हैदराबाद के सत्याग्रह की सफलता से सब ओर खुशी ही खुशी दिखाई देती थी। आर्य ही नहीं, दूसरे लोग भी आर्यों को बधाइयां दे रहे थे। हिन्दुओं में नया साहस पैदा हुआ। सभी आर्य जेलों से मुक्त होकर वापिस आ गए। हमारे चरित-नायक ब्र. रामनाथ जी भी जेल से छूट कर साथियों सहित वापिस आ गए, किन्तु जेल से वह अपने साथ एक भयंकर रोगलेकर आए। जेल में उन्हें विषम ज्वर हो गया था, जिसका जेल में सही इलाज न किया गया। जेल से छूट कर घर आने पर मात्र दो सप्ताह में ही इस रोग के कारण वह ८ सितम्बर १९३९ को शहीद हो गए। मृत्यु के आगोश में जाते हुए भी उन्हें इस बात की खुशी थी कि हैदराबाद की परीक्षा में वह सफल रहे।

పండిత్ నరేంద్రజీ

ఆత్మ కథ

ఉత్తరప్రదేశ్‌లో బయలుదేరి నిజాం ప్రభువులకు విధేయతను ప్రకటించుకొని మా వంశములోని పూర్వీకులు హైదరాబాదు చేరుకున్నారు. అప్పటికి మా కుటుంబంలోని వారందరూ సంపన్నులు, విద్యావంతులు.

మా తాతగారు రాయ్‌కాన్ చంద్రజీ హిందీ -ఉర్దూ ఫారసీ భాషల్లో పండితులు. మా తండ్రి గారు రాయ్‌కేశవ ప్రసాద్ గారికి కూడా ఉర్దూ-ఫారసీ భాషల్లో బాగా అభిరుచి, గొప్ప పాండిత్యం ఉర్దూ, ఫారసీ భాషల్లో రచనలు చేశారు. కవిత్వం రాసేవారాయన. ఆయన కలం పేరు "నజమ్".

మా కుటుంబంలోని ప్రముఖులందరూ నిజాం ప్రభువులకు విధేయులుగా ఉంటూ వుండినందు వల్ల నిజాం ప్రభువులు 'మన్‌సబ్ దారీ' ఫర్మాన్ జారీచేశారు. అప్పటి నుంచీ మా తండ్రిగారు చనిపోయే దాకా 'మన్సబ్' కొనసాగింది. మా అన్నగారైన రాయ్ రాజేంద్ర ప్రసాద్‌కు, మా తండ్రిగారి మరణానంతరం చెందవలసిన 'మన్సబ్'లోని సగభాగాన్ని కూడా జారీచేశారు. రెండవ కుమారుణ్ణి కనుక మిగతా సగభాగం చట్టప్రకారం నాకు రావలసింది. అయితే అప్పటి నిజాం ప్రభువు మీర్ ఉస్మాన్ అలీ ఖాన్ గారు ఒక ఉత్తరువు జారీ చేసి, నాకు రావలసిన అర్ధభాగం మన్సబును రద్దుచేశారు. ఆ ఉత్తరువులో రాసిన వాక్యాలు ఇలా ఉన్నాయి- "నీకు అనేకసార్లు వరుసగా సలహా ఇచ్చినప్పటికీ వినకుండా నీవు ప్రభుత్వానికి వ్యతిరేకం గానూ, ఈ నాటి నిజాం పభువ రేణ్యులకు వ్యతిరేకంగానూ అవిధేయతా కార్యకలాపాలను కొనసాగిస్తూనే వున్నావు. "నిజాం ప్రభువరేణ్యులకు విధేయత", అన్న సూత్రానికి నీ చర్యలు విరుద్ధ. కనుక నీకు రావలసిన మన్సబును జప్తు చేస్తున్నాము" ఈ ఉత్తరువు నన్నేమీ చెయ్యలేక పోయింది. మొదటి నుంచే రెండు విషయాలను ఖచ్చితంగా నిర్ణయించుకొని వున్నాను.

1. జీవితపు వాస్తవ లక్ష్యాన్వేషణ; 2. వైవాహిక జీవితపు బంధంలో చిక్కుకోకుండా ఉండటం. ఈ రెండు విషయాల్లోనూ వీటి పూర్వాపరాలను బాగా పరిశీలించిన తర్వాత పరిణామాలను గురించీ ఫలితాలను గురించీ క్షుణ్ణంగా తర్కించుకున్న తర్వాతనే నిర్ణయానికి వచ్చాను. అందువల్ల కష్టాలన్నా, దుఃఖాలన్నా బాధలన్నా నేను విచారించే వాణ్ణికాదు.

కష్టాలు ఎన్ని ఎక్కువగా వస్తే జీవితానుభవం కూడా అంత ఎక్కువగా రాగలదన్న సత్యం కూడా నాకప్పటికే తెలుసు. ఉన్నత లక్ష్యాలలో దేనిని సాధించాలన్నా ముళ్లబాటలో నడుస్తూ సాగిపోక తప్పదు. పెద్ద పెద్ద గండు శిలల వంటి వైరుధ్యాలను ఎదుర్కొని తీరవలసిందే. దుఃఖాలనే ఎండ మావులకు వెరచి, జీవిత పథంలో వెనుకంజవేయడం పిరికితనం. అంధకారంలో వెలుగు ప్రకాశించినట్లు గానే కష్టాల్లో ఆనందం అంతర్లీనమై ఉంటుందన్న ఆలోచన నా మనస్సుకు సంతోషాన్ని కలిగిస్తూవుండేది. దీని నేను విశ్వసించేవాణ్ణి. మనస్సులో చెలరేగే కోర్కెల తుఫానుల్ని అదుపు చేసుకోగలిగాను. మృత్యువును ఎదుర్కొనవలసి వచ్చినానరే, సహానం కుంటుపడనీయనని నిశ్చయించుకున్నాను. సంకల్పం అనేది గాలికి చెరిగి పోయే నీటి మీది గీతవంటిది కాదు. సాహసంనిండింది; దృఢ నిశ్చయం చేసుకున్నాను. నా రెండు నిర్ణయాల విషయంలో దృఢ నిశ్చయం చేసుకున్న తర్వాత హైదరాబాదు ప్రధానమంత్రి (సదరె ఆజం)గా ఉండిన సర్ అక్బర్ హైదరీ హైదర్ నవాజ్‌జంగ్ గారికి, నిజాం ఆదేశాలకు సమాధానం పంపుతూ మన్సబ్ పట్ల నాకున్న హక్కును విరమించు కుంటున్నాని వ్రాశాను.

అంతకుముందు, ఒక మంత్రిగారు (సదరుల్ మహాం) ఫక్రియార్ జంగ్ బహాదూర్ గారు నన్ను పిలిపించుకొని, హితబోధ చేశారు. "నిజాం ప్రభువులనూ, వారి ప్రభుత్వాన్నీ వ్యతిరేకించడం వదిలేసుకుని మీరొక క్షమాపణ పత్రం రాసివ్వండి; మీ భాగానికి రావలసిన మనస్సబును జారీ చేయిస్తాం" అని చెప్పారు. నేను దానికి అసలు అంగీకరించలేదు. వద్దని వెళ్లి వచ్చాను. మన్సబ్ పైన ఉండే హక్కును విరమించు కుంటున్నానన్న విషయాన్ని అన్నగారికి కూడా తెలియజేశాను. నిజాం పెట్టే ఈ భిక్ష మీద బ్రతకడం కన్నా, దేశం, జాతి, ధర్మంకోసం కృషిచేస్తూ ఆకలితో మరణించ

డమే మిన్న అని వివరించాను. నిజాం ప్రభుత్వానికి క్షమాపణ పత్రం రాసి ఇవ్వడానికి సుతరామూ ఒప్పుకోనని చేప్పేశాను. ఈ మాటలు విన్న అన్నగారి ముఖం వివర్ణమైంది. నిట్టూర్పు విడుస్తూ ఇలా అన్నారు. "నీ ఇష్టం, భగవంతుడు నీకు మేలు చేయాలని ప్రార్థిస్తున్నాను." అని అన్నగారి నోటి నుంచి ఆశీర్వాదం వంటి ఈ మాటలు వినగానే వాడి పోయిన మనఃపుష్పం వికసించింది. మనస్సులో ఆశయసిద్ధిపట్ల ఆతురత, కళ్లల్లో ఆనందబాష్పాలూ వెలిశాయి.

'సత్సంగ్' అన్వేషణ : నా లక్ష్యాల సాధనలో మార్గాన్ని ఎన్నుకోవలసిన సమయం ఆసన్నమైనది. నా కోర్కె సఫలం కావాలంటే నా జీవితాన్ని ఏ దారిలో నడపాలన్నది ప్రధానమైన ప్రశ్న అయింది. అదే రోజుల్లో పూనాకు చెందిన శ్రీ మోహర్‌బాబా వ్రాసిన పుస్తకం "గరీబోంకా ఆసరా" (పేదల దిక్కు) అనేది దొరికింది. దాన్ని క్షుణ్ణంగా చదివాను. ఈ పుస్తకంలో సాయిబాబా (షిర్డీ) ఉపాసనీ బాబా (సాకోరి) శ్రీ బాబాజాన్ (పూనా) లను గురించి వర్ణిస్తూ రచన సాగింది. వర్ణనల ప్రభావం వల్ల మనస్సు మంత్రముగ్ధమైనట్లయింది. రకరకాల ఆలోచనాతరంగాలు మనస్సులో లేచాయి. బాబాల చమత్కారాల ప్రభావం నా మీద సమ్మోహనాస్త్రంగా పని చేసింది.

ఈ సంఘటన జరిగినప్పుడు మా నాయన గారు జబ్బుతో సతమతమౌతున్నారు. ఆయన వ్యాధిని గురించి పట్టించుకోకుండా నేను శ్రీ ఉపాసనీ బాబావద్ద ఆత్మజ్ఞానం సంపాదించాలని ఆకర్షణలో పడి, శ్రద్ధ ముప్పిరిగొనగా హైదరాబాదు నుంచి కాలి నడకన సలికోరీ వరకు వెళ్లాను. 22 రోజుల పాటు నడిచాను. దారిలో ప్రతి గ్రామంలోని ప్రతి దేవాలయం ఇల్లే అయింది. ప్రతి దేవాలయంలోని పూజారి తినే తిండిలో నాకు భాగం లభించింది. "దానెదానెపె లిఖాహై ఖానేవాలే కానాం" అనేది సార్థకమైంది. నడిచీ నడిచీ కాళ్లు వాపెక్కినవి. మంచి చలికాలం. ఒంటి మీద వస్త్రాలు పెద్దగా లేవు. కాళ్లకు చెప్పులు కూడా లేవు. మనస్సులో పరమాత్ముని పట్ల భక్తిశ్రద్ధలు తప్ప మరేమీ లేవు. శరీరం పైన చలి ప్రభావం పడకుండా ఉంటుందా? కాళ్లు పీక్కుని పోతున్నాయి. ఆయన దర్శనాకాంక్ష, దృఢ దీక్ష ఫలితంగా నడక సాగుతూనే వున్నది. ఉపాసనీబాబా గారి పవిత్ర భూమిలో చివరికి ఓనాడు అడుగు పెట్టాను. నరకంలో నుంచి స్వర్గంలో అడుగు పెట్టాననిపించింది. దినమంతా కష్టపడి అలసి పోయిన సూర్యుడు పశ్చిమాన అస్తమించబోతున్నాడు. ఇంకా కాస్త వెలుగున్నది. నా కొత్తముఖం చూచి, ధర్మశాలలో నన్ను ఉండనివ్వ లేదు. రాత్రంతా విశాంత్రి లేకుండానే గడిచిపోయింది.

సూర్యోదయానికి ముందు, నాలుగున్నర గంటలకే బాబా గారి దర్శనం కోసం, అక్కడ ఉండిన వాళ్లంతా బాబాగారి సమక్షంలోకి వెళ్లవలసి ఉంటుంది. నేనుకూడా దర్శనానికి బయలుదేరాను. ఆరాధన అయిపోయింది. కఱ్ఱతో చేసిన ఒక పంజరంలో బాబా ఉంటుండేవారు. అందరూ బాబాగారి పాదాలను స్పర్శించారు. నేను కూడా అలాగే చేసేవాణ్ణి. ఇలా ఒక నెల రోజుల పాటు సాగింది. ఒకరోజు బాబాగారు నన్ను అడిగారు "నువ్వు ఎక్కడ నుంచి వచ్చావు" అని. అంటే నీటిలో మునిగేవానికి కఱ్రపుల్లే ఆధారం అన్న సామెత సార్థకమైంది. నా మనస్సులో మెదిలే ఆశయాలూ. ఆకాంక్షలను గురించిన కతంతా విపులంగా, చెప్పేశాను. ఈ దర్బారులో ఇప్పుడు నేనెందుకున్నానంటే మానవ జీవిత లక్ష్యం ఏమిటో తెలుసుకోవాలన్న కోర్కెతోనేనని నివేదించాను. మానవ జీవిత లక్ష్యం ఏమిటి? ఆ లక్ష్యసాధన కోసం అనుసరించవలసిన పద్ధతులేమిటి ? "మందిరంలో భజన చేస్తూవుండు ! బయట బిక్షాటనచేస్తూ బ్రతుకు వెళ్లతీసుకో" అని సమాధానం లభించింది. ప్రతి రోజూ ప్రవచనం సమయానికి వస్తూ వుండాలని కూడా బాబాగారు ఆదేశించారు. "గురు దర్శనం వల్ల, దత్తాత్రేయ మహరాజ్ కృపవల్ల నీవు బ్రతుకులో విజయం సాధిస్తావు" అని ఆశీర్వదించారు. ఈ ఆశీర్వచనాలు వినడంతో అలసిన తనువుకూ, మనసుకూ ఊరట కలిగింది. అలసట మటుమాయమైంది. జీవితపు అంధకారంలో ఆశాకిరణం కనిపించ సాగింది. "గురుర్ బ్రహ్మ, గురుర్విష్ణు, గురుర్దేవో మహేశ్వరః" అన్నట్లు గురువే సర్వస్వమైపోయింది. ఈ విశ్వాసంతోనే దివారాత్రులు ప్రభు నామజపం చేస్తూ అనేక మాసాలు గడిచిపోయాయి. ప్రభుమార్గాకర్షణలో, కోర్కెల ఖాళీ జోలె చంకకు తగిలించుకొని సాయిబాబా గారి పవిత్ర స్థలం షిర్డీ చేరుకున్నాను.

దేవీ మహిమ-పండరిపురం : సాయిబాబా సమాధిని దర్శించుకున్నాను. నాలుగు రోజులు అక్కడగడిపి నారాయణ మహారాజ్ దర్శనం కోసం కీటగావ్ బయలు దేరాను. అక్కడి ఆడంబరాలూ, ఆ బ్రాహ్మణులు ప్రవర్తించిన తీరూ నాకు నచ్చలేదు. ఉండబుద్ధికాలేదు. భగవత్ భక్తుల మధ్య ఈ తేడాలూ, మానవునికీ మానవునికీ మధ్య ఈర్ష్యాద్వేషాలూ చూచినప్పుడు హృదయం విలపించింది. ధర్మశాలలో ఒక భక్తుడుంటుండే వాడు. ఈ సన్యాసలందరూ, ఎవరిపట్ల భక్తి ప్రవత్తులను ప్రదర్శించి ఈ స్థాయికి వచ్చారో వారి దగ్గరికే వెళ్లరాదా ? అని ఆయన నాకు సూచించారు. 'ఆ స్థలం ఎక్కడుంది ?' అని అడిగాను. 'పండరిపురం' అని ఆ భక్తుడు జవాబు చెప్పాడు. ఆ భక్తుని సలహా మేరకు కీటగావ్ నుంచి బయలుదేరి పండరిపురం బాటపట్టాను. పన్నెండు రోజుల పాటు కాలి నడకన ప్రయాణం చేసి పుండరిపురం చేరుకున్నాను. ఎండలో నడిచినడిచి అలసిపోయిన వ్యక్తికి చెట్టునీడన చేరి చల్లగా విశ్రాంతి తీసుకున్నట్లనిపించింది. పండరిపురంలో అడుగిడగానే అనేక మాసాలు అక్కడ గడిపాను. అక్కడి వాతావరణాన్ని పరిశీలిస్తే చేదు అనుభవాలు చాలా కలిగాయి. దాంతో నాకు కళ్లు తెరిచినట్లయింది. పండరిపురం అనుభవం నా జీవితయాత్రలో ఒక మైలురాయిలా నిలిచిపోయింది.

ఈ అనుభవాన్ని నేను దేవీ మహిమగా భావిస్తున్నాను. దారి తప్పిన నా ఆత్మకు సరైన దారి చూపించడానికే భగవంతుడు నాకీ చేదు అనుభవాలు కలిగించాడనిపించింది. మూఢ విశ్వాసాల అంధకారపు చరమసీమలదాకా చేరుకున్నాను. అక్కడి నుంచి నాకు ఉదయారుణకాంతులు, ఆశాకిరణాలు గోచరించ సాగాయి. హృదయాన్ని కలిచివేసే ఆశ్చర్యకరమైన దుర్ఘటనను తలచుకుంటే కడుపు చించుకున్నట్లయింది. కళ్లలో నీళ్లుండేవరకూ

ఈ దుర్ఘటన జ్ఞాపకాలు నా హృదయంలో పదిలంగా ఉంటాయి.

ఏకాదశి రోజున ముఖ్యంగా మహారాష్ట్రలో చిన్నా పెద్దా తేడా లేకుండా అందరూ ఉపవాస వ్రతాన్ని పాటిస్తారు. చంద్రభాగ నదిలో భక్తమండలులు ప్రాతఃకాలం నుంచి మరుసటి రోజు తెల్లవారేవరకూ జోరుగా భజనలు చేస్తూ, నాట్యాలు చేస్తూ, ఆట పాటల్తో గడుపుతారు. నేను కూడా రాత్రంతా భజనచేస్తూ గడిపాను. కళ్లల్లో నుంచి నిద్రమాయమై పోయింది. "జయవిఠల్-జయవిఠల్" అని పాడుతూ ఉంటే రాత్రి తొందరగానే గడిచిపోయింది. ఉదయం నాలుగు గంటలప్పుడు చంద్రభాగ నదిలో స్నానం చేశాను. భక్తులు నామదేవ్‌జీ మహారాజ్ మందిరంలో తమతమ డ్యూటీలు చెయ్యడానికి వెళ్లి పోయారు. (ప్రతి భక్తుడూ మూడు గంటల సేపు మెడలో వీణ వేసుకొని భజన చేయవలసి ఉంటుంది) హఠాత్తుగా నా కాళ్ల క్రింద ఇసుక రాసి త్రోసినట్లయింది. లోపల్నుంచి మెల్లగా ఏడుపు ధ్వని వినిపించింది. ఏదో జంతువై ఉంటుందనుకున్నాను. ఆలోచనలో పడి, కట్టె చరుచుకొనిపోయి అలాగే నిలబడిపోయాను. ఓ బాటసారి అడగనే అడిగాడు. "ఎందుకలా విచారిస్తున్నావు ?" "నిశ్చేష్టుడవై ఇక్కడ ఇలా ఎందుకు నుంచున్నావూ" అని. మీ కెందుకు ? మీ పని మీరు చూసుకోండన్నాను. ఈ ఇసుక దిబ్బలో నుంచి ఏడుపు ధ్వని విని పించడం లేదా అవి అడిగాను. చెవులుండి కూడా చెవిటివాడివా ? ఆ బాటసారి మరాఠీ భాషలో నాకు అంతా వివరించాడు. ఇది రోజూ జరిగేదే అన్నాడు. దేశంలోకల్లా వితంతువుల సంఖ్య అధికంగా ఉన్నది పంఢపిపురంలోనే, ఇంకా కాసేపటిలో అనాథాశ్రమంవారొస్తారు. ఈ ఇసుక దిబ్బమీద ఏడుస్తున్న శిశువును తీసుకుని పోతారు. నేను అలాగే నిలుచుండిపోయాను. ఆలోచనల తుఫానులో కొట్టుకొనిపోయాను. ఇటువంటి పవిత్ర స్థానంలో జరిగే పాపాలు ఇవా ? అని ఆలోచనలోపడ్డాను. విఠోబా పుండరీకుణ్ణి ఆశీర్వదించిన పుణ్యభూమి ఇదేనా అనిపించింది. భక్తితో నిండిన గీతాలు పాడి సంత్ తుకారాం, నిద్రావస్థలో ఉండిన మానవత్వాన్ని జాగృతపరచిన పవిత్రస్థలం ఇదేనా అనిపించింది. జ్ఞానోబా, నామ్‌దేవ్, సోపాన్, ముక్తాబాయి వంటి ప్రభు భక్తులు భక్తి ముక్తి మార్గాలను ప్రకాశవంతం చేసిన చోటిదేనా ? గీతాల ద్వారా వీరు ప్రజానీకంలో క్రాంతిని సృష్టించారు. ఆ గీతాలు ఈ నాటికి చంద్రభాగా నది ఆలల్లో, గాలిలో ప్రతి ధ్వనిస్తున్నాయే? సమర్థ రామదాసు రాగంతో వైరాగ్యస్వరం ఆవిష్కరించిన మహారాష్ట్ర దేశం ఇదేనా?

ఈశ్వర కృపవల్ల పండరిపురంలో ఒక ధనవంతుడు ఓ అనాథాశ్రమాన్ని నెలకొల్పి నడుపుతున్నాడు. అందులో అనాథ బాలలను పోషించి పెంచుతున్నారు. అనాథాశ్రమ నిర్వహణ చాలా ప్రశంసనీయంగా ఉండేది. ఆశ్రమం నుంచి సేవకుడు రానూవచ్చాడు. ఇసుకదిబ్బమీద నుంచి, శిశువు పైన ఉన్న ఇసుక పొరను తొలగించి, గుడ్డలో చుట్టివున్న శిశువును ఎత్తుకొని గబగబా ఆశ్రమానికి తీసుకొని వెళ్లాడు. నేను కూడా ఆ ఆశ్రమ సేవకునిని వెంబడించాను. ఆశ్రమాన్ని చూశాను. ఒక్కరు కాదు: అనేక మంది శిశువులు ఉయ్యాలల్లో ఉన్నారు. వికసించిన పువ్వుల్లా వారి ముఖాలు కళకళ లాడుతున్నాయి. పెదవులపై చిరునవ్వులు. ఒకరు కాళ్లు నేలకు కొడుతూవుంటే మరొకరు చేతి వ్రేలు నోట్లో పెట్టుకుని ఆనంద రసాస్వాదన చేస్తున్నారు. తన దౌర్భాగ్యానికీ అసహాయత్వానికి, ఘోరమైన సంఘం కట్టుబాట్ల దుష్పరిణామానికి విలపిస్తూ వెక్కివెక్కి ఏడ్చేవారు మరొకరు.

చాలా సేపటిదాకా ఆ పిల్లల మధ్య వారి ప్రేమానురాగాల మధ్య నన్ను నేను మరచి పోయి గడిపాను. తర్వాత మెల్లగా చంద్రభాగ నదీతీరం వెంట అడుగులో అడుగేస్తూ సాగిపోతూ హిందూ సమాజం పతనం కావడానికి ఇదొక ప్రబల కారణమేమోనని ఆలోచించసాగాను. పండరిపురంలో వితంతువులు అధిక సంఖ్యలో ఉండేవారు. తొమ్మిది పది సంవత్సరాల బిలకలకే పెళ్లిళ్లు చేసేవారు. మగ పిల్లలు పెద్ద వాళ్ళయ్యాక, అంతకు ముందు చదువురాని వారు బాగా చదువుకున్న తర్వాత పెద్దలు తమకు చేసిన చదువురాని భార్యలను వదిలేసేవారు. తర్వాత ఆ ఆడపిల్లలలకు ముసలాళ్లతో పెళ్లిళ్ల చేయవలసి వచ్చేది. ఫలితంగా బాలవితంతువుల సంఖ్య బాగా పెరిగింది. ఇలాంటి వాటివల్ల వేలాది సంవత్సరాలు పురాతనమైన హైందవ జాతి సంకుచితమైపోయి పతనావస్థకు దిగజారింది.

పండపిపురంలోని దేవుడు అక్కడి ప్రజలకే దారి చూపించ లేక పోతే ఇక నా జీవిత నౌకను ఒడ్డు చేర్చగలగడం ఎలా సాధ్యం ? ఈ పాపాల పల్లెలో నేను ఎలా జీవించ గలను ? ఇట్లా ఆలోచిస్తూ వుంటే మనస్సు విరిగిపోయింది. నా ఆశల, ఆకాంక్షల పూదోట ఎండిపోయింది. మానసికాకాశంలో ఒక మెరుపులాంటిది మెరిసింది. హృదయాకాశంలో ఉదయించే సూర్యుడు అక్కడి నలుపు మేఘాల్లో మటుమాయమైపోయాడు. అనుకున్నదేమిటి ? నిరాశలో బ్రతుకులో ఎదురైన ఓటమికి చింతిస్తూ, దౌర్భాగ్యానికి విలపిస్తూ నామ్‌దేవ్ మహారాజ్ మందిరం వైపుకు సాగిపోతున్నాను. ఎదురుగా మా తల్లిగారూ, మా దురపు బంధువు ఒకాయన రాయ్‌జీ గారూ వస్తున్నట్లు కనిపించింది. చూపులు కలిశాయి. నన్ను చూసి మా అమ్మ విలవిల ఏడ్చింది. మమతతో నన్నామె కౌగిలిలో చేర్చుకున్నది. తలపైన చెయ్యిపెట్టి "చల్లగా బ్రతుకు కొడకా! నా ఇంటి రారాజు ఈ రోజు అడవుల్లో బిచ్చగాడై తిరుగుచున్నాడు. ఎలా అయిపోయాడో చూడండి రాయ్‌జీ ! పద బాబూ ! పద ! ఏం మాట్లాడవేం" అని ప్రేమామృతం కురిపించింది. అలా చూస్తూ మౌనంగా ఉండి పోయాను. నేనిక్కడున్నానని వారికెలా తెలిసింది ? నన్ను మోసం చేసిందెవ్వరు ? ఇప్పుడు నా కర్తవ్యం ఏమిటి ? ఈ ప్రశ్నల శరపరంపరతో నా మస్తిష్కం యుద్ధభూమిలా మారిపోయింది. చివరికి అమ్మకన్నుల నుంచి ప్రవహించిన మమతాశ్రువులు తమ పనిని పూర్తి చేసుకోగలిగాయి. నేను మా అమ్మనూ సాహెబ్‌రాయ్‌జీ నీ వెంబడిస్తూ మందిరం వైపుకు వెళ్లాను.

వీరికి నా అడ్రసెలా తెలిసింది అన్న ప్రశ్నకు సమాధానం అన్వేషించాలన్న పట్టుదల నాలో పెరిగింది. హైదరాబాదులోని ప్రఖ్యాత సంత్ భట్‌జీబాపూ గారి శిష్యుడు శ్రీ శేషగిరిరావు (నన్ను ఆయన గుర్తు

వడతారు) నన్నిక్కడ చూచి, అమ్మకు టెలిగ్రాం ఇచ్చాడనీ "మీ కుమారుడిక్కడ వున్నాడు; వెంటనే వచ్చి తీసుకుని వెళ్లండని" రాశాడనీ సాహెబ్‌రాయజీ చెప్పారు. 1928లో జరిగిందీ సంఘటన. అప్పుడు నా వయస్సు బహుశా 18 సంవత్సరాలు.

మాతృదేవోభవ : ఇంటికి వెళదామని తల్లిగారి పట్టుదల. రాత్రంతా ఆలోచిస్తూనే వున్నాను. నిద్రలేకుండా పోయింది. ప్రాతః కాలపు చల్లగాని తెమ్మరలకు నిద్రాదేవి గాఢ పరిష్వంగంలో మునిగిపోయి, ఉదయం ఎనిమిది గంటలయ్యేవరకూ మేలుకోలేదు. లేవగానే మళ్లీ అదే సమస్య. అమ్మకేం సమాధానం చెప్పాలె ? ఒక వైపు పండరిపురం పాపగాథలు; మరోవైపు తల్లిగారి మమత. ఇందులో నుంచి ఏదో ఒక దాన్ని ఎంచుకోలేకపోయాను. "బాబూ ! మీనాన్నగారు మృత్యు ముఖంలో నుంచి బయటపడ్డారు. నిన్ను చూడాలని తహతహ పడుతున్నారు. నన్ను చూచికూడా నీకు దయకలగడం లేదా ! పదః హైదరాబాదు వెళ్లిపోదాం. ఈశ్వరభక్తి అక్కడ సాధ్యపడదా?" అని అమ్మ పరిసరి విధాలా చెప్పింది. అమ్మ వాక్కు మనస్సు పైన ముద్ర వేసింది. రెండు రోజుల తర్వాత అమ్మతో పాటు నేను హైదరాబాదుకు తిరుగు ప్రయాణం అయ్యాను.

ఇంటి దగ్గర ద్వారం ముందు అక్కచెల్లెళ్లూ, అన్నగారూ, ప్రక్కింటి వాళ్లూ అందరూ, మా రాకకోసం, వరుణ్ణి ఎదుర్కోవడానికి విలబడ్డట్లు నిలబడి ఉన్నారు. ఇంటిలో అడుగు పెట్టగానే లోపల్నుంచి నాన్నగారి స్వరం వినిపించింది. "నాన్న ! ఇలారా బాబూ" అని, అటు వెళ్లాను. నాన్నగారు మంచం మీద పడుకునివున్నారు. రోగం వల్ల ఏర్పడిన అశక్తత కారణంగా లేచి నడవలేక పోతున్నారు. ఆయన చరణాలను స్పర్శించి నేను ఆయన సమీపంలో కూర్చున్నాను. తీంట్లో వాతావరణమంతా ఆనందంతో ఉప్పొంగిపోతుంది. నలువైపుల నుంచీ నాకు స్వాగతం పలుకడం జరుగుతోంది. దినాలు గడిచి పోయాయి. రెండు నెలలు ఏకాంతం గానూ, ప్రశాంత వాతావరణంలో గడిచి పోయాయి.

తుఫాను ప్రారంభమైంది : ఆ రోజుల్లోని మాటే.

హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో 'సిద్దీక్‌దీన్‌దార్ జనబసవేశ్వర్' అనే వ్యక్తి, తాను లింగాయత్ మతానికి అవతార పురుషుణ్ణని చెప్పి, హుబ్లీ, ధార్వాడ్, మైసూర్, గుల్బర్గా, రాయచూరు మొదలగు ప్రాంతాలలోని అమాయకులైన గ్రామీణ లింగాయత్ మతస్థులనూ, ఇతర హిందువులనూ, నిజాం ప్రభుత్వ రహస్య ఆదేశాలను అనుసరించి ముస్లిం మతంలో కలుపుకునే కార్యక్రమం ప్రారంభించాడు.

నిజాం ప్రభుత్వపు దేవాదాయ ధర్మాదాయశాఖ నుంచి, మత పరివర్తన కార్యక్రమం కోసం అవసరమైన నిధులు లభించేవి. ఈ కార్యక్రమాలు చూసి హిందువుల్లోనూ, లింగాయతుల్లోనూ అసంతృప్తి వ్యాపించింది. ఈ సమస్యపై వారు ఆలోచించడం ప్రారంభించారు. సిద్దికదీన్‌దార్ చేస్తున్న మోసపూరిత ప్రచారాలను గురించి ప్రజలకు వివరించాలి. సామాన్య జనాన్ని హెచ్చరించాలి. "మీరు అల్పసంఖ్యాకులై నా-పాలకులు మీరే" నన్న ఘనతను నిజాం నవాబు ఇక్కడి ముస్లిముల్లో ఇదివరకటినుంచే వ్యాపింపచేసి వున్నారు. కనుక ఈ పని తప్పనిసరి అన్న భావం హిందువుల్లో కలిగింది. తన విశ్వాసాన్ని నిజాం తాను వ్రాసిన ఒక గజల్‌లోని చివరి పంక్తిలో బయట పెట్టారు కూడా.

"సలాతీన్ సలఫ్-సబ్ హోగయే నజ్రె అజల్ "ఉస్మాన్", ముసల్మానోంకా తేరీ సల్తనత్ సే హై నిషాఁ బాకీ"

(అంటే అనేక రాజ్యాలూ రాజవంశాలూ నశించిపోయినా, నీ రాజ్యం వల్ల ముస్లిముల గుర్తు ఇంకా మిగిలి ఉన్నది.)

హైదరాబాదు రాష్ట్రాన్ని పాలించిన నవాబు మీర్ ఉస్మాన్ అలీ ఖాన్‌కు ముస్లిం మతం పట్ల ఉన్న వీరావేశ మతమౌఢ్యాం థకారం అతనే రాసిన మరో కవితలో కూడ కనబడుతుంది.

"బంద్ నాఫూస్ హుఆ సున్ కే నదాయే-తక్బీర్, జల్‌జలా ఆ హీ గయా రిష్తె-ఏ-జూనార్ పే భీ"

హైదరాబాద్, మైసూరు రాష్ట్రాలలో తబ్లీగ్ (మతపరివర్తన) కార్యక్రమాన్ని సిద్దీక్‌దీన్‌దార్ చాలా పెద్ద ఎత్తున ప్రారంభించారు. ఆ రోజుల్లోనే "సర్వరెఆలమ్" అనే ఓ పుస్తకాన్ని కూడా రచించారు. ఆ పుస్తకంలో యోగీశ్వరుడైన కృష్ణుని గురించీ, ఇతర హైందవ దేవతలను గురించీ నిందా వాక్యాలు కూడా వ్రాశారు. సుల్తాన్ బజారులోని ఆర్య సమాజానికి అప్పుడు మంత్రిగా వుండిన శ్రీ చందూలాల్ దీనికి వ్యతిరేకంగా హిందువుల్లో జాగృతిని కలుగచేయడానికి పూనుకున్నారు. శ్రీ చందులాల్ ఆ రోజుల్లో ఆర్యసమాజానికి ప్రాణం. శ్రీ చందులాల్‌తో బాటు సర్వశ్రీ బన్సీలాల్ వ్యాస్, మున్నాలాల్ మిశ్ర, మోహన్‌లాల్ బాల్దవా, మోహనాచార్య గార్లను హైదరాబాద్ ప్రజలు ఏ నాటికీ విస్మరించలేరు. వీరందరూ తమ తనువులనూ, ధనాన్నీ, మనస్సునూ, సర్వస్వా'న్నీ ఆర్యసమాజ్ సేవకోసం సమర్పించారు. ఈ నలుగురు మహానుభావులూ, హైదరాబాదులో హిందువులపై ప్రభుత్వం జరుపుతున్న అత్యాచారాలకూ, అక్రమాలకూ, అన్యాయాలకూ వ్యతిరేకంగా నడుం కట్టారు. ఫలితంగా నిజాం ప్రభుత్వం వారిని అనేక కష్టనష్టాలకు గురిచేసింది.

నూతన మార్గం

కొన్ని రోజుల తర్వాత, దీన్‌దార్ కార్యక్రమాన్ని బట్టబయలు చేసి, ఇస్లాం మతంలోని వాస్తవాలను విపులీకరించడానికి, శ్రీ చందూలాల్, ఢిల్లీకి చెందిన ప్రసిద్ధ ఖురాన్ పండితుడు శ్రీ రామచంద్ర దెహెల్వీని 1929లో హైదరాబాదుకు ఆహ్వానించారు. అరబ్బీ భాషలో నిష్ణాతుడైన ఆర్యసమాజ పండితుడొకాయన హైదరాబాదు నగరానికి వచ్చాడని ఆయన ఉపన్యాసం విని తీరవలసిందేనని ప్రజల్లో వార్త బాగా వ్యాపించింది. సుల్తాన్‌బజారులోని దేవీదీన్‌బాగ్‌లో ఐదు రోజుల పాటు పండిత్ రామచంద్ర దెహెల్వీ గారు అనేక విషయాలపై ప్రసంగించారు. రెండో రోజున మిత్రుడు వంశీధర్ నన్ను పండిట్ రామచంద్రదేహల్వీ ప్రసంగం వినడానికి వెంట తీసుకొని వెళ్లారు. దేవీదీన్ బాగ్‌లో శ్రోతలు క్రిక్కిరిసిపోయారు. స్త్రీలూ-పురుషులతో జనసముద్రంలా ఉంది పండిత్‌జీ రాకకోసం ప్రజానీకం వేచి చూస్తున్నారు. ఒక మూలనుంచి నినాదం ప్రతిధ్వనించింది. "జో బోలే-సో అభయ్-వైదిక ధర్మకీ జై" అని మైదానం అంతా ఈ

నినాదంతో పిక్కటిల్లింది. ఆ తర్వాత కొద్ది నిమిషాల్లోనే జనసమూహం మధ్యలో నుంచి విశాలకాయుడైన ఒక మహాపురుషుడు, తలకు తెల్లని తలపాగతో, షేర్వానీ ధరించి వేదిక వైపుకు నడిచాడు. ప్రజల నమస్కారాలకు ప్రతినమస్కారం చేస్తూ వేగంగా వేదికపైకి వెళ్లాడు. వేదికను బాగా అలంకరించారు. వేదికపైకి చేరినతర్వాత ఆయన (ఆయనే పండిత్ రామచంద్ర దెహల్వీ) నాలుగు వైపులా చూస్తూ ప్రజలందరికీ నమస్కరించారు. గడియారాల్లో ముళ్లు సరిగ్గా ఆరు గంటల సమయాన్ని సూచించాయి. ఖాదీ ధరించి, పొట్టిగా ఉన్న ఒక వృద్ధుడు గబగబా ముందుకు వచ్చి "సోదరులారా ! ఇప్పుడు మీ ముందు దృష్టాంత సమ్రాట్, మధురభాషి, ప్రవక్తా, కురాన్‌వేత్తా పండిత్ రామచంద్ర దెహల్వీ ప్రసంగిస్తారు" అని చెప్పి కూర్చున్నాడు. ఆయన ఆర్యసమాజ నాయకులు శ్రీ చందులాల్ పండిత్ రామచంద్ర దెహల్వీ శ్రోతలను సంబోధిస్తూ, ఈ రోజు నేను ప్రసంగించే విషయం "పరమాత్మ, ఆత్మ, భౌతికపదార్థాల ప్రాచీనత" నీ చెప్పి, తమ ప్రసంగం ప్రారంభించారు.

ఆర్య సమాజీయుల గురించి అంతకు ముందు నేను కొన్ని సామాన్య విషయాలను విని ఉన్నాను. వీరు విగ్రహారాధనలను గట్టిగా వ్యతిరేకిస్తారని, హిందూమతంలోని మౌలిక సిద్ధాంతాలను విశ్వసించరని, హిందూ మతంలోని కులవ్యవస్థను నాశనం చేసి, బ్రాహ్మణులకూ, ఇతర కులాలకు తేడా లేకుండా చేయడమే కాక వారి మధ్య సహపంక్తి భోజనాలూ, వివాహ సంబంధాలు కూడా జరిపిస్తారని తెలుసు. వీరి సిద్ధాంతాల పట్ల నాకు ఎలాంటి అభిరుచి కూడా ఉండేదికాదు. ఆకర్షణ అసలే లేకుండెను. వీరు భగవంతుని అవతారాలను నమ్మరని నాకు వీరి పట్ల వ్యతిరేకత ఉండేది. పండిత్ రామచంద్ర దెహల్వీగారి ప్రసంగాన్ని నేను ఒక గంటకు పైగా చాలా శ్రద్ధగా విన్నాను.

అంధకారం నుంచి వెలుగు వైపు

పండిత్ రామచంద్ర దెహల్వీగారు తమ ప్రసంగంలో ఏకేశ్వరతత్త్వం గురించీ, భౌతిక తత్త్వాల ప్రాచీనత గురించీ వివరిస్తూ వేదప్రమాణాలనూ, ఖురాన్ పాఠాలనూ ఉటంకిస్తూ ఈ తత్త్వాలు అనాది నుంచీ వున్నాయని, తర్క ప్రమాణాలతో రుజువు చేయడంలో విజయం సాధించారు. ఈ ప్రసంగం నాపైన మాయాజాలం లాంటి ప్రభావాన్ని కలుగజేసింది. పండిత్‌జీ చూపించిన ప్రమాణాలను వింటుంటే మనస్సు, మస్తిష్కం కవ్వంతో చిలకినట్లయింది. నూతనమైన ఆలోచనా మార్గం తేరచుకున్నట్లయింది. ఉపన్యాసం విని ఇంటికి వచ్చినతర్వాత రాత్రంతా ఆలోచనలతో సతమత మయ్యాను. ఈశ్వరుని అవతరాల అవసరం లేదా? విగ్రహాలు దేవతలు కావా? ఆలోచిస్తూ అర్ధరాత్రి గడిచిపోయింది. నిద్రలో తూలిపోయాను. పొద్దున్నే అలవాటు ప్రకారం స్నానం చేసి పూజా స్థలానికి చేరుకున్నాను. విగ్రహాల ముందు కూచోగానే క్రితం రోజు ప్రమాణాలూ, తర్కం, అన్ని మస్తిష్కంలో కదలాడటం మొదలైంది. నేడు వేటిని పూజిస్తున్నారో నిజానికి దేవతలు కావా? చాలా సేపటి దాకా మెదడులో సంఘర్షణ కొనసాగింది. చలనం లేని వస్తువు ముందు తలవంచడమా? మానవులు చేసిన ఈ విగ్రహాలు దేవుళ్లు అయితే నా అదృష్టాన్ని అవెలా సరిచేయగలవు? దత్తాత్రేయ మహారలిజ్ విగ్రహాన్ని, గుట్టుచప్పుడు లేకుండా నా గదిలో నుంచి తీసి, అమ్మగారి గదిలో, ఆమె విగ్రహాలతో పాటు కలిపేశాను. ఉదయం పూట జరుగుతున్న పండిత్ రామచంద్రదెహల్వీ గారి ప్రసంగాన్ని వినడానికి సుల్తాన్‌బజారులోని దేవీదీవ్‌బాగ్ వైపు బయలుదేరాను. చాలా మంది జనం గుమిగూడారు. ఎర్రగా వుండి, లావుగావున్న ఒక మహానుభావుడు ప్రసంగిస్తున్నాడు. తలపై వెంట్రుకలు చెల్లాచెదురుగా వున్నాయి. కుర్తా ధరించి వున్నాడు ఆయన పేరు బుద్ధ దేవ్ విద్యాలంకార్. ఈశ్వరుడు సర్వవ్యాపకత్వాన్ని గురించి వేదప్రమాణాల ద్వారా ప్రసంగిస్తున్నాడు. భగవంతునికి ఒక్క దేశమంటూ లేదు; అతడు సర్వాంతర్యామి; అన్ని చోట్లా ఉన్నాడు; అన్ని వస్తువుల్లోనూ ఉన్నాడు. అయితే అన్ని వస్తువులూ ఈశ్వరుడూ కావు. ఉదాహరణకు ఈశ్వరుడు జలం, అగ్ని, వాయువుల్లో ఉంటాడు. కాని ఇవే ఈశ్వరుడు కావు. భగవంతుని గుణాలనూ, కర్మలనూ, పండిత్‌జీ, ప్రజల ముందు చాలా సమర్థవంతంగా వైజ్ఞానికంగా వివరించారు. ఆయన నాలుకపై సరస్వతి తాండవిస్తోందని పించింది. పండిత్‌జీ ప్రసంగం, వ్యాఖ్యానం నా హృదయ మందిరంలో చోటు చేసుకున్నాయి. మరుసటి రోజు సుల్తాన్‌బజారులోని గోపాల్‌బాగ్‌లో రాజానారాయణ్‌జీ పిత్తీ గారింటికి వెళ్లాను. ఉపన్యాసాలివ్వడానికి వచ్చిన పండితులు అక్కడే ఆతిథ్యం స్వీకరిస్తున్నారు. పరచిన పరుపు మీద వీపుకు ఓ పెద్ద గుండ్రని దిండును ఆనించుకొని ఎర్రగా లావుగా ఉన్న ఓ ఆసామీ మార్వాడీ బహీ ఖాతా వ్రాస్తూ ఉన్నాడు. మనిషి పొట్టి; కాని చాలా లావు. పొట్ట మరింతలావు. పరుపు మీద తెల్లని చాదర్ పరచివున్నది. ఆయన్నడిగాను–"పండిత్‌జీని చూడాలి, ఇప్పుడాయన దర్శనం లభిస్తుందా?" అని. ఇప్పుడు వారు భోజనం చేస్తున్నారు. వారు భోజనం చేసిరాగానే కలుపుతానన్నారాయన. ఈయన పేరేమిటో అడగాలని నా మనస్సులో కోర్కె జనించింది. చాలా సౌమ్యుడు సజ్జనుడులా కనిపించారాయన. సాహసించి అడిగాను "తమ పేరు తెలుసుకోవచ్చా?" అని. "నన్ను గజానంద గుప్త అంటారు." అని ఆయన సమాధానం చెప్పారు. మేం మాట్లాడుకుంటూ వుండగానే పండిత్ బుద్ధదేవ్ విద్యాలంకార్ గారు బయటికి దయచేశారు. వినయపూర్వకంగా నమస్కరించాను. నా సందేహాలను బయటపెడుతూ మీ నుంచి ఏదైనా నేర్చుకోవాలని వచ్చానని విన్నవించుకున్నాను.

నేనడిగిన ప్రతి ప్రశ్నకూ సంతోషంగా, నాకు తృప్తి కలిగేట్లు సమాధానాలు చెప్పారాయన. నేను పూర్తిగా వారి తర్కానికి లొంగి పోయాను. మనస్సులో నూతన చైతన్యం, మస్తిష్కంలో సత్యాన్వేషణా జిజ్ఞాస సంపూర్ణ విశ్వాసంతో చోటుచేసుకున్నాయి. ఇంటికి వెళ్లాను. నాన్నగారి జేబులోంచి ఒక రూపాయి తీసుకొని సభాస్థలికి చేరుకోగానే నేను చేసిన మొట్టమొదటి పని, అర్థ రూపాయి యిచ్చి "సత్యార్థ ప్రకాశిక" ఉర్దూ ప్రతిక కొనుక్కొని చదువసాగాను. సత్యార్థ

ప్రకాశిక యొక్క ప్రభావం నాపైన ఇంద్రజాలంలా పని చెయ్య సాగింది. ఆ రోజుల్లోనే హైదరాబాదులో ఇద్దరు ప్రముఖ ఆర్యసమాజ నాయకులను కలుసుకో గలిగాను. వారి పేర్లు-హైకోర్టు న్యాయమూర్తి పండిత్ కేశవరావు కొరాట్కర్, శ్రీ చందులాల్ ఆర్య. ఎవరిని అడిగినా అందరూ ఈ ఇద్దరి పేర్లే చెప్పారు. హైదరాబాదు నగరంలో ఈ ఇద్దరి పేర్లు బాగా ప్రచారంలో ఉన్నాయి. కేశవరావు గారిని ప్రజలు తమ నాయకునిగా భావించేవారు. ఆయనకు ప్రజా సామాన్యం అండదండలు అధికంగా ఉండేవి. ఆయన నిర్భయుడు, సాహసి. నిస్వార్థ ప్రజా సేవకుడు. హైదరాబాద్ నగరంలోని సాంఘిక, రాజకీయ, విద్యావిషయక వ్యవహారాల్లో ఆయన ఘనత చరమ సీమలను అందుకొన్నది. ఈ ఇద్దరి త్యాగాల గురించీ, సేవలను గురించీ, నిజాయితీ, లక్ష్యశుద్ధి గురించి సర్వత్రా ప్రజలు చర్చలు చేస్తుండే వారు. చందులాల్‌జీ ఆర్య సమాజానికి ప్రాణం వంటివారు. ఒక రోజు ఆయన నన్ను పిలిచి, నీవు రోజూ సమాజానికి తప్పకుండా వస్తూవుండాలని చెప్పారు; నీకిక్కడ సదా స్వాగతం లభిస్తుందనీ అన్నారు.

క్రొత్త మలుపు : ఇక నా మనస్సు దిశ మారింది. చదువుకు ఎప్పుడో స్వస్తి చెప్పాను. సంపాదించకుండా ఇంట్లో ఉండి తినడానికి మనసొప్పలేదు. ఉద్యోగం కోసం తొక్కని గడపలేదు. చివరికి నవాబ్ రసూల్ యార్‌జంగ్ బహాదుర్ గారి జాగీర్ కార్యాలయంలో నెలకు 25 రూపాయల వేతనంపైన పని దొరికింది, అయితే ఎక్కువ కాలం పాటు సాగలేదు. మా బావగారు రాయ్ హరికిషన్ జీ, తమ్ముడు చంద్రకిషన్‌జీ నాకు సర్ఫెఖాస్ (నిజాం గారి స్వంత విభాగం)లో వ్యవస్థకు సంబంధించిన కార్యాలయంలో నెలకు 50 రూపాయల వేతనంపై మరో ఉద్యోగం ఇప్పించారు. ఇంకేమున్నది ? సంతోషం పట్టలేకపోయాను. మొదటి వేతనం పొందగానే సమాజంలోకి వెళ్లి నాలుగణాలు చెల్లించి సభ్యత్వం స్వీకరించాను. ఆర్య సమాజాన్ని అలింగనం చేసుకున్న నా జీవితంలో మొదటి రోజు అదే. ఆర్య సమాజం చేతుల్లో నా జీవితపు నౌక యొక్క త్రాడును అప్పగించి, పైకి ఎగుస్తూ వెళ్లాను. నేను ఆర్యసమాజంలో ఎలా చేరానో గుర్తు చేసుకుంటే, నాకున్న జ్ఞాపకాలు ఇవి. నా జీవన దశ ఒక విధంగా ఇలా మారిపోయింది.

అగలాసా వహ మిజాజ్ వ ఆదత్ నహీ రహీ, వో హమ్ నహీ రహె వహ తబీయత్ నహీ రహీ

నిన్నటివరకు భగవంతుని పొందడానికి ఊరూరూ, దేశ దేశాలూ తిరిగి చివరికి ఏమీ పొందలేకపోయానో, ఆ భగవంతుని ప్రాప్తికి ఇప్పుడు సత్యార్థ ప్రకాశ్ నాకు మార్గం చూపించింది. మానవ జీవితపు వాస్తవిక లక్ష్యాల సాధనకు కూడా మార్గం కనిపించింది. మస్తిష్కంలో చింతన ప్రారంభమైంది. కళ్లకు చూపు లభించింది. పాఖండీ వల తునాతునకలై పోయింది. సత్యానికీ నాకూ బాంధవ్యం సమకూరింది. జీవితపు గడియారం సూదులు ఇప్పుడు సక్రమంగా నడవసాగాయి.

వైదిక ధర్మమార్గంలో పయనిస్తున్న రోజుల్లో జరిగిన ఒక ఉత్తేజకరమైన సంఘటన గుర్తుకు వస్తున్నది. నా బంధువొకాయన నాకు పెళ్ళి చేసుకోవాలన్న ఇచ్ఛ కలిగించారు. బ్రహ్మచారిగానే ఉండాలన్న నా నిర్ణయాన్ని మార్చుకొని, మనస్సు మీద తిరుగుబాటు చేసి చివరికి పెళ్ళి చేసుకోవాలనుకున్నాను. మిత్రుని సలహా మేరకు అమ్మాయిని చూసే కార్యక్రమం కూడా నిర్ణయమైంది. మేమిద్దరం కరీంనగర్ చేరుకున్నాం. దారిలో అపశకునం సంభవించింది. బస్సు నుంచి దిగగానే పిల్లి అడ్డమైంది. 'భ-పిల్లి అడ్డం రావడం మంచిది కాదు' అన్నాడు మిత్రుడు. ఆడపిల్ల వాళ్ళింటికి చేరుకోకముందే వాళ్ళ ఇంట్లో 'చావు' జరిగిందని తెలిసింది. నిరాశతో ఇంటిముఖం పట్టాము. ఆ తర్వాత ఆ మిత్రునితో సంబంధాలు తెగిపోయాయి.

ఆర్య సమాజ్ సత్సంగ్‌లో పాల్గొనడానికి ఒకరోజు సాయంకాలం 5 గంటలకు సుల్తాన్ బజారుకు చేరుకున్నాం. అప్పుడొక సన్యాసి స్వామీ వృత్తానందజీ ఉపదేశిస్తున్నారు. సత్సంగం నుంచి ఇంటికి తిరిగివచ్చిన తర్వాత నేను నిర్ణయం చేసుకున్నాను. సంసార జీవితంలో పడిపోరాదని, సామాన్యంగా-నిరాడంబరంగా బ్రతుకును సాగించుకోవాలని, ఇదివరకే నిర్ణయించుకొన్న నిర్ణయాలకు భిన్నంగా ఎంతటి ఒత్తిడి వచ్చినా ఏ పనీ చేయరాదని, మనస్సును మరింత దృఢపరచుకున్నాను. ఈ విధంగా నా మనోనిశ్చయం క్రమక్రమంగా గట్టిపడింది. మారుతున్న నా జీవితపు అలవాట్లను చూచి మా ఇంట్లో వారికీ, పొరుగువారికీ ఆశ్చర్యం కలగడం ప్రారంభమైంది. ఇక మోసం, మూఢనమ్మకాలూ, అంధవిశ్వాసాల అంధకారం నుంచి జీవితం విముక్తమై సత్యార్థ ప్రకాశం దారుల్లో సాగిపోజొచ్చింది. తుఫానులను ఎదుర్కోవడానికి సంసిద్ధమై దృఢ నిశ్చయంతో దారిలో అడుగుపెట్టినప్పుడు కలిగే ఆత్మానందం, ప్రసన్నతల ఫలితంగా మస్తిష్కంలో ప్రశాంతత ఏర్పడి అలసట దూరమైపోయింది. నా జీవితయాత్రలో రెండవ ఘట్టం ఇక్కడినుంచి ప్రారంభమౌతుంది. అడుగడుగునా ముందుకు సాగిపోయింది.

జీవితయాత్రలో రెండవ ఘట్టం

ఆర్య సమాజంలో ప్రవేశానికి అనుసరించాల్సిన నియమాల అన్నింటినీ క్షుణ్ణంగా అవగాహన చేసుకొని, ఆర్య సమాజం సభ్యునిగా చేరాను. క్షుణ్ణంగా అవగాహన చేసుకొని, ఆర్యసమాజం సభ్యునిగా చేరాను. వారానికోసారి సత్సంగానికి విధిగా వెళ్ల సాగాను. విద్వాంసుల ప్రసంగాలు వింటూ ఉండేవాణ్ణి. వాటిని మననం చేసుకుంటూ, వాటిపై ఆలోచిస్తూ ఉండేవాణ్ణి. ఆ సిద్ధాంతాలను, ఆ పాండిత్యాన్ని నేనెప్పుడు పొందగలను ? నేను కూడా ఉపదేశకుణ్ణి ఎప్పుడు కాగలను ? అని ఆలోచిస్తూ ఉండేవాడిని. నేను కూడా ఆర్యసమాజ ప్రచారకునిగా దేశ దేశాలు తిరిగి ఉపదేశాలు చెయ్యాలన్న కోర్కె అప్పుడే నా మనసులో ఉదయించింది. ఆ రోజుల్లోనే సిద్ధాంతభూషణ పండిత్ చంద్రభానుగారిని హైదరాబాద్‌కు ఆహ్వానించారు. పండిత్‌జీ హైదరాబాదులో ఒక ఏడాదికి పైగా ప్రచార కార్యక్రమం నిర్వహించారు. వైదిక సిద్ధాంతాల విషయంలో ఆయన ప్రకాండ పండితుడు. వ్యాఖ్యాన కళలో నిపుణులు, వివేకవర్ధిని పాఠశాలలో ఆయన వితంతు వివాహాల గురించి

పౌరాణికులతోనూ, విద్వాంసులతోనూ చర్చలూ-మీమాంస కూడా చేశారు. ఆయనతోబాటు ప్రచారానికి నేను కూడా అప్పుడప్పుడు బయలుదేరుతూ వుండేవాణ్ణి. పండిత్‌జీ సత్యప్రయత్నాన్ని హైదరాబాదు ప్రభుత్వం ఎక్కువకాలం సహించలేదు. నిజాం ప్రభుత్వపు హోంశాఖవారు పండిత్‌జీ బయటి వ్యక్తి అనీ, అవాంఛనీయుడనీ ప్రకటించి, రాష్ట్ర సరిహద్దుల నుంచి బయటికి తరిమివేశారు. అయితే పండిత్‌జీ సహవాసంతో నా కోర్కె సిద్ధించింది. దారి దొరికింది. లాహోర్‌లోని ఉపదేశక్ విద్యాలంలో చేరి అధ్యయనం చేయవలసిందిగా నాకాయన సలహా ఇవ్వడమేకాక, ఆ విద్యాలయానికి చెందిన అధ్యపకుడు స్వామీ స్వతంత్రానంద్‌జీ పేర ఒక ఉత్తరం కూడా వ్రాస్తూ, ఈ ఉత్తరం తెచ్చిన నవయువకుణ్ణి విద్యాలయంలో చేర్చుకొని బోధనకు ఏర్పాటుచేయవలసిందని కూడా కోరారు.

పండిత్‌జీ లాహోర్‌కు రాసిన ఉత్తరానికి సమాధానం కోసం నేనిక్కడ వేయికళ్లతో ఎదురుచూస్తున్నాను. పోస్టుమాన్ ఇంటి తలుపు కొట్టినప్పుడల్లా, ఆ ఉత్తరమే వచ్చిందేమోనని పరుగెత్తు తుండేవాణ్ణి. ఈ ఉత్తరం మా నాన్నగారి చేతుల్లోగానీ, అన్నగారి చేతుల్లోగాని పడకుండా చూడాలని నా ఆరాటం. ఇట్లా నిరీక్షణలో చాలా రోజులు గడిచిపోయాయి. హృదయంలో వ్యాకులత అధికంకా సాగింది. నా అదృష్టాన్ని తిట్టుకో సాగాను. విశ్వవిద్యాలయంలో ప్రవేశానికి నేను యోగ్యుణ్ణి కానేమోనన్న సందేహం రాసాగింది. నేను నావైపు నుంచి చాలా ఉత్తరాలు వ్రాశాను. ధైర్యం సడలిపో సాగింది. అనేక సందేహాలు రాసాగినవి. పూర్తిగా నిరాశ చెందిఉన్న సమయంలో ఒక రోజు పోస్టుమాన్ వచ్చి ఒక కవరు ఇచ్చి వెళ్లాడు. ఇంట్లో అమ్మగారు తప్ప ఆ సమయంలో మరెవరూ లేరు. ఉత్తరం తీసుకొని అమ్మగారు నన్ను లేపి, ఆ ఉత్తరాన్ని నా చేతికిచ్చింది, నా కోర్కెలు రూపుదిద్దుకొని వచ్చిన ఉత్తరమిది. ఒక నెల తర్వాత విద్యాలయం నూతన పాఠ్యక్రమం ప్రారంభం కాగలదని ఈ ఉత్తరంలో వ్రాశారు. నూతన విద్యా సంవత్సరంలో నీవు వచ్చి చేరవచ్చునని కూడా ఉన్నది. ఇక ప్రయాణానికి ఏర్పాట్లు చేసుకో సాగాను. అమ్మకూ, నాన్నకూ నచ్చచెప్పాను. కాని వారు వినలేదు. అయితే తల్లిగారి మమతగానీ, నాన్నగారి ప్రేమగానీ నా సంకల్పం నుంచి నన్ను కదల్చలే పోయాయి. నా ఆలోచనల్లో సంఘర్షణ కొనసాగుతూనే ఉన్నది. చివరికి నేను హైదరాబాదు నుంచి లాహోరుకు బయలుదేరే రోజు రానేవచ్చింది. ఇది 1930లో జరిగిన సంఘటన.

నేను లాహోరుకు బయలుదేరుతున్న రోజున ఇంటి దగ్గర ఒక మేళావలె జనం గుమికూడారు. "వృద్ధావ్యంలో ఉన్న తల్లిదండ్రుల్ని వదలిపోతున్నావా? ఇక్కడే ఉండి, ఏదో ఇంత సంపాదించి, వారి సేవ చేయాలిగాని" అని వచ్చిన ప్రతివారూ నాకు హితబోధ చేయడానికి ప్రయత్నించారు. "ఈ రోజుల్లో పిల్లలు చివరికిలా తయారయ్యారన్నమాట. తల్లి ఏడుస్తూ వుంటే, తండ్రి విలపిస్తూ వుంటే పట్టించుకోకుండా వెళ్ళిపోతున్నావే-ఇందుకేనా నిన్ను ఇన్నాళ్ళు వీరు పెంచి పోషించింది ?" అని దుర్భాషలాడారు. "ఈ రోజుల్లోని యువకుల హృదయాలు పాషాణాలు; మోహమాయకు ఏమాత్రం లొంగరు." ఇట్లా రకరకాలు వ్యాఖ్యానాలు చేశారు. అందరి మాటలూ మౌనంగా వింటూనే నా పని నేను చేసుకుంటున్నాను. స్టేషనుకు బయలు దేరాల్సిన సమయం ఆసన్నమౌతూవున్నది. స్టేషనుకు వెళ్ళడానికి సిద్ధమౌతుంటే ఏడ్పులూ, దుఃఖరాగాల కథాకమామీషు ప్రారంభమైంది. అందరి కళ్ళల్లో నీళ్ళు నిండివున్నాయి. నా బంధువులందరూ తమ తమ అశ్రువులనే ముత్యాలతో నన్ను ఆశీర్వదించారు. నా నిర్ణయాన్ని నేను మార్చుకోలేదు. తల్లి మమకారంగాని, తండ్రి గారాబంగానీ, అక్కచెల్లెండ్ల ప్రేమగానీ, బంధువుల కన్నీరుగానీ నన్ను ఏమాత్రం చలింపచెయ్యలేదు. నేను హైదరాబాదు రైల్వే స్టేషనుకు చేరుకున్నాను. అమ్మ నన్ను పదే పదే ఆలింగనం చేసుకుంటూ "బాబూ! ఏ పనికైతే వెళ్తున్నావో దాన్ని పూర్తి చేసుకొనిరా! మనస్సు లగ్నంచేసి చదువుకో-నా ఆశీర్వాదం సదా నీవెంట ఉంటుంది" అని రుద్ధకంఠంతో అంటూ వున్నది. అమ్మగారి ఈ ఆశీర్వచన వాక్యాలు నా లక్ష్యానికి మరింత దోహదం చేశాయి. నేను ఏదో ఒకటి అయితీరాలన్న పట్టుదల నాలో పెరగసాగింది. జీవిత సర్వస్వాన్ని ఆర్యసమాజ సేవకు అర్పించగలనని ప్రతిజ్ఞ చేశాను. ఇస్లాం రాష్ట్రమైన హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ఆర్యసమాజం పునాదుల్ని గట్టిపరుస్తానని సంకల్పం చేసుకున్నాను. హిందువులు పడుతున్న కష్టాల నుంచి వారిని కాపాడటానికి ప్రాణాలను బలి ఇవ్వడానికై నేను సిద్ధపడాలనుకున్నాను. తీవ్రమైన తుఫానులు వచ్చినా, మంటలు చెలరేగినా, జలప్రళయాలు సంభవించినా, పెనుగాలులు వీచినా నా ఈ నిర్ణయం మారదు.

సత్సంగం లభించింది

నేను హైదరాబాదు నుంచి ఢిల్లీ, ఢిల్లీ నుంచి లాహోరు చేరుకొన్నాను. నా జీవితంలో ఇంతటి సుదూర ప్రయాణం చెయ్యడం ఇదే మొదలు. హైదరాబాదు రాష్ట్రపు సరిహద్దుల్ని దాటి, విశాల ప్రపంచంలో, స్వేచ్ఛావాయువుల మధ్యకు చేరాను. ప్రయాణాలు కొత్త కావడంవల్ల దారిలో అనేక ఇబ్బందులను ఎదుర్కోవలసి వచ్చింది. అయితే అన్ని రకాల ఇబ్బందులను అధిగమించే మార్గాలను ప్రకృతే చూపించింది. ఆశలూ, కామనలూ దృఢ నిశ్చయం కలసిన సుగంధం వెదజల్లే పువ్వుల. ప్రసాదం స్వీకరించడానికి ఒక ఎత్తయిన, పూర్తిగా ఏడడుగుల పొడవు శరీరం గల పహిల్వాన్ ఒకడు, విశాలమైన పీటపైన కూర్చున్న ఒక సన్యాసి పాదాల వద్ద నతమస్తకుడై శ్రద్ధగా ఆశీర్వాదాలను పొందాడు. ఆ సన్యాసి ముఖం మీద తేజస్సు తొణికిసలాడుతోంది. ఒంటిమీద ఎటువంటి ఆచ్ఛాదనా లేదు. విశాలకాయుడు. ప్రశాంత వదనం. స్వామీజీ ఆదేశించారు "సుఖదేవ్! ఈయన పేరు రిజిష్టర్‌లో రాసుకో" అని 'ప్రథమ'లో ప్రవేశం ఇవ్వమని ఆజ్ఞాపించారు. యాత్ర సఫలమైనందుకు హృదయం ఉప్పొంగి పోయింది. అయితే లక్ష్యసిద్ధి కోసం చాలాకాలం శ్రమపడవలసి ఉంటుందన్న స్పృహ, ముమ్ముందు ఓపిక, సాహసం దృఢ సంకల్పం అలవరచుకోవలసి రాగలదన్న విషయాన్ని బోధచేస్తూనే ఉన్నది మనస్సు.

"ఎవరీ సన్యాసి?" అని మీరు తెలుసుకో

గోరుతున్నారనుకుంటా. ఈ లోహపురుషుడు, మహాతపస్వి, మహాతపస్వి, వీతరాగి, ఆర్యసమాజానికి మూల స్థంభమైన నిష్కపటసన్యాసి, పూజ్య స్వామీ స్వతంత్రానందజీ గారే. 1930 నుంచి 1933 వరకూ నేను దయానంద ఉపదేశిక విద్యాలయంలో వేదిక సిద్ధాంతాల అధ్యయనంతో బాటు, ఇస్లాం మత బోధనల గురించీ, వారి ఆచార సంప్రదాయాలను గురించీ క్షుణ్ణంగా తెలుసుకున్నాను. సంస్కృత విద్వాంసులు పండిత నరదేవ్‌జీ, సిద్ధాంత శిరోమణి పండితశివదత్త్‌జీ, సిద్ధాంత శిరోమణి మౌల్వీ అలిమ్, ఫాజిల్ మహోదార్శనికులు ఈశ్వరచంద్‌జీ శర్మ వంటి విద్వాంసులు ఆర్య సమాజానికి ప్రాణప్రదులైన పూజ్యస్వామీ స్వతంత్రానందజీ శిష్యపరంపరలో ఉంటుండే వారు. స్వామీజీ చరణకమలాల వద్ద కూర్చొని నేను స్వల్పంగా సంపాదించుకున్న జ్ఞానాన్ని నా జీవితంలో ఆచరణలో పెట్టడంలో ఎంత వరకు కృతకృత్యుణ్ణయినానో, ఎంతవరకు విజయం సాధించానో చెప్పడం కష్టం. 40 సంవత్సరాల పాటు ఆర్యసమాజానికి నేను చేసిన అత్యల్ప సేవలను గురించి ఆర్యజనం స్వయంగానే నిర్ణయం చేయవచ్చు. అయితే నా జీవితంలో చేసిన ఎటువంటి తప్పువల్లనైనా సరే, ఆర్యసమాజం వంటి పవిత్ర సంస్థకు, ప్రపంచ వ్యాప్తి ఉద్యమానికి మచ్చ రాకుండా చూడగలిగానన్న తృప్తి మాత్రం నాకున్నది. ప్రజాజీవనంలో ఎదురైన పరీక్షల్లో నేను విజయం సాధించి నట్లయితే, అట్లా విజయం ఏదన్నా సాధించినట్లు ప్రజలు భావించి నట్లయితే, దానికి కారనం గురుజనుల శిక్షణ, వారి జీవితపు ఉన్నతా దర్శాల ప్రతాపం-నాకు వారి సాహచర్యం వల్ల లభ్యమైన మేరకు ఫలితమేనని మనవి చేస్తున్నాను. జీవితపు పుష్పానికి, చరిత్ర వంటి సుగంధం ఏదన్నా అంటితే అది గురుజనుల కృప వల్లనే. జీవితపు దారిలో కనిపించె ముళ్లకంపలన్నింటికి, నా జీవితపు దౌర్భల్యాల వైపుకు వేలేత్తి చూపిస్తున్నాయన్నమాట. దౌర్భల్యాలు ముళ్లయి కుచ్చుకున్నప్పుడు మున్ముందు వీటిని దగ్గరకు రానీయకూడదన్న బోధ జరుగుతుంది. పారుతున్న నదిలాగా, చెడులను ఒడ్డుకు పారవేస్తూ జీవితపు నది ఈనాటి వరకూ సాగుతూ వచ్చింది.

దయానంద ఉపదేశక్ విద్యాలయంలో శిక్షణ పొందుతున్న కాలంలో జరిగిన సంగటనలను జ్ఞాపకం ఉన్నంతవరకు ఇక్కడ పొందుపరుస్తాను. దాదాపు 43 సంవత్సరాల తర్వాత ఇలా రాసుకోవలసిన అవసరం రాగలదని నేను స్వప్నంలో కూడా భావించి ఉండలేదు. గడచిన రోజుల జ్ఞాపకాలను వరుస క్రమంలో అక్షరబద్ధం చేయటం కఠినమైన పని. అయితే మస్తిష్కంలో మిగిలిపోయిన జ్ఞాపకాలనూ, ఆలోచనలనూ మననం చేసుకుంటూ వాటిల్లో కొన్నింటి నిక్కడ రాసన్తావుంటే మనస్సు ఎంతో ఆనందంగా ఉన్నది.

మస్తిష్కం అనే పీఠం మీద చిరకాలంగా తిష్టవేసుకుని కూచున్న ఈ జ్ఞాపకాలనూ, అనుభవాలనూ, ఆలోచనలనూ మీ ముందుం చతున్నాను. ప్రజాజీవితంలో పనిచేయాలంటే ఎటువంటి ఇబ్బంధులూ, ఆటంకాలూ, అనహాయ పరిస్థితులూ ఎదురవుతూ ఉంటాయో మీకు తెలిసిరావాలని నా కోరిక. ఇలాంటి కష్టనష్టాలను అనేకం ఎదుర్కొని నిలదొక్కుకున్నప్పుడే ప్రజాజీవితంలో పని చేసే కార్యకర్తకు అల్లుడికి లభించినట్లు స్వాగత సత్కారాలూ, సన్మానాలూ లభిస్తాయి.

ఆశనిరాశల తూగుటూయల

విద్యలయంలో చదువుకునే రోజుల్లో ఆర్య ప్రతినిధి సభ, పంజాబ్, గురుదత్తభవన్ ద్వారా మాకు లభిస్తూవుండిన విద్యార్థి వేతనాన్ని నిలిపివేయవలసి వచ్చింది. ఆ నలుగురిలో నా పేరు కూడా వున్నది ఆశలు నిరాశల య్యాయి. నోటి దాకా వచ్చిన అన్నం మట్టి కలసిపోయే స్థితి దాపురించింది. కండ్లకు చీకట్లు కమ్మాయి. పాఠ్యక్రమం సమాప్తం కానున్నదశ. ఒక రోజు శ్రీ వైద్యఠాకూర్ దత్త్‌జీ శర్మగారు, అమృతధారా పూజ్య స్వామీ స్వతంత్రానందజీని కలుసు కోవడానికి విద్యాలయానికి వచ్చారు. మాటల సంద ర్భంలో నాకు కలిగిన కష్టాన్ని గురించీ స్వామీజీ ఆయనకు తెలియజేశారు. స్వామీజీ నన్ను కేకవేసి పిలిచారు. నిశ్చింతగా చదువు కొనసాగించుకోమని చెప్పారు. ఠాకూర్ దత్తజీ గారు నీకు రెండు సంవత్సరాలదాకా విద్యార్థి వేతనం పంపడానికి అంగీకరించారని చెప్పారు. హైదరాబాద్ నుంచి బయలు దేరేటప్పుడు కూడా నా ఆర్థిక ఇబ్బందులను చూసి చంద్రపాల్‌జీ సహకరించారు. రెండుసార్లూ నాకు వచ్చిన ఇబ్బందులు వాటంతటవే తొలగిపోయాయి. నా చదువు యధావిధిగా కొనసాగింది.

ఆరు నెలల్లో స్నాతకం నాటికి నా పని పూర్తి అవుతుందనగా హైదరాబాదు నుంచి మా వాళ్లు నాకో టెలిగ్రాం పంపారు. టెలిగ్రాంలో "మీ తండ్రిగారు ప్లేగు వ్యాధితో బాధపడుతున్నారు; ఆయన బ్రతికే ఆశలేదు" అని రాశారు, రాత్రంతా నిద్ర లేదు. రకరకాల ఆలోచనలు రాసాగినవి. మరుసటి రోజు విద్యాలయం అధికారుల అనుమతి పొంది. తండ్రిగారిని చివరిసారి దర్శనం చేసుకోవడానికి లాహోరు నుంచి హైదరాబాదు వైపుకు ప్రయాణం కట్టాను. రెండు నెలలు గడిచాయి. తండ్రిగారి ఆరోగ్యం కాస్త మెరుగుపడసాగింది. అయితే ఇంట్లోని వాళ్లు రకరకాల చిక్కులు కల్పించారు. వాటి నన్నింటినీ విడదీసుకొని బయటపడేసరికి నాలుగు నెలలైంది. పరీక్షలు దగ్గరకొచ్చాయి. హైదరాబాదు నుంచి బయలుదేరి హుటాహుటిగా లాహోరు చేరుకున్నాను. విద్యాలయం నోటిసు బోర్డుమీద పరీక్షలకు హాజరు కావలసివున్న వారి జాబితా ప్రకటించారు. ఆ జాబితాలో నా పేరు లేదు. నా హృదయం పైన ఆ సంఘటన ఎటువంటి ప్రభావం కలుగజేసిందో ఇక్కడ రాయడానికి మాటలు రావడం లేదు. నా సహాధ్యాయులూ మిత్రులందరూ సంతోషంగా గంతులేస్తున్నారు.. తమ తమ ఇండ్లకు వెళ్లి వైదిక ధర్మాన్ని గురించి ప్రచారం చేయగలమన్న విశ్వాసంతో ఉన్నారు. నా ముఖంలో నిరాశా నిస్పృహలు పొంగి పొరల జొచ్చాయి. ఆశల మీద కప్పుకొన్న నిరాశా మేఘుచ్ఛాయలను కృష్ణజీ మహారాజ్ చూశారు. ఆర్యజగత్తులో ప్రముఖ నాయకుడాయన. పంజాబ్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షుడు. స్వామీజీతో మాట్లాడటానికని ఇక్కడికి వచ్చి ఉన్నారు. నన్ను పిలిచారు. "నీవు ఎటువంటి డిగ్రీకి అర్హుడవు కావు; పరమాత్ముడు నీకు ఉపన్యాస శక్తి సంపదను ఇచ్చాడు. సిద్ధాంతములను

నీవు కొద్దోగొప్పో అవగాహన చేసుకున్నావు కదా! విద్యాలయంలో ఉంటున్నప్పుడే వక్తృత్వ పోటీల్లో రెండుసార్లు బహుమతులు కూడా తీసుకున్నావు. ధైర్య కోల్పోకు. మరో ఏడాది వ్యయం చేయవలసిన అవసరం లేదు. స్వామీజీ ఆశీర్వాదం పొంది రంగంలో దిగు" అని నాతో అన్నారాయన. మహాశయజీ అన్నమాట బాగానే ఉన్నదని స్వామీజీ కూడా అన్నారు. విద్యాలయం నుంచీ నీకు నీ యోగ్యతను గురించి ప్రమాణ పత్రం కూడా ఇస్తామన్నారు.

మర్నాడు ఉదయం చలికాలం. ఆకాశంలో సూర్యుడు తన సర్వ శక్తితో మెరుస్తున్నాడు. చల్లని గాలి వీచికల్లో ఎండ ప్రాణదానం చేస్తున్నది. ఫీటమీద కూచుని స్వామీజీ ఎండ వేడిమిలో ఆనందాన్ని అనుభవిస్తున్నాడు. నేను ఆయన దగ్గరకు వెళ్లి నిల్చున్నాను, ఇంటికి వెళదామను కుంటున్నావా?' అని ప్రశ్నించారు. స్వామీజీ "జౌనండి ! మీ ఆశీర్వాదం నా జీవితయాత్రకు నిధిగా ఉంటుంది. దాని కోసం ప్రార్థిస్తున్నాను" అని సమాధానం చెప్పాను. అలా అంటూనే ఆయన పవిత్ర చరణాల మీద నా శిరస్సును ఆనించాను. స్వామీజీ నా వీపు మీద చెయ్యివేసి అన్నారు. "వెళ్లు ! ఈశ్వరుడు మేలు చేస్తాడు. ఒక్కమాట గుర్తుంచుకో. తిండి-ఇంటి తిండి తినాలె; పని దయానందునిది చెయ్యాలె. ఆర్య సమాజీయులు తిట్లు తినాలె." అని స్వామీజీ చెప్పిన ఈ రెండు మాటలను జీవనయాత్రకు పాఠాలుగా ఈ నాటికీ మూటగట్టుకొని బ్రతుకుతున్నాను.

విద్యాలయంలో గడిపిన ఆ రోజులను తలచుకుంటే ఇప్పటికీ కండ్లల్లో ఆనందాశ్రువులు నిండుకొస్తాయి. మా విద్యార్థులందరిపట్ల స్వామీ స్వతంత్రానందజీ మహారాజ్ తండ్రిలా వ్యవహరించారు. ప్రేమతో చూశారు. ఒక సంఘటనను ఇక్కడ పేర్కొంటాను.

సేవాకార్యంలో మొదటి పాఠం

1932 లో జమ్మూ కాశ్మీర్‌లో షేక్ అబ్దుల్లా అధ్యక్షుడుగా ముస్లిం కాన్ఫరెన్సు నాయకత్వంలో హిందూ-ముస్లిముల శ్రీధ్య తగాదాలు సృష్టించడానికి కుట్ర జరిగింది. జమ్మూ కాశ్మీర్ రాష్ట్రమంతటా ముస్లిం మతావేశపరులూ, గుండాలూ అరాచకం అగ్నిజ్వాలలూ వ్యాపింపచేశారు. హిందువులను హత్యచేసిన ఉదంతాలూ, హింసించిన ఉదంతాలూ రోజు పత్రికల్లో పతాక శీర్షికల్లో అచ్చయ్యేవి. గృహ దహనాలూ, హిందువుల సామూహిక హత్యలూ, హిందూ స్త్రీల మానభంగాలు. ఏ పత్రిక చూసినా ఇవే వార్తలు. పంజాబ్, లాహోర్ ఆర్య ప్రతినిధి సభలు సంయుక్తంగా సమావేశమై, ఈ దుర్ఘటనల్లో కష్టనష్టాల పాలైన వారికి సేవ చేయాలని నిర్ణయించుకున్నాయి. ఆ నిర్ణయం మేరకు ఉపదేశక విద్యాలయం విద్యార్థులతో బాటు స్వామీజీ జమ్మూ చేరుకున్నారు. అనేక చోట్ల సహాయక కేంద్రాలను నెలకొల్పి పెద్ద ఎత్తున కార్యక్రమాలు చేపట్టారు. జమ్మూ-కాశ్మీర్, రాజోరీ ఆఖ్నూర్, లద్దాఖ్, పూంఛ్ మొదలైన చోట్ల వేలాది మంది మత కలహాలలో హతమయ్యారు. లద్దాఖ్‌లోని బౌద్ధమస్థులను ఇస్లాం మతంలోకి మార్చడానికి పెద్ద ఎత్తున పథకాలు రచించారు. కాశ్మీర్ లోయలో ఎక్కడ చూసినా కల్లోల మంటలు రగుల్కొంటున్నాయి. భూలోక స్వర్గంగా భావించబడే కాశ్మీరు రాష్ట్రాన్ని మానవతా శత్రువులు నరకంలో తయారు చేశారు.

కాశ్మీరు మహారాజు హరిసింగ్‌ను రాష్ట్రం సరిహద్దుల నుంచి వెడలగొట్టి, తాను స్వయంగా, కాశ్మీర్ రాష్ట్రానికి కిరీటం లేని మహారాజు కావాలని షేక్ అబ్దుల్లా ప్రయత్నించసాగాడు. ఈ నాటికీ కాశ్మీర్ రాష్ట్రం షేక్ అబ్దుల్లా రాజకీయ కుట్రలకు రంగస్థలంగా కొనసాగుతూనే వున్నదని చెప్పవచ్చు. షేక్ అబ్దుల్లా పన్నిన కుట్రలన్నింటినీ, ఆర్యసమాజం అతి సాహసంగా ఎదుర్కొని విఫలం చేయగలిగింది. జమ్మూ-కాశ్మీర్ రాష్ట్రమంతటా స్వామీజీ మొత్తం 15 సహాయక కేంద్రాలను స్థాపించారు. ప్రతి కేంద్రంలో ఐదుగురేసి చొప్పున విద్యార్థులను, ఒక్కొక్క ఉపాధ్యాయుణ్ణి నియమించారు. రాజోరీ కేంద్రంలో నేను ఉండేవాణ్ణి. ఈ ప్రాంతంలో హిందువులను పట్టపగలే హత్యలు చేశారు. హిందూ ధర్మరక్షకుడూ, పరాక్రమానికి దైవం అయిన వీరుడు బందా బైరాగి జన్మించిన పవిత్ర స్థలం రాజోరీ.

రాజోరీ సహాయక కేంద్రం ఇన్చార్జిగా నేను మూడు నెల్ల పాటు అక్కడ వుండి సేవాకార్యక్రమాలు కొనసాగించాను. పండిత్ నరదేవ్‌జీ మాకు నిరీక్షకులుగా ఉండేవారు. వారికి సహాయంగా సిద్ధాంత శిరోమణి మున్షి ఫాజిల్ గారు కూడా ఉండేవారు. మూడు నెలల తర్వాత మేం ఐదుగురం విద్యార్థులం పండిత్‌జీతో బాటు జమ్మూ తిరిగి వచ్చేశాం. అప్పటికే పూజ్య స్వామీజీ మహరాజ్ లాహోరు నుంచి అక్కడికి వచ్చి ఉన్నారు. పంజాబ్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ కార్యకర్తలూ, ప్రాదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ కార్యకర్తలూ, ఒళ్లు కొరికే చలిలో ప్రాణాలను అరచేతిలో పెట్టుకుని రాత్రింబగళ్లు హిందువుల సేవలో నిమగ్నులయ్యారు. జమ్మూకు చెందిన హిందూ మహాసభ ప్రముఖ నాయకుడు శ్రీ ప్రేమ్‌నాథ్‌జీ డోగ్రామాకందరికీ వీడ్కోలు చెప్పారు. పూజ్య స్వామీజీకీ, మహాత్మా హంసరాజ్‌జీకి కృతజ్ఞతలు చెప్పారు. జమ్మూ నుంచి మేమంతా తిరిగి లాహోర్ చేరుకున్నాం.

పోలీసు స్టేషనులో

నా జీవితంలో సంతోషప్రదమైన మరో సంఘటన కూడా 1932 లోనే జరిగింది. హిందువులకూ-హరిజనులకూ మధ్య ద్వేషాన్ని పెంపొందింపజేయడానికి, బ్రహ్మాండమైన కుట్రతో ఆంగ్ల ప్రభువులు రూపొందించిన హరిజన అవార్డుకు నిరసనగా మహాత్మాగాంధీ ఎరవాడ జైలులో అమరణ నిరశన వ్రతం ప్రారంభించారు. ఈ సంఘటన ఫలితంగా భారత దేశమంతా క్రోధజ్వాలలు వ్యాపించాయి. ఆంగ్లేయుల పట్ల యువతరంలో ద్వేషాగ్ని జ్వాలలు రేగాయి. ఆ సమయంలో స్వామీ స్వతంత్రానందజీ గారిని లహోర్ కాంగ్రెసు పార్టీ కార్య నిర్వాహక అధ్యక్షునిగా నియమించారు. సాయంకాలం 5 గంటలకు అనార్కలీ చౌరస్తా దగ్గర సత్యాగ్రహం చేయాలని మా ఐదుగురు విద్యార్థులను ఆయన ఆదేశించారు. ఈ అజ్ఞను శిరసావహించి సుఖదేవ్ (మారిషస్), సోమ్‌దేవ్ (లక్నో), ధర్మదత్తు (రావల్పిండి), మహావీర్ (హర్యానా), నేనూ అనార్కలీ చౌరస్తా దగ్గరికి చేరుకున్నాం. ఉపన్యాసాలు

ప్రారంభించాము. 144 వ సెక్షన్‌ను ఉల్లంఘించారని పోలీసులు మా అయిదుగురినీ అనార్కలీ పోలీసు స్టేషనుకు తీసుకొని వెళ్లి, నాలుగు రోజులపాటు నిర్బంధంలో ఉంచారు. ఐదవ రోజున మమ్మల్ని వదలివేశారు. సత్యాగ్రహం చేసి పోలీసు నిర్బంధంలో ఉండటం నా జీవితంలో అదే మొదటిసారి. పోలీసు స్టేషన్‌లో ఉన్నందువల్ల కల్గిన ఒకే ఒక్కలాభం, పోలీసులంటే ఉండిన భయం తొలగిపోవడం. మరుసటిరోజు పత్రికల్లో డాక్టర్ మూంజే, డాక్టర్ అంబేడ్కర్‌ల మధ్య రాజీ కుదిరినట్లు వార్త వచ్చింది. ఫలితంగా మహాత్మాగాంధీ తమ నిరశనవ్రతాన్ని నిలిపివేశారు.

కొట్లాటలో గాయపడటం

మూడో సంఘటన కూడా దాని స్థానంలో అది ప్రధానమైనదే. రావీరోడ్‌లో గురుదత్త భవనం సమీపంలోనే ఇస్లామియా హైస్కూలు భవనం కూడా ఉన్నది. మధ్యాహ్నం విరామ సమయంలో ఆ హైస్కూలు విద్యార్థులు, మా విద్యాలయానికి అనుకొనిఉన్న మైదానంలోకి వచ్చి 'నాష్తా'లు చేసుకొని, మాంసం కూరతో రొట్టెలు తిని ఎముకలను అక్కడే పడేసి వెళ్లేవారు. ఒక రోజున వారు మా మైదానం లోపలికి చొచ్చుకుని వచ్చి, మా విద్యాలయానికి చెందిన నలుగురైదుగురు విద్యార్థుల మీద దాడి జరిపారు. మేం కూడా గట్టిగా సమాధానం చెప్పాం. వారు రాళ్లు విసరడం ప్రారంభించారు. విద్యాలయంలోని విద్యార్థులందరూ మాతో సహకరించడానికి వచ్చేశారు. పదిహేను నిమిషాల పాటు పెద్ద హంగామా జరిగింది. ఈ హంగామాలో అవతలి పక్షం విద్యార్థులు బాగా గాయపడటంతోబాటు, నేనూ, నా స్నేహితుడు మరొకాయన కూడా గాయపడ్డాం. అక్కడికి పోలీసులు చేరుకునేసరికి కల్లోలం సమాప్తమై పోయింది. ఇస్లామియా హైస్కూలు ప్రధానోపాధ్యాయుడూ స్వామీజీ, మధ్య వర్తిత్వం వహించి, కల్లోలాన్ని అణచివేశినారి.

హైదరాబాద్‌లో ఆశయసాధన

1933 చివరిలో శిక్షణ పూర్తి చేసుకొని హైదరాబాదు చేరుకున్నాను. అప్పటికి ఆర్యసమాజ క్షేత్రంలో నేను పూర్తిగా కొత్తవాణ్ణి. ఆర్యసమాజ్, సుల్తాన్‌బజార్ మంత్రిగారైన శ్రీ చందులాల్‌జీనీ, సాంఘిక రాజకీయ జీవితాలకు ప్రాణప్రదుడైన పండిత్ వినాయక రావు విద్యాలంకార్ గారినీ కలుసుకున్నాను. స్వామీ స్వతంత్రానంద్‌జీ ఇచ్చిన ప్రమాణ పత్రాన్ని విద్యాలంకార్ గారికి చూపించాను. ఆర్య సమాజ్ 'సత్సంగం'లో నీ ఉపన్యాసాలను ఏర్పాటు చేస్తామన్నారాయన. 'గుడ్డివానికి కావలసింది రెండు కళ్లే' నన్న సామెత రుజువైంది. నేను ప్రసంగించే ఏర్పాటు కావలన్నదే నా కోర్కె ఒక్కసారి అటువంటి ఏర్పాటు జరిపిస్తే, దారి ఏర్పడుతుంది. నిరంతరం నేను ఆర్య సమాజానికి సేవచేస్తూ వీండవచ్చు. హైదరాబాదు ఇస్లామీ రాష్ట్రం. అందువల్ల ప్రతి శుక్రవారం సెలవు ఉంటుండేది. అందువల్ల ఇక్కడి ఆర్య సమాజంలో ప్రతి శుక్రవారం 'సత్సంగం' ఉండేది. నేను సరిగ్గా సమయానికి చేరుకున్నాను. "కురాన్‌లో వేదాల తేజస్సు" అన్న విషయం మీద నేను 35 నిమిషాలు ప్రసంగించాను. హైదరాబాదులోని పరిస్థితులు, వాతావరణం మారినందువల్ల హిందూ సోదరులు ఈ ప్రసంగాన్ని బాగా మెచ్చుకున్నారు. ప్రజలు నన్ను ప్రోత్సహించారు. ఈ ఉపన్యాస కార్యక్రమం విజయవంతం అయినందుకు నేను యుద్ధంలో గెలుపొందినంతగా ఆనందించాను.

కార్యక్రమంలో నిమగ్నమయ్యాను

ఆర్య సమాజం కార్యక్రమాలకు నన్ను వినియోగించడం ప్రారంభించారు. సుల్తాన్ బజార్ ఆర్యసమాజ మంత్రి శ్రీ చందూలాల్ గారు హైదరాబాదుకి కొంచెం దూరంలో బీదర్ జిల్లా "హాలీఖేడ్" గ్రామానికి పండిత్ రామచంద్రజీ దెహాల్వీగారు రాబోతున్నట్లు వార్త తెచ్చారు. నేను కూడా ఆయనతో బాటు వెళ్లవలసి ఉంటుందని మంత్రిగారి ఆదేశం. హైదరాబాదులో పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్, చార్-ఎట్-లా పేరు చాలా ప్రఖ్యాతమైపోయింది. హిందూ మతస్థుల అధికారాల రక్షణకోసం ఆ రోజుల్లో ఈ ఇద్దరు మహానుభావులే కృషి చేస్తూ వుండేవారు. ఇదే విధంగా బంసీలాల్‌జీ ఆర్య వకీలు; ఆయన సోదరుడు, శ్యామ్‌లాల్‌జీ ఆర్యకూడా వకీలే. ఈ ఇద్దరు న్యాయవాదులూ రాష్ట్రంలో ఆర్యసమాజ ప్రచారాన్ని ఉవ్వెత్తుగా సాగించారు. రాష్ట్రమంతటా వీరి పేరు ప్రఖ్యాతులు మారుమ్రోగాయి. వీరిని కలుసుకున్న వారెవరైనా సరే వీరి ప్రతిభను గురించీ, సాహసాన్ని గురించీ, త్యాగశీలత, కర్మనిష్ఠ, సత్య వాక్పాలన మొదలైన సద్గుణాలను ప్రశంసించేవారు. మొత్తంమ్మీద నాకు మరో చక్కని అవకాశం లభించింది.

రెండు దీపస్థంభాలు

హైదరాబాదు నుంచి, పండిత్ రామచంద్రజీ దెహాల్వీ, పండిత్ వినాయకరావుజీ విద్యాలంకార్, శ్రీ చందులాల్‌జీ, శ్రీ సూర్య ప్రకాశ్‌జీ, శ్రీ చంద్రపాల్‌జీ, శ్రీ గజానందజీ, పండిత్ దత్తాత్రేయ ప్రసాద్‌జీ- అడ్వొకేట్, నేనూ కలిసి హాలీఖేడ్ గ్రామానికి బయలుదేరాం. హాలీఖేడ్ వీధులన్నీ బాగా అలంకరించారు. దెహాల్వీజీ స్వాగతానికి రాష్ట్రం నలుమూలల నుండీ వేలాది మంది ఆర్యసమాజీయులు వచ్చి చేరారు. వూళ్లోకి చేరగానే వేలాది మంది ఆర్యసమాజీయులతో బాటు ఆర్యసమాజానికి ప్రాణప్రదులైన భాయీ బంసీలాల్‌జీ మాకు స్వాగతం చెప్పారు. వాతావరణమంతా జయజయ ధ్వానాలతో నిండిపోయింది. చేతుల్లో కత్తులూ, లాఠీలూ, పిస్తోళ్లూ ధరించి చిట్‌గోపా, ఉద్గీర్, బీదర్‌లకు చెందిన నవ యువకులు దెహాల్వీజీకి ముందు నడుస్తున్నారు. సోదరులిద్దరూ పండిత్‌జీ వెంట నడుస్తున్నారు. మూడు రోజుల పాటు ఉత్సవాల లాగా జరిగిపోయాయి. దెహాల్వీజీ ప్రసంగాలు హిందువుల్లో నవ జీవనాన్ని ప్రకోనిపచేశాయి. భాయీ బంసీలాల్ ప్రసంగాలు ప్రేరణనూ, ఉత్సాహాన్ని ప్రదానం చేశాయి. పెండాల నిశ్శబ్దంగా నిండుగా వున్నది. మరునటి రోజు ఉదయం ప్రసంగిస్తూ పండిత్ వినాయకరావుజీ విద్యాలంకార్. ఒక వేద మంత్రానికి వ్యాఖ్యానం చెప్పి శ్రోత్రలను ఆశ్చర్యంలో ముంచివేశారు. ఆఖరు రోజున ఉదయం నాకు కూడా ప్రసంగించే అవకాశం లభించింది. "పాపానికి భయ పడాలె- పాపాత్ములకు కాదు" అనేది నా ఉపన్యాసానికి శీర్షిక. ఈ ప్రసంగం ప్రభావం యువకులపైన బాగా పడింది. హాలీఖేడ్ ప్రజల ఉత్సాహం చూచి తీరవలసిందే. పదే పదే నినాదాలతో దిక్కులు పిక్కటిల్ల చేస్తూ

అక్కడి ప్రజల ఉత్సాహం అలల్లా ఉప్పొంగి పోయింది. నిజాం పాలకుల నియంతృత్వాన్ని ఎదిరించడానికి నవయువకుల్లో ఉప్పొంగి పోతున్న ఉత్సాహాన్ని చూస్తే, గడ్డకట్టిన రక్తం కూడా వేడెక్కి పోయేట్లుగా ఉండేది. ఉద్రేకపూరితమైన వాతావరణాన్ని, ప్రజల హృదయాల్లో రాజుకుంటున్న అగ్ని జ్వాలలను ప్రశాంత పరచడంలో భాయీ బంసీలాల్ అత్యంత నిపుణుడు. "మీ ఆర్యసమాజీయులు ఉత్సాహాన్ని, ఆవేశాన్ని నేను సాదరంగా గౌరవిస్తున్నాను" అని అన్నారు బంసీలాల్‌జీ. "మీ హృదయాల్లో చెలరేగుతున్న ఆశలనూ, ఆకాంక్షలనూ, కోర్కెలనూ మీ చూపుల్లో గమనిస్తున్నాను. నిజాం ప్రభుత్వపు అరాచకాలను, అన్యాయాలనూ, నియంతృత్వాన్ని ఎదుర్కోవాలన్న మీ కోర్కె త్వరలోనే పూర్తవుతుంది. ఏ పనినైనా చెయ్యవలసిన సమయంలో చేస్తేనే విజయవంతం అవుతుంది. కాస్త నిరీక్షించండి. ఆర్య సమాజాన్ని పటిష్టం చేయండి." అన్నారాయన. వీరి కార్యదీక్ష-సాహసం త్యాగనిరతి చూస్తూవుంటే నాలో కూడా దృఢదీక్ష పెంపొందింది. రాష్ట్రమంతటా వ్యాపించివున్న అంధకారంలో హిందువలందరూ ఈ అన్నదమ్ములిద్దరినీ దీపస్తంభాలుగా భావించే వారనడంలో సందేహం లేదు.

వైదికాదర్శం

నిజాం రాష్ట్ర ఆర్య ప్రతినిధి సభ కార్యవర్గ సమావేశం మూడు రోజులపాటు జరిగింది. ఆర్యసమాజం వాణిని దూరదూరాలకు వినిపింపచేయాలని, ప్రజలకు వైదిక ధర్మపు ఉన్నతాదర్శాలను బోధించాలని, ఇందుకోసం "వైదికాదర్శం" అన్న పేరుతో ఒక వారపత్రిక ప్రారంభించాలని నిర్ణయం జరిగింది. ఉర్దూ, ఇంగ్లీషు, హిందీ భాషల్లో పండితులైన శ్రీ సూర్యప్రతాప్ గారికీ, శ్రీ చంద్రపాల్ గారికీ దీని బాధ్యతను అప్పగించారు. ఈ ఉభయులతో సహకరిస్తూ, వారి ఆదేశాలను అమలు జరపడానికి నన్ను నియమించి, నెలకు ఇరవై రూపాయల గౌరవ వేతనాన్ని కూడా నాకు నిర్ణయించారు. అయితే నిర్ణయం జరిగి మూడు నెలలు గడిచినా పత్రికను ప్రారంభించలేక పోయాము. ఇక్కడ కారణాలను వివరించడం అనవసరం. ఒకరోజు ఏదో పని మీద భాయీ బంసీలాల్‌జీ వకీలు హైదరాబాదుకు విచ్చేశారు, పత్రికా ప్రచురణ ప్రారంభం కానందుకాయన చాలా వేదన చెందారు. "వేదికాదర్శం" మొదటి సంచిక ప్రచురణ జరిగేదాకా హైదరాబాదులోనే ఉండి అప్పుడుగాని తిరిగి వెళ్లలేదాయన. శ్రీ చందులాల్‌జీ సలహా మేరకు శ్రీ మనోహర సింగ్, ఎం.ఎ., ఎల్.ఎల్.బి. గారిని పత్రికా సంపాదకులుగా నియమించారు. ఈ పత్రిక ప్రచురణ కర్తగా నాకు బాధ్యత అప్పగించారు. పత్రికా ప్రచురణ ప్రారంభించిన రెండు నెలల తర్వాత, 13వ తేదీ ఖుర్దాద్, 1344 ఫసలీన (ఆ రోజుల్లో హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ఫసలీ సంవత్సరం గణనలో ఉండేది) దీనికి సరైన ఆంగ్లం తేదీ, 18 ఏప్రిల్, 1935 న నిజాం ప్రభుత్వం నాకు ఒక నోటీసు జారీ చేసింది. ఆ నోటీసులో "నిన్ను మానసూర్ (నిజాం రాజ్యంలో నల్లనీళ్లుండే చోటు) కు ఎందుకు పంపించరాదు?" అంటూ సంజాయిషీ అడిగారు.

నాకు పత్రికా రచనలో పెద్దగా అనుభవం లేదు. ఈ పత్రికను ప్రజారంజకం చేయటంలో ఏ శక్తి పని చేసిందో ఈశ్వరుడికే తెలుసు దీని ప్రజాభిమానాన్ని అంచనా వెయ్యడానికి, ఎప్పుడన్నా అశాధారణ పరిస్థితుల్లో ఒక వారం పత్రిక రాకపోతే పాఠకుల్లో విపరీతంగా నిరాశా నిస్పృహలు కనిపించడమే బలమైన సాక్ష్యం. ఈందుకు కారణం నా రచనా పాటవం యొక్క ప్రభావం ఎంత మాత్రం కాదు, అనాటి సమస్యల ప్రభావం మాత్రమేననేది నిర్వివాదాంశము. కీర్తిశేషులు స్వర్గీయ పండిత్ ఉమ్రావ్‌సింగ్, పండిత్ సోహన్‌లాల్‌జీ వానప్రస్త్ గార్ల సహకారం నాకు బాగా లభించింది. వారి సహకారం వల్ల నాకు ఈ రంగంలో కూడా విజయం చేకూరింది. ఒక సంవత్సరం తిరిగే లోపల "వేదికాదర్శం" పత్రిక హిందువుల నిజమైన ప్రతినిధిగా పత్రికా రంగంలో ఉజ్వల తారగా ప్రకాశింపసాగింది. దీనికి విరుద్ధంగా కొందరు ముస్లిములు "వక్త్", "రహబరె దక్కన్", "సుబహే దక్కన్" అనే దిన పత్రికలనూ, "అల్ ఆజమ్" అనే వార పత్రికనూ ప్రారంభించి పెద్ద ఎత్తున ఉద్యమం ప్రారంభించారు. నిజాం ప్రభుత్వానికి కావలసింది కూడా ఇదే. అప్పటి సమాచారశాఖ డైరెక్టరుగా వుండిన నవాబ్ అలియావర్‌జంగ్ బహాదుర్, "వేదికాదర్శం" పత్రికా ప్రచురణను నిలిపివేయాలంటూ ఉత్తరువులు జారీ చేశారు. ఈ పత్రిక మూతపడటం వల్ల నాకు విచారమూ కలిగింది, సంతోషమూ కలిగింది. హిందూ సమాజాన్ని సేవించడానికి లభించిన అవకాశం పోయిందే అన్న విచారం, పత్రికారంగంలో ఆశించిన దానికన్నా అధిక విజయం సాధించినందుకు సంతోషం. "వైదికాదర్శం" పత్రిక ఈ ప్రాంతపు హిందువుల్లో ఆదర్శాలతో బాటు జీవితం సాగించాలన్న సాహసాన్ని పెంపొందించింది.

రచనలూ ప్రసంగాలూ బంద్

నాకు వ్యతిరేకంగా ముస్లిం పత్రికా రంగంలో ప్రచారం యధావిధిగా కొన సాగింది. ఫలితంగా నిజాం ప్రభుత్వం నాపైన ఒక సంవత్సరం పాటు 26 ఖుర్దాద్ 1347 ఫసలీ, అనగా 30 ఏప్రిల్ 1938 నుంచి ప్రసంగించడాన్నీ, రచించడాన్నీ నిషేధిస్తూ ఉత్తరువులు జారీ చేసింది. నాతోబాటు ఇటువంటి నిషేధాన్ని మజ్లిసె ఇత్తెహాదుల్ ముసల్మీన్ అధ్యక్షులు నవాబ్ బహాదుర్ యార్‌జంగ్ బహాదుర్ పైన కూడా విధించారు. "వైదికాదర్శం" పత్రిక హైదరాబాద్ వాతావరణాన్నే మార్చి పారేసింది. నిర్భయత్వం, సాహసంతో బాటు ఈ పత్రిక, నిజాం ప్రభుత్వపు అత్యాచారాలను బయట పెట్టడంతో చారిత్రాత్మకమైన పాత్ర వహించింది. 'వైదికాదర్శం' పత్రిక ఎంతటి ప్రతిష్ఠతో జీవితాన్ని ప్రారంభించిందో అంతటి ప్రతిష్ఠతోనే దాన్ని పూర్తి చేసిందంటే అతిశయోక్తి కాదు. 'వైదికాదర్శం' పత్రికను పాఠకులు ఈ నాటికీ మరచిపోలేదు.

ఉపన్యాసాలనూ, రచనలనూ సంవత్సరం పాటు నిషేధిస్తూ జారీ అయిన ఉత్తరువును, మరో రకంగా వరదానంవలె మలచుకొని, నవయువకులను స్వయంగా కలుసుకుంటూ నిజాం ప్రభుత్వపు అత్యాచారాలనూ, అన్యాయాలనూ ఎదిరించడానికి వారిని విడివిడిగా ప్రోత్సహిస్తూ, అవసరం వచ్చినప్పుడు ప్రభుత్వానికి వ్యతిరేకంగా పోరాటాలు ప్రారంభించడానికి వారిని సమాయత్తపరిచే

కార్యక్రమాన్ని పెద్ద ఎత్తున ప్రారంభించి కొనసాగించాను. లాహోరు నుంచి వచ్చే "ఆర్య గెజెటు" "ప్రకాశ్" పత్రికల్లో గుప్తనామంతో వ్యాసాలు కూడా వ్రాశాను. 'ఆర్య గెజెట్' సంపాదకులు శ్రీమాన్ దుర్గాప్రసాద్ శర్మ గారు, ఈనాటికీ ఇంకా బ్రతికేవున్నారు– ఆ రోజుల్లో అతి నిర్భయంగా హైదరాబాదు ప్రజలను ఆదుకున్నారు. హైదరాబాదు ప్రభుత్వం లాహోరు నుంచి వెలువడే ఆర్య గెజెట్ పత్రిక హైదరాబాదు రాష్ట్రం సరిహద్దులకు రాకుండా నిషేధించి, నన్ను మరోసారి హైద్రాబాద్ నగరంలోనే నిర్బంధించింది. హైదరాబాదు ప్రభుత్వం వారి ఈ ఆజ్ఞను నేను ధిక్కరించాలనుకుంటూవుండగా, పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్ గారు వచ్చి, నన్నలా చేయవద్దని సలహా ఇచ్చారు. ఆరు నెలలు గడిచిపోయాయి. ఈ ఉత్తరువును వాపసు తీసుకుంటారన్న నా ఆశ నిరాశ అయింది. చివరికి ప్రభుత్వ ఆదేశాలను ఉల్లంఘించాలని నిర్ణయించుకున్నాను. నా ఈ నిర్ణయం గురించి అప్పటి హైదరాబాదు రాష్ట్రానికి ప్రధానమంత్రిగా ఉండిన నవాబ్ హైదర్ నవాబ్ జంగ్ బహాదుర్ గారికి తెలియజేశాను. దాని ప్రతిని పోలీసు కమీషనర్ నవాబ్ రహమత్ యార్ జంగ్ బహాదుర్‌కు కూడా అందజేశాను.

కేసు–జైలు–విడుదల

నా ఈ లేఖల ఫలితంగా వారం రోజుల్లో నా నిర్బంధాన్ని రద్దు చేశారు. కాని రెండో వారంలోనే నన్ను ప్రభుత్వాన్ని పడదోయడానికి కుట్ర పన్నాననే ఆరోపణ మీద, సిక్షస్మృతి 183వ సెక్షను క్రింద అరెస్టుచేసి న్యాయస్థానం ఎదుట హాజరుపరిచారు. జమానతుపై విడుదలయ్యాను. కేసు నడిచింది. పండిత్ వినాయకరావు బార్–ఎట్–లా, పండిత్ గోపాలరావు బోర్గాంవ్‌కర్, హైకోర్టు వకీలు, శ్రీ దిగంబరరావు లాట్‌కర్ అడ్వొకేట్లు; చాలా సామర్థ్యంతో కేసును నడిపించారు. అయినప్పటికీ, న్యాయస్థానం వారు, నాకు సంవత్సరం పలిటు కఠిన కారాగారశిక్షనూ, జరిమానానూ విధిస్తూ తీర్పు చెప్పారు. అదే రోజు సాయంకాలం నన్ను గట్టి పోలీసు బందోబస్తుతో సెంట్రల్ జైలుకు తీసుకొని వెళ్లారు. పండిత్ వినాయకరావు గారూ, దినాగంబర రావు లాట్కర్ గారూ దీని మీద హైకోర్టులో అప్పీలు చేశారు. అప్పీలు గెలిచి, నేను విడుదల అయ్యాను.

పోరాటమార్గంలో........

సుల్తాన్ బజారు ఆర్య సమాజం వార్షికోత్సవాలు సమీపిస్తున్నాయి. ఏర్పాట్లు చురుకుగా ప్రారంభమయ్యాయి. ఆర్య జగత్తుకు సంబంధించిన ప్రముఖ ఉపదేశికులనూ, విద్వాంసులనూ సమావేశపరచాలన్న ప్రతిపాదన కూడా వచ్చింది. వారందరూ వస్తారన్న వార్త ఆనోటా ఆనోటా ప్రాకి నగరంలో ఉత్సాహపూరితమైన వాతావరణం ఏర్పడింది. పండిత్ రామచంద్రజీ దెహాల్వీ, పండిత్ బుద్ధదేవ్ విద్యాలంకార్, పండిత్ ధర్మభిక్షు, పండిత్ సత్యదేవ్ (లక్నో) అప్పటికే వచ్చి చేరుకున్నారు. పండిత్ ధర్మభిక్షు ప్రసంగాలతో హైదరాబాదు నగరంలోని హిందూ ప్రజల్లో నవజీవనపు అలలు రేగాయి. ఆయన సంస్కృతం, అరబ్బీ భాషల్లో విద్వాంసులు. ఆర్యసమాజ వార్షికోత్సవాలు వైభవోపేతంగా జరిగాయి.

ఒక నెల రోజుల తర్వాత ఆర్యసమాజం ఎన్నికలు జరగాల్సి ఉంది. ఆర్య సమాజీయుల్లో ఎన్నికల జ్వరం పెరిగింది. చందులాల్‌జీ వర్గానికే నేను అండదండగా వున్నాను. ఆర్య సమాజంలో ఈ వర్గానికి మంచి ప్రభావం ఉండేది. ఎన్నికలు జరిగాయి. చందూలాల్‌జీ, మోహన్‌లాల్‌జీ, గజానందజీ గుప్త, వినాయకరావుజీ విద్యాలంకార్ నా పనికి మెచ్చుకున్నారు. అందువల్ల మంత్రి పదవికి వారు నా పేరును ప్రతిపాదించారు. ఏకగ్రీవంగా నేను మంత్రి పదవికి ఎన్నికయ్యాను. పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్ నాయకత్వంలో పని చేసే అవకాశం లభించినందుకు నాకు మరింత సంతోషమైంది. వరుసగా నాలుగు సంవత్సరాల పాటు ఆర్యసమాజపు మంత్రి పదవిలో కొనసాగాను. నేను మంత్రిగా (కార్యదర్శి) ఉన్నరోజుల్లా పండిత్ దేవేంద్రనాథ్‌జీ శాస్త్రి సంఖ్యతీర్థ్, పండిత్ సూర్యదేవ్‌జీ శర్మ ఎం.ఏ. (లక్నో), పండిత్ ప్రియవ్రతజీ విద్యావాచస్పతి, మహాత్మా నారాయణ స్వామీజీ, పండిత్ స్వతంత్రానందజీ, ఆచార్య రాందేవ్‌జీ, మహాత్మా ఖుశ్‌హాల్‌చంద్‌జీ ఖుర్‌సంద్, మౌల్వీ సత్యదేవ్‌జీ వంటి సుప్రసిద్ధ పండితుల ప్రసంగాలు హైదరాబాదు నగర పౌరులు వినగలిగారు.

హైదరాబాదులో ఆర్యసమాజం సభలకు 50 వేలకు తగ్గకుండా హిందు ప్రజలు రావడం చూసి ప్రభుత్వం కన్ను కుట్టింది. ప్రభుత్వని వైపు నుంచి ఆర్య సమాజీయుల పట్ల కఠిన ప్రవర్తన ప్రారంభమైంది. పండిత్ మంగళ్‌దేవ్‌జీ శర్మగారిపై ప్రతిబంధకం విధించారు. పండిత్ రామచంద్రజీ దెహాల్వీలాంటి వారిపైన హలీఖేడ్ గ్రామంలో చేసిన ప్రసంగం ఇతర మతాలను అవమానపరిచేదిగా ఉన్నదని నేరారోపణ చేసి బీదర్ కోర్టులో చాలాన్ దాఖలు చేశారు. ఈ కేసు వల్ల భారతదేశమంతటా నిరసన. క్రోధం అలలు వ్యాపించాయి. సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు మహాత్మా నారాయణ స్వామీజీ, ప్రభుత్వానికి టెలిగ్రాం ఇచ్చి హెచ్చరిక చేయడమే కాక, తీవ్రమైన అసంతృప్తిని వ్యక్తం చేస్తూ పండిత్‌జీ పైన పెట్టిన కేసును తక్షణం ఉపసంహరించుకోవాలని డిమాండు చేశారు. కేసును వాపసు తీసుకున్నారు. అయితే హైదరాబాదు రాష్ట్రంలోనికి పండిత్‌జీ ప్రవేశంపై నిషేధం విధించారు.

హైదరాబాదులో నవ యువక సమ్మేళనం జరిగింది. అందులో ప్రసంగిస్తూ నేనిట్లా అన్నాను–"హైదరాబాదు స్టేటు 82 వేలచదరపు మైళ్ల సువిశాలమైన జైదు. ప్రభుత్వాన్ని వ్యతిరేకించి, పోరాటం సాగించడానికి మనమంతా సమాయత్తం కావలసిన సమయం ఆసన్నమైనది." ఈ వాక్యాన్ని రాజద్రోహ నేరంగా చిత్రించి ప్రభుత్వం నాపైన కూడా కోర్టులో చాలాను దాఖలు చేసింది. కేసు నడిచింది. ఆరు నెలల కారాగార శిక్ష, రెండువందల రూపాయల జరిమానా శిక్ష విధించారు.

ఒక దీపస్థంభం ఆరిపోయింది

హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో అనేకచోట్ల ఆర్యసమాజీయులకు విరుద్ధంగా ప్రభుత్వం అనేక విధాలుగా, తన ఇష్టం వచ్చిన అక్రమ చర్యలను ప్రారంభించింది. భాయీ బంసీలాల్‌జీ వకీల్, భాయీ శ్యామ్‌లాల్‌జీ జిల్లాల్లో

తిరుగుతూ ఆర్యసమాజ ప్రచారాన్ని జోరుగా సాగిస్తున్నారు. ప్రతి నిమిషం వారి ప్రాణాలకు ప్రమాదం కనిపించేది. ప్రభుత్వమూ, కొందరు ముస్లిం మత తత్వవాదులూ కలిసి, వీరిద్దరి ప్రాణాలను అంతం చెయ్యాలని కుట్ర పన్నారు. ఈ ఉభయులనూ రక్షిస్తూ వచ్చింది ప్రకృతే. ఆర్యసమాజ చరిత్రలో వీరుభయులకూ కల స్థానం బ్రతికివున్న మృతవీరులకు ఉండగల స్థానమే, తమ వసుల ద్వారా ఆ విషయాన్ని వీరు రుజువు చేశారు. అర్య సమాజ చరిత్రలో ఒక దుర్దినం రానే వచ్చింది. 1938 డిసెంబరు 17వ తేదీన భాయీ శ్యాంలాల్‌జీ బీదరు జైలులో, సోక్రటీసు లాగా విషం త్రాగి చనిపోయారు. ఈ కథ కూడా అత్యంత భయానకమైనది.

1938లో ఆర్య సమాజ్ ఉద్గీర్ పక్షాన హోలీ రోజున ఊరేగింపు తీశారు. ఊరేగింపు యథావిధిగా ఇదివరకు నిర్ణయించుకొని ప్రకటించిన మార్గం గుండా సాగిపోతున్నది. పాషా మియా వకీల్, వలీ మహమ్మద్ సాహెబ్ వకీల్–ఈ ఇద్దరి కనుసన్నల్లో కొందరు మత తత్వవాదులు ఊరేగింపు మీద విరుచుకు పడ్డారు. కొట్లాటలో ఉభయపక్షాలవారూ గాయపడ్డారు. ఒకరు మరణించారు. భాయీ శ్యాంలాల్‌జీతో సహా 16 గురు ఆర్య సమాజీయులను అరెస్టు చేసి హత్యానేరం మోపి కేసు పెట్టారు. కేసు నడుస్తూవున్న రోజుల్లో ఆయన ఆరోగ్యం బాగా చెడిపోయింది. డాక్టరు ఇచ్చిన మందులో బీదరు జైలు అసిస్టెంటు, జైలరు విషం కలిపి ఇచ్చారు. మందు అనుకొని ఆయన పుచ్చుకున్నారు. భాయీ శ్యాంలాల్‌జీ బలిదానంతో రాష్ట్రమంతటా క్రోధజ్వాలలు ప్రజ్వరిల్లాయి. అర్య సమాజీయులందరూ కన్నీరు మున్నీరుగా దుఃఖించారు. ఆర్యప్రజల ప్రియ నాయకుడు, హృదయం, ప్రాణం, కష్టాల్లో అండ, హిందువుల రక్షకుడు ప్రపంచం నుంచి తనువు చాలించుకొని వెళ్లిపోయాడు.

భాయీ శ్యాంలాల్‌జీ బలిదానానికి రెండు నెలలు ముందుగా, నేను ధ్రువపేట్ (ధూల్‌పేట్)లో సంభవించిన హిందూ ముస్లిం తగాదాల సందర్భంగా కోర్టులో సాగుతున్న కేసుల విషయం మాట్లాడటానికి, పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్ గారి సలహా మేరకు, ఢిల్లీ నుంచి వచ్చి, హైదరాబాదులో ఉంటున్న ప్రముఖ న్యాయవాది శ్రీ బ్రజ్ నారాయణ తవ్వక్లీ గారిని కలుసుకోవడానికి వికాజీ హోటల్ (ఆబిడ్స్‌లో ఇప్పటి శ్రీ ఏసెస్) కు వెళ్తూవుండగా దారిలో హైదరాబాదు పోలీసు సి.ఐ.డి. రాఘవేంద్ర రావు అడ్డువడి, అరెస్టు చేసి, పబ్లిక్ గార్డెన్ వద్ద అప్పట్లో ఉండిన జిల్లా పోలీసు కార్యాలయానికి తీసుకొని వెళ్లారు. పోలీసు కార్యాలయానికి చేరుకున్న తర్వాత పోలీసు ఉన్నతాధికారి మిస్టర్ హోల్మన్స్, నిజాం ప్రభువుల ఫర్మానా ఉన్న ఒక మూసిన కవరును నా చేతికిచ్చారు. "నిన్ను మూడు సంవత్సరాల వరకు మనసూరులో నిర్బంధిస్తున్నాం" అని అందులో వున్నది. ఇది 1348 ఫసలీ ఆజూర్ 10 వ తేదీన అనగా అక్టోబరు 15, 1938లో జరిగింది. హైదరాబాదు రాష్ట్రానికి మానసూర్ 'కాలాపానీ' వంటిది. హైద్రాబాదు నుంచి 30 మైళ్ల దూరంలో మహబూబ్‌నగర్ జిల్లాలో ఉన్న ఒక పెద్ద కొండపై, దట్టమైన అడవిలో ఉన్న జైలులో నన్నుంచారు. ఆ చుట్టుపట్ల పులులూ, చిరత పులులూ తిరుగాడుతుండేవి. ఒక ఏడాది, ఐదు నెలలు, 21 దినాల తర్వాత మానసూరు నుంచి వదలిపెట్టారు.

కాలాపానీ-విముక్తి

ఆర్య సమాజం వారు జరిపిన చారిత్రక సత్యాగ్రహం తర్వాత నిజాం ప్రభుత్వం లొంగిపోయింది. పరిపాలనా యంత్రాంగం శక్తి కోల్పోయింది. కోటీశ్వరుడు, ధన మదాంధత, అధికార మధాంధతతో విర్రవీగుతున్న నిజాం ప్రభుత్వం నిజాం రాజు గర్వాన్ని అర్య సమాజం అనే పర్వతం ఢీకొని తునాతునకలు చేసింది. ఆర్యసమాజం సత్యాగ్రహంలో పాల్గొనడానికి దేశం నలుమూలల నుంచి 15 వేల మంది ఆర్య సమాజీయులు వచ్చి పాల్గొన్నారు. 21 మంది ఆర్య వీరులు ప్రాణాలు కోల్పోయారు. నిజాం ప్రభుత్వం, ఆర్యసత్యాగ్రహ సమితి అధ్యక్షులు శ్రీ ఘనశ్యాంసింహజీ గుప్త గారిని సంప్రదింపుల కోసం హైదరాబాదు రావలసినిదిగా ఆహ్వానించింది. కాని ఆయన తన పక్షాన సంప్రదింపుల కోసం శ్రీ దేశబంధు గుప్తగారిని పంపించారు. దేశబంధుగుప్త గారు ఆర్య సమాజంలో ప్రముఖ నాయకులు. సంప్రదింపులు సఫలమైనాయి. అయితే నిజాం ప్రభుత్వం ఒక్క షరతును మాత్రం అంగీకరించలేదు. ఆ షరతు నా విడుదలకు సంబంధించింది. దేశబంధుగారు, ఘనశ్యామ్ సింగ్ గారిని అడిగారు. ఈ పరిస్థితుల్లో ఏం చెయ్యాలని. ఒప్పందానికి అంగీకరించవద్దని సమాధానం వచ్చింది. నవాబ్ అలీయావర్ జంగ్ బహాదుర్‌కూ, అప్పటి ప్రధానమంత్రి సర్ అక్బర్ హైదరీ గార్ల మధ్య సంఘర్షణ కొనసాగింది. చివరికి ఒప్పందం తర్వాత రెండు నెలలకు నన్ను వదలిపెట్టాలని నిర్ణయం జరిగింది. ఈ నిర్ణయం తర్వాత ఒప్పందం మీద సంతకాలు జరిగాయి.

రెండు నెలలు గడిచిన తర్వాత కూడా ప్రభుత్వం నన్ను విడుదల చెయ్యలేదు. అప్పుడు ఘనశ్యాంసింహజీ ఈ విషయాన్ని మహాత్మా గాంధీ గారికి చెప్పి, కాంగడీలోని గురుకులం ఆచార్యులు పండిత అభయదేవ్‌జీ విద్యాలంకార్‌ను హైదరాబాదుకు పంపారు. ఆచార్యజీ, సర్ అక్బర్ హైదరీ– ఉబయులూ యోగిరాజ్ అరవింద ఘోష్ శిష్యులు కావడంతో ఉభయుల మధ్య ఏకగురుభక్తి శిష్య సోదరికం ఉండేది. ఒక నెల 21 రోజుల తర్వాత నా విడుదల జరిగింది. నా విడుదలకు ముందు, ప్రధానమంత్రి అక్బర్ హైదరీ ఫరాహాబాదును, వేసవి శిబిరంగా మార్చడానికి ప్రణాళికను రూపొందించేందుకు ఆస్ట్రేలియాకు చెందిన నిపుణులతో బాటు ఫరాహాబాదుకు వచ్చారు. అప్పుడు తిరిగి వెళ్తూ మానసూరు జైలును కూడా సందర్శించారు. పది నిమిషాలసేపు నాతే మాట్లాడారు. మాటల సందర్భంగా అనేక విషయాలు అడిగారు. ఆయన అడిగిన దానికల్లా నేను సమాధానం చెప్పాను. పోలీసు ఇన్‌స్పెక్టరుకు ఏవో ఆదేశాలిచ్చి హైదరాబాదుకు తిరిగి వెళ్లారు. మరుసటి రోజు 12 గంటల రాత్రి పోలీసు అధికారి అష్ఫాకుల్లాఖాన్ పర్యవేక్షణలో నన్ను మానసూరు నుంచి హైదరాబాదుకు చేరవేశారు.

మానసూరు జైలు నుంచి నేను మా అన్నగారికి, వదినగారికీ, సరళాదేవికీ రాసిన ఉత్తరాల్లో నుంచి రెండు మూడు ఉత్తరాలను ఇక్కడ పొందుపరుస్తున్నాను. నేను ఇంటికి

వ్రాసే ఉత్తరాలనూ, ఇంటి నుంచి నాకు వచ్చే ఉత్తరాలను కూడా సెన్సారు చేసేవారు. పోలీసు శాఖలో అత్యున్నతాధికారి చూసిన తర్వాతనే ఎవరికి చేరవలసిన వాటిని వారికి చేర్చేవారు.

లేఖ-1 వదినగారి పేర వ్రాసింది :- మీరు నన్ను కలుసుకోవడానికి వస్తామను కుంటున్నారు. ఇక్కడికి వచ్చినతర్వాత నన్ను చూడనివ్వకపోతే కలిగే కష్టాన్ని, బాధనూ సహించడానికి సిద్ధంగా ఉంటేనే రండి అలా జరిగినట్లయితే మీకేకాదు, నాకు కూడా చాలా బాధ కలుగవచ్చు. నా కోసం మీరు అవాంఛ నీయమైన విపత్తును కొనితెచ్చుకోవద్దు. అందువల్ల మీరు రాకుంటేనే మంచిది.

లేఖ-2-సరళాదేవరి పేర :- సరళా బేటీ! నా ఉత్తరాన్ని నువ్వు శ్రద్ధగా చదువు. అర్థం చేసుకోవడానికి ప్రయత్నించు. హిందీతో బాటు సంస్కృత బాషను కూడా నేర్చుకో, చదువుకోవడం తప్ప మరే ఆలోచనా రానివ్వకు. ప్రతి రోజూ సంధ్యాహవనం చేనస్తూవుండు. ఆర్య నమాజం వారి సత్సంగానికి వెళుతూవుండు.

లేఖ-3-అన్నగారి పేర :- ఆర్య సత్యాగ్రహం విజయవంతంగా ముగిసిందని తెలిసింది. నిజాం ప్రభుత్వం ఆర్యసమాజం వారి కోర్కెలన్నింటినీ అంగీకరించినట్లు తెలిసింది. ఆర్యసమాజం సాధించిన ఈ ఘన విజయానికి ఎంతైనా గర్వించవచ్చు. ఆర్య సమాజం శక్తి-కొండంత నిజాం శక్తిని కదిల్చి వేసింది. నా విడుదల గురించి విచారించ కండి. నన్ను విడుదల చేసే విషయంలో నిజాం ప్రభుత్వం ఎప్పటికైనా ఆర్య సమాజా నికి లొంగక తప్పదు. 'ఆలస్యమైనా సరిగ్గానే జరుగుతుంది. (దేర్ ఆయద్ దురుస్త ఆయద్)

నేను జైలు నుంచి విడుదలై వచ్చిన తర్వాత దేవీదీన్‌బాగ్‌లో స్వాగతసభ ఏర్పాటు చేశారు. మరుసటి రోజు ఉదయం రైలులో షోలాపూర్ వెళ్లాను. ఆర్యజగత్తులో అందరి మన్ననలూ పొందిన నాయకులు, సత్యాగ్రహ ఉద్యమస్రష్ట భాయీ బంసీలాల్ వకీలుగారూ, సోదరి విద్యావతి, ఇంకా అనేక మంది కార్య కర్తలు నాకు స్వాగతం చెప్పడానికి స్టేషనుకు వచ్చారు. విజయోత్సాహంతో భాయీ బంసీ లాల్ నన్ను ఆలింగనం చేసుకొని, "శ్యామ్ లాల్ స్థానంలో నాకు మీరే అండ" అన్నారు. ఆయన అన్న ఈ మాటల్లో నిజానికాయన హృదయం ప్రతిభింబించింది. ఆర్య నత్యాగ్రహ విజయానికీ, తత్ఫలితంగా ఏర్పడిన ప్రసన్నతకూ చిహ్నంగా ఒక ఉపదేశిక విద్యాలయ స్థాపన జరిగింది. ఆర్య సమాజానికి చెందిన మహా పండితుడు, సాహిత్యకారుడు గంగాప్రసాద్ ఉపాధ్యాయ, త్యాగమూర్తి ధృవానంద శాస్త్రి, దర్శనాచార్య పండిత్ గోవదేవ్ విజ్ఞానాన్ని ఉపయో గించుకొని తెలంగాణా, మరఠ్వాడా, కర్నాటక ప్రాంతాలలో వైదిక ధర్మ ప్రచారాన్ని విస్తరించడం జరిగింది.

మూడాకుల కొమ్మ

హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ఆర్యసమాజం అతున్నత దశలో ఉన్న కాలమది. రాష్ట్ర మంతటా ఉత్సాహం పొంగి పొరలుతున్నది. కొంతకాలం వరకూ ఆర్యసమాజం వారి మార్గం అడ్డంకులు లేకుండా కొనసాగింది. అయితే నిజాం ప్రభుత్వపు మౌనం. మరో కొత్త తుఫాను సృష్టికి, మరో అత్యాచార పర్వానికి నాందిగా పరిణమించింది. ఆర్యసమాజం శక్తి దిన దిన ప్రవర్ధమానం కావడం నిజాం ప్రభుత్వానికి నచ్చలేదు. ప్రభుత్వం పక్షాన మరోసారి అత్యాచార, అనాచార పర్వం ప్రారంభమైంది. గ్రామ గ్రామాన ఆర్యులకు వ్యతిరేకంగా గుండాలు సమీకృతమయ్యారు. ఆర్య సమాజానికి చెందిన నవ యువకులు వారిని ధైర్యంగా ఎదిరించారు. గుండాలకు పోలీసుల సమర్థన సంపూర్ణంగా ఉండేది. ఫలితంగా హిందువు లనేక మంది అత్యాచారాలకు గురి కావలసి వచ్చింది. ఈ పోరాటంలో అనేక మంది నవయువకులు తమ ప్రాణాలను కూడా బలి ఇచ్చారు. గుంజోటిలో వేదప్రకాశ్‌జీ, నిజామా బాదులో రాధాకిషన్‌జీ, హుమ్నాబాదులో శివచంద్రజీ, ఆయన సహచరులు మరో ముగ్గురు. ఉమ్రీలో దత్తాత్రేయజీ అమరులై నారు. ఆర్య సమాజానికి వీరి బలిదానం వల్ల కలిగిన లోటు పూరించరానిది. ఆర్యసమాజం అనే ఆకాశంలో ఈ యువ నాయకులు జాజ్వల్యమానులైన నక్షత్రాల వంటివారు. వారి పట్ల ఆర్యసమాజం సదా గర్వపడేది. మొగలాయిల కాలంలో రాజపుత్రులు, సిక్కులు, మరాటీలు, హిందూ జాతి ధ్వజాన్ని వంగిపోకుండా నిలబెట్టటానికి తమ ప్రాణాలర్పించిన చారిత్రక ఘట్టం, హైదరా బాదు రాష్ట్రంలో నిజాం ప్రభుత్వపు పైశాచిక కృత్యాలను, సాహసోపేతంగా ఎదురొడ్డి నిలిచిన ఆర్యసమాజీయుల కారణంగా పునరావృతమైంది.

ఆక్రమణ

హైదరాబాదు రాష్ట్ర ప్రజానీకాన్ని జాగృతం చేసి, వారిలో రాజకీయ చైతన్యం కలిగించే ఉద్దేశంతో హైదరాబాదు రాష్ట్రానికి చెందిన మూడు ప్రాంతాల్లోనూ, ఆంధ్ర మహాసభ, మహారాష్ట్ర మహాసభ, కర్ణాటక పరిషత్తుల స్థాపన జరిగింది. ఈ మహాసభల ద్వారా, హైదరాబాదు రాష్ట్ర ప్రజానీకం ఎదుర్కొం టున్న అనేక సమస్యలను ప్రభుత్వ దృష్టికి తీసుకొనిరావడానికి ప్రయత్నం జరిగింది. హైదరాబాదు ఎడ్యుకేషనల్ కాన్ఫరెన్సు అనే మరో మహాసభ ద్వారా, మాతృభాషలో విద్యాబోధనావశ్యకతను ప్రభుత్వ దృష్టికి తేవడానికి పదే పదే ప్రయత్నం జరిగింది. అయితే హైదరాబాదు ప్రభుత్వం చెవికి ఇవేవీ ఎక్కలేదు. మందు వేసిన కొద్దీ రోగం పెరిగిపోయినట్లయింది.

రకరకాల కొత్త ప్రభుత్వ ఉత్తరువులు జారీ అయ్యాయి. ఉదాహరణకు ఉత్తరువు (గష్తీ) నెం. 53: వ్యాయామ శాలలూ ప్రయివేటు పాఠశాలలకు సంబంధించినది. ఈ పరిస్థి తుల్లో ప్రజల భావాలను శాంతియుతంగా వ్యక్తం చేయడానికి, కాన్ఫరెన్సులు మహాసభలను ప్రతి యేడూ, తెలంగాణాలోని ఏదో ఒక మారుమూల గ్రామంలో జరిపిం చడం పరిపాటి అయింది. మహబూబ్‌నగర్ జిల్లా జడ్చర్లలో శ్రీ జమలాపురం కేశవరావు గారి అధ్యక్షతన మహాసభ జరుగుతున్నది. అందులో పాల్గొనడానికి నేను కూడా జడ్చర్ల వెళ్లాను. ఒక రోజు సాయంకాలం నాలుగు గంటలకు నేనూ, మహబూబ్‌నగర్ జిల్లాకు చెందిన ప్రముఖ ఆర్య సమాజ నాయకులు శ్రీ సిద్ధి లింగప్ప గారూ కలిసి, మానసూరులో ఉన్నప్పుడు నా పర్యవేక్షణకై నియుక్తుడై ఉండిన పోలీసు ఇనస్పెక్టరు నిజాముద్దీన్ ఇంటికి తేనీటి విందుకు వెళ్లాం. తేనీరు

సేవించి తిరిగి మేం పెండాలు వైపుకు వస్తుండగా జద్చర్ల వైపు నుంచి ఒక మోటారు, మా మోటారును అతి వేగంగా దూసుకొని పోయింది. ఆ మోటారులో వెనుక సీటు మీద ఒక నవ యువకుడు కూర్చొని రివాల్వరును నాకు ఎక్కు పెట్టాడు. శ్రీ సిద్ధిలింగప్ప అతి చాకచక్యంతో మోటారును ముందు కురికించారు. ఫలితంగా నేనూ నా ఇద్దరు మిత్రులూ హత్యలకు గురికాకుండా తప్పించుకున్నాము.

మెదకు జిల్లా, జోగిపేట తాలూకాలోని టేక్మాల్ గ్రామంలో ఆర్యసమాజ స్థాపనకు సంబంధించి నేనూ, పండిత్ బుద్ధదేవ్, పండిత్ వినాయకరావు, జోగిపేట ఆర్య సమాజం అధ్యక్షులు శ్రీ బసవమాణయ్య గారితో కలిసి టేక్మాల్ చేరుకున్నాం. సాయంకాలం సభ జరగాల్సి వుంది. అక్కడి కొందరు ముస్లిములు విచ్చు కత్తులతోనూ, తుపాకులతోనూ లాఠీలతోనూ పెద్ద ఊరేగింపు తీశారు. గ్రామంలో భయాందోళనలు వ్యాపించాయి. ఆర్యసమాజ స్థాపన జరుగలేదు. మేమంతా తిరిగి హైదరాబాదుకు ప్రయాణమయ్యాం. అయితే, ఎలాగైనా సరే, టేక్మాల్ వెళ్లి అక్కడ ఆర్యసమాజాన్ని స్థాపించి తీరాలన్న పట్టుదల నాలో పెరిగింది. తేదీ నిశ్చయమైంది. కారు మాట్లాడుకున్నాం. హైదరాబాదు నుంచి శ్రీ ఎస్. వెంకటస్వామి, అడ్వకేట్; గంగారామ్, అడ్వొకేట్; రాజిరెడ్డి, మాణిక్‌రావు, లక్ష్మీనారాయణ (కవాడిగూడ) నేనూ టేక్మాల్ చేరుకున్నాం. మరు రోజు ఉదయం జనాబ్ అబ్దుల్ హసన్ కైసర్ సాహెబ్‌ను వెంట బెట్టుకొని, ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్ టేక్మాల్ చేరుకొన్నారు. అక్కడ సాయుధులైన ముస్లిములనేక మంది దర్గా నాలుగు గోడల మధ్య చేరి ఉన్నారు. మెదకు జిల్లా పోలీసు సూపరింటెండెంటు శ్రీ చారిగారు గట్టి బందోబస్తు చేశారు. ఎలాంటి దుర్ఘటన జరుగలేదు.

పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్ కరకమలములచే, ఆర్యసమాజ స్థాపన జరిగింది. టేక్మాల్ సభానంతరం సహచరుల ఇష్టానుసారం నిజాంసాగర్‌ను సందర్శించే కార్యక్రమం రూపొందింది. తిరిగి వచ్చేటప్పుడు రాత్రయింది. నిజాంసాగర్ నుంచి పదిమైళ్ల దూరంలో ఒక కాలువలో దాక్కొని ఇద్దరు పఠాన్లు మా కారు మీద కాల్పులు జరిపారు. శ్రీ గంగారామ్ అడ్వొకేటుకు నడుం మీద తూటా దూసుకొనిపోయి రక్తని& రపవహించ సాగింది. మరో తుటా నా గాంధీ టోపీని తాకుతూ దూసుకొని పోయింది. శ్రీ వినాయకరావు గారు కూడా కారులోనే ఉన్నారు. ఈశ్వరుని కృపవల్ల మేమంతా ప్రాణాలను కాపాడుకొని బయటపడ గలిగాం.

నాగర్ కర్నూలులో ఆర్యసమాజాన్ని స్థాపించడానికి ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఉపదేశకులు, సిద్ధాంతరత్న శ్రీ సాంబమూర్తి గారు నాగర్ కర్నూలు చేరుకున్నారు. ఆర్య సమాజాన్ని స్థాపించి, వారు తిరిగి వస్తుండగా, తహసీలు కార్యాలయం కాపలాకు నియుక్తులైన అరబ్బులు అయనపై విచ్చుకత్తులతో దాడి జరిపారు. గాయపడి నాగర్ కర్నూలు ఆసుపత్రిలో ఆయన చేరారు. ఆయన గాయపడిన సంగతి తెలియగానే నేను నాగర్ కర్నూలు చేరుకున్నాను. సాంబమూర్తి గారిని ఆసుపత్రిలో పరామర్శించాను. గాయాలు చాలా తీవ్రంగా తగిలాయి. ఒక్కరోజు కోసం నేను అక్కడే మకాం వేశాను. నేను నివసిస్తున్న ఇంటిని రాత్రి పదకొండు గంటలకు అరబ్బులు చుట్టు ముట్టారు. తుపాకుల చప్పుళ్లకు భయపడి ఇరుగు పొరుగువాళ్లు ఎవరిళ్లలో వాళ్లుచడీ చప్పుడు లేకుండా భయంభయంగా దాక్కున్నారు. ఈ సంఘటన జరిగినప్పుడు నాతో బాటు ఒకే ఒక్క నవ యువకుడున్నాడు. రాత్రంతా హంగామా సాగుతూనే వున్నది. ఈ హంగామా విషయం మహబూబునగరులో ఉన్న సిద్ధి లింగప్ప గారికి తెలియగానే రాత్రి రెండు గంటల సమయానికాయన నాగర్ కర్నూలు చేరుకున్నారు. ఆయన నేనున్న ఇంటి వైపుకు వస్తుంటే అరబ్బులు ఆయనపై దాడి చేశారు. ఏదో విధంగా ఆయన తప్పించుకోగలిగారు. మరునాడు ఉదయం ఆయన నన్ను కలుసుకున్నప్పుడు ఈ విషయాలన్నీ తెలిశాయి. మేమిద్దరం ఆస్పత్రికి చేరి, సాంబమూర్తి గారిపై దాడిచేసిన వారి మీద చట్టప్రకారం చర్యకు పూనుకుంటామని చెప్పాం. ఆయన వద్దన్నారు. తర్వాత తెలిందేమంటే, సాంబమూర్తి గారు, అజ్ఞాత కమ్యూనిస్టనీ, అరబ్బుల మీద చర్య తీసుకోవడం ఆయన కిష్టం లేదనీ, ఇది వరకే ఏదో హత్యానేరంలో ఇరుక్కుని వున్నారనీ, అందువల్ల అరెస్టు నుండి తప్పించుకోవడానికి ఆర్యసమాజంలో ఆయన చేరారని తెలిసింది.

సమ్మేళనంలో గలభా : ఆర్య సత్యాగ్రహానంతరం, ప్రతి ఏడూ ఆర్య సమ్మేళనం జరపాలని సభవారు నిర్ణయించారు. ఈ నిర్ణయానుసారం 1942 నుంచీ సమ్మేళనాలు జరవడానికి ప్రయత్నాలు ప్రారంభమయ్యాయి. 1945 ఏప్రిల్ 22 వ తేదీన గుల్బర్గాలో సమ్మేళనం జరుగుతున్నది. ఈ సమ్మేళనానానికి రాజా నారాయణ్‌లాల్ పిత్తి గారు అధ్యక్షత వహిస్తున్నారు. మధ్య భారత్ స్పీకరు, ప్రముఖ ఆర్య సమాజ నాయకులు శ్రీ ఘనశ్యాంసింహ్ గుప్త గారు సమ్మేళనాన్ని ప్రారంభించ వలసి ఉంది. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ప్రసంగాలు చేయవద్దని గుప్త గారిని నిషేధించారు. హైదరాబాదు నగరం కదిలి వెళ్లరాదని నాకు కూడా నోటీసు జారీ చేశారు. ఈ నోటీసు నాకు గుల్బర్గాలో అందింది. వెంటనే ప్రభుత్వానికి నేను సమాధానం పంపించాను.

సమ్మేళనం చివరి రోజున, ఉత్సవం సమాప్తి కాబోతున్నప్పుడు సాయంకాలం 4 గంటల సమయంలో ఒక పోలీసు కానిస్టేబిలు పెండాలులోనికి వచ్చి బీడీ కాలుస్తున్నాడు. శ్రీ శివకుమార్ వెళ్లి, బీడీ తాగకూడదని ఆ కానిస్టేబిలును కోరాడు అతను వినలేదు సరికదా, గబగబా పోలీసు క్యాంపుకు వెళ్లి ఆర్య సమాజీయులు తనను చితరకొట్టారని మొరపెట్టుకున్నాడు. దీనితో ఇక పోలీసు బలగం వచ్చి పడింది. డి.ఎస్.పి. శ్రీ హరిచంద్రజీ, నా దగ్గరికి వచ్చి, మిమ్మల్ని ముగ్గుర్నీ కలెక్టరు గారు పిలుస్తున్నారన్నారు. ఆయన మాట విని పండిత్ వినాయకరావు, పండిత్ గణపత్‌రావు శాస్త్రి ఆయనతో వెళ్లారు. అక్కడికి వెళ్లగానే-వారు చూసిన దృశ్యం ఆశ్చర్యం కలిగించింది. యాభై మంది కానిస్టేబుల్స్ తుపాకులూ లాఠీలూ ధరించి యుద్ధానికి సిద్ధమై ఉన్నట్లున్నారు. రెండు మూడు నిమిషాలు మాట్లాడాలో లేదో

పోలీసులు మా మీద విరుచుకుపడ్డారు. హీరాలాల్‌జీ బాగా గాయపడ్డారు. శాస్త్రి గారి తలకు పెద్ద దెబ్బ తగిలింది. నా కాలు ఎముక విరిగిపోయింది. తలకు కూడా గాయం తగిలింది. గుల్బర్గా ఆసుపత్రిలో మమ్మల్నం దరినీ చేర్చుకొన్నారు. అయితే రావుగారి ప్రయత్నాల వల్ల, అప్పటి హైదరాబాదు ప్రధానమంత్రి రయీసుల్ముల్క్ బహాదుర్ నవాబ్ ఛత్తారీ గారి ఆజ్ఞమేరకు, అంబులెన్సు తెచ్చి, నన్ను ఉస్మానియా ఆస్పత్రిలో చేర్చారు. తలకు ఏడు కుట్లుపడ్డాయి. కాలి ఎముక విరిగిన చోట, మరో ఎముకను చేర్చి జోడించారు. ఒక నెలా 20 రోజుల పాటు ఉస్మానియా ఆసుపత్రిలో చికిత్స పూర్తి చేసుకొని ఇంటికి రాగానే గుల్బర్గాలో నాకందిన నోటీసును మరోసారి నాకు జారీ చేశారు. ఫలితంగా నేను ఒక ఏడాది పాటు హైదరాబాదు నగరంలో నిర్బంధితుణ్ణ య్యాను. నా మీద నిర్బంధాలు పెట్టడం, నన్ను అరెస్టు చేయడం మామూలైపోయింది. జైలు నాకు ఇల్లు లాగయిపోయింది. నిజాం ప్రభుత్వం దృష్టిలో నరేంద్రుడు "అవాంఛ నీయుడు, అనహనీయుడైన తిరుగు బాదారు"డై నాడు. ఇంటి దగ్గర ఉన్నా సి.ఐ.డీ.లు నీకలా నన్ను వెంటాడుతూనే వుండేవారు.

అత్యాచార పర్వం

హైదరాబాదు రాష్ట్రమంతటా భయం, అత్యాచారాలు, అన్యాయం, దుఃఖాల క్రమం ఆరంభమైంది. ఇత్తెహాదుల్ ముసల్మీన్ సంస్థ 'జెహాద్' నినాదం ఇచ్చింది. గ్రామగ్రామాన గుండాలు, హిందువులపై దాడికి సమాయత్త మైనారు. ఆర్య సమాజానికి చెందిన నవ యువకులు ధైర్యంగా గుండాలను ఎదుర్కోవ డానికి నడుం బిగించారు. ముస్లిం పోలీసు ఉన్నతాధికారులు గుండాలకు మద్దతు ఇస్తూ వుండటం వల్ల అనేక మంది, ఆర్య సమాజా నికి చెందిన నవ యువకులు వాళ్ల అత్యాచా రాలకు బలియై అమరవీరులయ్యారు. ఇది వరకే ఈ విషయం గురించి వ్రాయడం జరిగింది.

హైదరాబాదులోని ఆర్యసమాజ చరిత్రకు భారత చరిత్రలో కూడా స్థానం లభించింది. ఒక వైపు నిజాం ప్రభుత్వ శక్తి, మరోవైపు త్యాగ శీలరైన ధర్మవీరులు ఆర్యసమాజీయుల సాహసం. వైదిక సంస్కృతి పతాకాన్ని నిలుప డానికి చిరునవ్వులు చిందిస్తూ అసువులు బాసిన ఆర్య సమాజ వీరులనేక మంది స్మరణీయులైనారు.

గ్రామగ్రామాన దాడులు జరుగసాగాయి. బాజార్లు దోపిడీకి గురికాసాగాయి. స్త్రీల మానభంగాలు జరిగాయి. దేవాలయాలను పడగొట్టసాగారు. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో జరిగిన అత్యాచారాలు పశ్చిమ బెంగాలు, పాకిస్తాన్ ప్రాంతాల్లో జరిగిన అత్యాచారాల కన్నా అతిఘోరమైనవి. సహించరాని అవమానాలు పెచ్చు పెరిగి పోయిన తర్వాత, పిరికి తనంగా చావడంకన్నా వీరోచితంగా పోరాడటవే నయమని భావించి, ఈ సమస్యను ఎలా ఎదుర్కోవాలని, హైదరాబాదు రాష్ట్రానికి చెందిన రాజకీయ నాయకులు ఆలోచనలు ప్రారంభించారు.

స్వతంత్ర హైదరాబాద్ పోరాటం

1947లో భారతదేశానికి స్వాతంత్ర్యం ప్రాప్తించినప్పుడు, హైదరాబాదు నిజాంకు స్వతంత్ర్య హైదరాబాదు రాష్ట్రాన్ని రూపొం దించు కోవాలన్న దురాలోచన కలిగింది. మజ్లిసె ఇత్తెహాదుల్ ముసల్మీన్ సంస్థ రాష్ట్రమంతటా పెద్ద ఎత్తున ప్రచార కార్యక్రమం చేపట్టింది.

ఈ పోరాటానికి వ్యతిరేకంగా స్వామీ రామానంద తీర్థ నాయకత్వంలో కాంగ్రెసు పార్టీ సత్యాగ్రహ కార్యక్రమాన్ని చేపట్టింది. ఏడెనిమిది వేల మంది సత్యాగ్రహంలో పాల్గొన్నారు. నిజాం రాష్ట్రంలోని జైళ్లన్నీ నిండుకున్నాయి. హైదరాబాదు నగరంలో ప్రశాంతంగా ఉన్నట్లు, ఇతరులకు చూపించ డానికి నాటకమాడారు. జిల్లాల్లో రజాకార్లు సాగించిన అత్యాచారాలను వర్ణించాలంటే, గుండెలు అదరిపోవడమే కాదు, కళ్లల్లో నుంచి రక్తాశ్రువులు ప్రవహిస్తాయి. తన రాష్ట్రం స్వతంత్రంగా ఉండగలదని ప్రకటించడం ద్వారా నిజాం, నూతనంగా ఏర్పడిన ప్రభుత్వానికి ఒక నిగూఢ సమస్య తెచ్చిపెట్టాడు. రాష్ట్రంలోని నవ యువకులు రజాకార్లను ధైర్యసాహసాలతో ఎదిరించారు. కాంగ్రెసు పార్టీ వారు ప్రారంభించిన ఈ పోరాటంలో ఆర్య సమాజీయులు సదా ప్రథమ శ్రేణిలో వుండేవారు. సత్యగ్రహానికి ముందే నన్ను అరెస్టు చేసి, చంచల్‌గూడా సెంట్రల్ జైలులో నిర్బంధించారు. నేను అరెస్టయిన తర్వాత ఒక వారం రోజులకు కాంగ్రెసు సత్యాగ్రహ నాయకులు స్వామీ రామానందతీర్థ, డాక్టర్ మెల్కోటే, శ్రీ క్రిష్ణాచార్య జోషీ, అడ్వొకేట్ మొదలగువారు సుల్తాన్‌బజారులో సత్యాగ్రహం చేసి అరెస్టయ్యారు. వారిని జైలుకు తీసుకొని వచ్చారు.

తిరుమల్‌గిరి, బొల్లారంలలో ఉండిన తమ సైన్యాలను భారత ప్రభుత్వం వాపసు పిలుచుకుంది. దానితో నిజాం ప్రభుత్వానికి మరింత ధైర్యం వచ్చి పట్టపగ్గాలు లేకుండా పోయింది. రజాకార్ల అత్యాచారాలు దినదినం అధికం కాసాగాయి. ఎక్కడ చూసినా హత్యలూ, మానభంగాలూ, గృహదహనాల వార్తలు దావానలంలా వ్యాపించసాగాయి. ఆర్య సమాజానికి చెందిన నవ యువకులు ఆ సమయంలో మౌనంగా తమాషా చూస్తూ, చేతులు కట్టుకుని ఉండలేరు కదా ? నవ యువకులు సాయుధులైనారు. రజాకార్లను తరిమికొట్టారు.

శ్రీ శేషరావు వాఘమారె, అడ్వొకేట్ గారు, ప్రదర్శించిన ధైర్య సాహసం, వీరత్వం, బలిదానం హైదరాబాదు స్వాతంత్ర్య సంగ్రామ చరిత్రలో సువర్ణాక్షరాలతో లిఖించదగింది. నిష్ఠావంతుడైన ఆర్యసమాజ కర్మయోగి ఆయన, తన సంతానం-కొడుకులూ కూతుళ్ల పెళ్లిళ్లన్నింటినీ ఆయన కులాంతర వివాహాలు జరిపించారు. ఫలితంగా ఆయన బంధువర్గం నుంచీ, సంబంధీకుల నుంచీ దూర మయ్యారు.

విప్లవకారుడు నారాయణబాబు

నిజాం ప్రభుత్వపు అత్యాచారాలనూ, అనాచారాలనూ అంత మొందించడానికీ, భారత ప్రభుత్వానికి నిజాం చేసిన నమ్మక ద్రోహానికి శిక్ష విధించడానికి, తన ప్రాణాలను అరచేతిలో పెట్టుకొని నిజాం కారు మీద దాడి జరిపిన విప్లవకారుడైన యువకుని గురించి ఇక్కడ చెప్పితీరాలి. నిజాం మోటరు మీద ఆయన బాంబు విసిరాడు కాని గురి తప్పి నిజాం బ్రతికాడు. శ్రీ నారాయణరావ్ పావార్, బి.ఏ.ఎల్ఎల్.బి., శ్రీ గండయ్యలను

అరెస్టు చేసి కేసు నడిపించారు. ఈ ఉభయులకూ మరణ శిక్ష విధించారు. ఈ దాడిలో పాల్గొన్న మూడో యువకుడు జగదీశ్ తప్పించుకున్నాడు. శ్రీ గండయ్య, శ్రీ నారాయణ రావ్ పావర్ తమ యవ్వనాన్ని భారతమాత చరణ కమలాలకు అర్పించడం ఎంత గొప్ప బలిదానం ?

హైదరాబాదు రాష్ట్రమంతటా అత్యాచారాలు, భయానక పరిస్థితి తాండవిస్తున్నది. హైదరాబాదు నవాబు నిజాం, హైదరాబాదు రాష్ట్రాన్ని భారతదేశంలో విలీనం చెయ్యకుండా స్వతంత్రంగా ఉంచి, ఇస్లాం రాజ్యాంగా రూపొందిన్తున్నట్లు ఒక ఫర్మానాలో ప్రకటించారు. ఈ ప్రకటనతో హిందువులు కళ్లు తెరిచారు. భారత ప్రభుత్వం వారు, ఇదొక పెద్ద సవాలుగా, కుట్రగా భావించ సాగారు. హైదరాబాదు ప్రజలు మేలుకొన్నారు. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలోని విభిన్న అభిప్రాయాలు కలవారందరూ ఒక్క వేదికగా రూపొంది నిజాం ఫాసిస్టు ప్రభుత్వానికి వ్యతిరేకంగా పోరాటం సాగించాలని నిర్ణయించుకున్నారు.

అహింసా విధానానికి కట్టుబడివున్న హైదరాబాదు స్టేట్ కాంగ్రెసు సత్యాగ్రహం ప్రారంభించింది. అయితే నవయువకులమైన మేమందరమూ, ఏ ఏ గ్రామాల్లోనైతే రజాకార్లు హిందువులపైన అత్యాచారాలు జరుపుతున్నారో, నిజాం ప్రభుత్వపు మద్దతును పరోక్షంగా పొంది, రజాకార్లు హిందువులను ఘోరమైన హింసలకు గురిచేస్తున్నారో అలాంటి చోట్ల నిజాం రాజూ-కాశిం రజ్వీల కలలు నఫలం కాకుండా చేయడానికి రజాకార్లను ఎదురొడ్డి పోరాడాలన్న విప్లవపంథానే చేపట్టాం.

ఈ సంకల్పానికి రూపం ఇచ్చేందుకుగాను నా మనస్సులో రకరకాల ఆలోచనలు చెలరేగుతూ వుండేవి. నెలల తరబడి ఆలోచనల్లో మునిగితేలాను. 1942లో 'క్విట్ ఇండియా' ఉద్యమంలో శ్రీ నానాపాటిల్ ఎటువంటి పాత్ర వహించారో, దేనివల్ల ఆంగ్ల ప్రభుత్వానికి ప్రమాదం ఏర్పడి గడగడలాడిపోయిందో అటువంటి పాత్ర వహించడానికి ఆయన్ను సంప్రదించాలని నిర్ణయించుకున్నాను. నేనూ, శ్రీ గోపాల్‌దేవ్ కల్యాణీ, నానాపాటిల్ దగ్గరికి వెళ్ళాము.

హైదరాబాదు పరిస్థితి గురించి నానాపాటిల్‌తో మేము ఉభయులమూ సుదీర్ఘంగా చర్చించాం. పరిస్థితుల నన్నింటినీ నిషేదించి తమ అనుభవాల దృష్ట్యా, మేం, ఏం చేస్తే బాగుంటుందో మాకు సరైన సలహా ఇవ్వండని కోరాము. నానాపాటిల్ కిర్లోస్కర్ వాడీ దగ్గర ఒక పల్లెటూరులో ఉంటుండే వారు. 'పతరీ సర్కార్' అనే పేరుతో ఆయనొక సంస్థను స్థాపించారు. రెండు రోజుల పాటు ఆయనతో మా సంప్రదింపులు కొనసాగాయి. విప్లవ మార్గాలను గురించి మాకు నానా సాహెబ్ విపులంగా వివరించారు. అయితే ఈ పనులను చేయడానికి చాలా సాహసం, ధైర్యంతో బాటు జాగ్రత్త కూడా అవసరమని మాకాయన హెచ్చరించారు. ఆయన అనుభవైక విద్యను అలవరచుకొని, ఈ రోజుల్లో శివాజీనగర్‌గా పేరొందిన, ఖడ్కీ అనే చోటికి చేరుకున్నాం. అక్కడికి, హైదరాబాదు నగరానికి చెందిన శ్రీ రాజిరెడ్డి (గన్‌ఫౌండ్రి), శ్రీ మాణిక్‌రావు (అగాపురా) ఒకరోజు ముందే వచ్చిచేరారు. అక్కడ ఉన్న ఒక సైనికాధికారి సహాయంతో ఆరు చేతి బాంబులను సంపాదించుకొని హైదరాబాదు నగరానికి తిరిగివచ్చాం. వీటిని పళ్లబుట్టల్లో దాచుకొని తెచ్చాం. మమ్మల్ని తీసుకోవడానికి శ్రీ దేవయ్య ఆర్య గారి మోటారు బేగంపేట స్టేషన్‌లో వేచివున్నది. అందులో కూర్చొని మేం నేరుగా సుల్తాన్ బజార్ ఆర్యసమాజ కార్యాలయం చేరుకున్నాము. అంతకు ముందు నిర్ణయించుకున్న కార్యక్రమం ప్రకారం నాలుగు బాంబుల్ని మహారాష్ట్రకు పంపించాము. మిగతా రెండు బాంబులను సుల్తాన్ బజారు ఆర్యసమాజం కార్యాలయంలో నా గదిలోనే భద్రపరిచాము. వీటిని ప్రయోగించక ముందే సి.ఐ.డి. ఇనస్పెక్టర్ శ్రీ ధరణీప్రసాద్ వాజపాయీ నన్ను అరెస్టు చేశారు. ఆర్య సమాజంలో అప్పుడు సేవకుడుగా పని చేస్తున్న శ్రీ తులసీరాం, నేను పట్టుబడిన తర్వాత, శ్రీ నారాయణరావు పావర్, బి.ఏ.ఎలెల్.బి. (ప్రాణాలను అరచేతిలో పెట్టుకొని నిజాం కారుమీద బాంబువేసిన వీరుడు) కి, నా గదిలో భద్రంగా దాచివుంచిన రెండు బాంబులను అప్పగించాడు. నిజాం మీద విసరడానికివి పనికి వచ్చాయి. హైదరాబాదు రాష్ట్ర ప్రజల దురదృష్టం వల్ల నిజాం బ్రతికి బయటపడ్డాడు. శ్రీ నారాయణరావుకు ఉరిశిక్ష పడింది. కాని ఆయన్ను ఉరితియ్యలేదు. నిజాం కాలంలో ఉరిశిక్షలు పడ్డా-ఎవరినీ ఉరితియ్యలేదు. నిజాం కాలంలో ఉరిశిక్షలు పడ్డా-ఎవరినీ ఉరితీసేవారు కాదు. నిజాం రాజు, ఉరిశిక్షను, యావజ్జీవ కారాగార శిక్షగా మార్చేవారు.

హైదరాబాదుకు చెందిన నవ యువకులం-మేము ఈ విప్లవ మార్గం అనుసరించడానికి కారణం స్వామీ దయానంద సరస్వతి పట్ల మాకున్న భక్తిశ్రద్ధలే-1857 విప్లవ కాలంలో ఆయన నర్మదా నదీ తీరంలో తిరుగుతూ పరోక్షంగా విప్లవకారులను ప్రోత్సహించిన ఘట్టం మా మనస్సుల్లో మెదిలింది.

స్వతంత్ర హైదరాబాదు పోరాటం

స్వతంత్ర్య హైదరాబాదు పోరాటం చరమదశకు చేరింది. దేశంలో ముస్లింలీగు ఏ పని చేస్తూ వుండేదో హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో మజ్లి సె ఇత్తెహాదుల్ ముసల్మీన్ సంస్థ అదే పని చేయసాగింది. ఆంగ్లేయ ప్రభువులు తమ లక్ష్యసాధన కోసం 'విభజించి పాలించు' అనే సూత్రాన్ని అనుసరించి ద్విజాతి సిద్ధాంతాన్ని పెంచి పోషించారు. దేశవిభజన తర్వాత కూడా ఆ భావన అంతం కాలేదు. ముస్లిముల్లో ఈ భావన నాటుకొనిపోయింది. ఈ భావనతోనే మజ్లిస్ ఇత్తెహాదుల్ ముసల్మీన్ సంస్థ ఆధ్వర్యంలో కొందరు ముస్లిములు, "మేం పాలకులం" అనే గర్వంతో, రాష్ట్రంలో అధిక సంఖ్యాకులుగా ఉన్న హిందువులపై అత్యాచారాలు సాగించడం ప్రారంభించారు. ఈ ప్రాంతీయ ముస్లిం సంస్థ తర్కం ఏమిటంటే-హైదరాబాదు రాష్ట్రం-ఇస్లాం రాష్ట్రమని. ఈ రాష్ట్రం ప్రభువు ముస్లిం. మత సంబంధమైన ఈ బాంధవ్యం వల్ల ముస్లిములకు అధికారం హస్తగతం చేసుకునే హక్కున్నది. రాష్ట్రానికి రాజకీయాధిపత్యం నిజాం వ్యక్తిగతమైనదే కాక, అది ముస్లిములకు ప్రాతినిధ్యం వహించినందుకే లభించిందని వారి వాదం. హైదరాబాదు రాష్ట్రం

దక్షిణాది నడిబొడ్డున ఉండి పాకిస్తాన్ పాలకుల ఉద్దేశానికి అనుగుణంగా వ్యవహరించాలనే దూర దృష్టితో ఈ పోరాటాన్ని కొనసాగించారు. అందువల్లనే ఈ పోరాటానికి ముస్లింలీగు సహాయసహకారాలు అందాయి. హైద్రాబాదు రాష్ట్రంలో హిందువుల జనభా 86% ఉండేది. కాశ్మీరు విషయం వచ్చేసరికి, రాజు హిందువైనా ముస్లిముల జనాభా అధికంగా వున్నదని ముస్లింలీగు వాదించింది. రాజు హిందువైనంత మాత్రాన దానిని హిందూరాజ్యం అనడానికి వీల్లేదనే వారు. బ్రిటిష్ రాజనీతిని అనుసరించి, హైదరాబాదులో ఆర్యసమాజాన్ని ముస్లింలీగు తమ శత్రువుగా భావించేది. ఎందుకంటే ఇస్లాం మతంలోకి పరివర్తన (తబ్లీగ్) సమయం నుంచి, స్వతంత్ర హైదరాబాదు పోరాటం వరకు ఇస్లాం మత మౌఢ్య నాయకత్వాన్ని గట్టిగా ఎదిరిస్తూ వచ్చిన సంస్థ ఆర్య సమాజమే. దీని తర్వాత జరిగిన సంఘటనలను గురించి, నా జీవిత జ్ఞాపకాల్లో, రాజకీయ దృక్పథంలో ప్రజాసేవా కార్యక్రమాల గురించి వివరిస్తాను. పురాతన జ్ఞాపకాల ఈ వరుసలో మరో నాలుగైదు, ప్రధానమైన చారిత్రాత్మకమైన సంఘటనలను వివరించి ఈ రామ కథను ముగిస్తాను.

హిందీ ఆందోళణ:ఇతర ఉద్యమాలు

పంజాబ్ ప్రభుత్వం అకాలీల ప్రభావంతో ఉండేది. అయితే పంజాబ్ ముఖ్యమంత్రిగా కాంగ్రెసు పార్టీ ఎన్నుకున్న శ్రీ ప్రతాప్‌సింగ్ కైరాన్, శ్రీ భీమ్‌సేన్ సచ్చర్ ఫార్ములాను ఆమోదించి గురుముఖి లిపిలో పంజాబీతో బాటు హిందీ భాషను కూడా పాఠశాలల్లో విధిగా నేర్చుకావాలని చట్టం చేశారు. ఇదివరకటి పంజాబ్ రాష్ట్రంలో సిక్కులకన్నా హిందువులే అధిక సంఖ్యలో ఉన్నప్పటికీ పంజాబీ భాషకు ప్రథమ స్థానం ఇచ్చి, హిందీ భాషకు ద్వితీయ స్థానం ఇవ్వ సంకల్పించారు. హిందీ మీడియం పాఠశాలలనూ కళాశాలలనూ, పంజాబీ మీడియం పాఠశాలలుగానూ కళాశాలలుగానూ కళాశాలలనూ, మార్చాలని ఒత్తిడి ప్రారంభించారు. ఆ సమయంలో హిందీ భాషను రక్షించడానికీ, హిందువుల అధికారాన్ని రక్షించడానికీ 1958లో ఆర్యసమాజం పక్షాన, శ్రీ ఘనశ్యామ్‌సింగ్ గుప్తగారి నాయకత్వంలో 'హిందీ ఆందోళన' ప్రారంభించాల్సి వచ్చింది. సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఢిల్లీ పక్షాన ఈ ఆందోళనా కార్యక్రమం రూపొందింది. భారతదేశం నలుమూలల నుంచీ దాదాపు 32 వేల మంది కార్యకర్తలు వచ్చి సత్యాగ్రహం జరిపి అరెస్టయ్యారు. ప్రతాప్‌సింగ్ కైరాన్ ప్రభుత్వం జరిపిన అత్యాచారాలను తలచుకుంటే ఈ నాటికీ గుండె జలదరిస్తుంది. శ్రీ సుమేర్ సింగ్, ఫరిబిజ్‌పూర్ జైలులో మరణించారు. సత్యాగ్రహులపై అత్యాచారాలు ప్రారంభమయ్యాయి. ప్రథమ సత్యాగ్రహోద్యమ డిక్టేటరుగా ఉండిన శ్రీ పూజ్యస్వామీ ఆత్మానందజీ మహారాజ్ గారు నన్ను ఢిల్లీకి రావలసిందిగానూ, సత్యాగ్రహపోరాట సమితికి తాత్కాలిక అధ్యక్ష పదవిని అలంకరించి, ఉద్యమాన్ని కొనసాగించవలసిందిగానూ ఆదేశించారు. స్వామీజీ ఆజ్ఞ మేరకు నేను ఢిల్లీ చేరుకున్నాను. శ్రీ ఘనశ్యామ్‌సింగ్ గుప్త గారి ఆదేశాల మేరకు సత్యాగ్రహ పోరాటానికి నాయకత్వం వహించాను.

హైదరాబాదుకు చెందిన ఆర్య సమాజీయులు కూడా పెద్ద సంఖ్యలో ఈ ఉద్యమంలో పాల్గొన్నారు. శ్రీ మున్నాలాల్ మిశ్రా, స్వర్గీయ శ్రీ దత్తాత్రేయప్రసాద్, అడ్వొకేట్; శ్రీ శేషరావ్‌వాఘ్‌మారే, అడొకేట్; శ్రీ వరదేవ్‌జీ (పర్లీ), శ్రీ జ్ఞానేంద్రశర్మ (ఔరంగాబాద్) శ్రీ హరిశ్చంద్ర గురూజీ (ఔరాద్-గుంజోటి); శ్రీమతి ప్రభావతీదేవి, శ్రీమతి కమలాదేవి, శ్రీమతి మదాలసాదేవి (కల్యాణి) వంటి పేర్లు చెప్పుకోదగినవి. సత్యాగ్రహోద్యమం ప్రభావం ఎంతో బాగా పెరిగి ఉత్సాహం వెల్లివిరిసిందనడానికి రుజువుగా, అప్పటి ప్రధానమంత్రి పండిత్ జవాహర్‌లాల్ నెహ్రూ, కేంద్ర విద్యామంత్రి మౌలానా అబుల్ కలామ్ అజాద్, దేశీయాంగ శాఖామంత్రి పండిత్ గోవిందవల్లభ పంత్, మొదలైన వారు-పండిత్ ఇంద్రజీ విద్యావాచస్పతి, శ్రీ ఘనశ్యామ్‌సింహ్ గుప్తగార్లతో సంప్రదింపులకు అంగీకరించారు. ఈ ఇద్దరు ఆర్య సమాజ నాయకులతో బాటు దేశీయాంగ శాఖామంత్రి శ్రీ గోవింద వల్లభపంత్‌ను కలుసుకోవడానికి నేను కూడా ఆయన ఇంటికి వెళ్లాను. రెండు గంటల సేపు చర్చలు జరిగాయి. సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభవారి డిమాండ్లలో, అధిక భాగం పంజాబ్ ప్రభుత్వం చేత ఒప్పించగలమని, విశ్వసనీయమైన హామీని, ఆయన మాకిచ్చిన తర్వాత ఉద్యమాన్ని నిలిపివేశాము. కాని శ్రీ గోవిందవల్లభపంత్ వంటి రాజకీయ నాయకుడు ప్రతాప్‌సింగ్ కైరాన్ బెదిరింపులకు లొంగి తన వాగ్దానాన్ని నెరవేర్చలేక పోయారు:

శ్రీ సచ్చార్ ఫార్ములా ఫలితంగా ఆరువేల మంది హిందీ అధ్యాపకులు ఉద్యోగాలు కోల్పోయారు. పంజాబీ భాషను విధిగా అభ్యసించాల్సి వచ్చింది. ఈ సత్యాగ్రహోద్యమాన్ని విజయవంతం చేసిన నాయకుల్లో లాలారామ్‌గోపాల్‌జీ శాల్‌వాలే, పండిత్ ప్రకాశ్‌వీర శాస్త్రి, పండిత్ శివకుమార్ శాస్త్రి, శ్రీ రఘువీర్ సింహ్, స్వామీ ఓమానంద్, శ్రీ ఓం ప్రకాశ్ పురుషార్థీ మొదలగు వారి పేర్లు చెప్పుకోవలసినవి.

హిందీ ఆందోళన ఫలితం

అకాలీల హైందవ వ్యతిరేక ధోరణికి హిందువులు భయపడకుండా, వారిలో ధైర్యసాహసాలను కల్పించడంలో ఈ ఉద్యమం సఫలీకృతమైంది. ఒక వేదికపై సమీకృతమై తమ హక్కులకోసం పోరాడాలన్న సంకల్పం హిందువులకు కలిగింది. ఆర్య సమాజం ముందుకు వచ్చి, పంజాబ్ రాష్ట్రంలోని హిందువుల హక్కుల రక్షణ కోసం చొరవ తీసుకొని ఉండక పోయినట్లయితే అకాలీల హైందవ వ్యతిరేక ధోరణికి లొంగిపోయి, ఆ రాష్ట్రంలో వారు రెండవ శ్రేణి నాగరికులుగా మారిపోయేవారు. ఈనాడు పంజాబ్ రాష్ట్రంలో హిందువులు సగర్వంగా, ఆత్మగౌరవంతో జీవితం గడుపుతున్నారంటే దానికి కారణం, ఆర్యసమాజమే. పంజాబ్‌లో హిందువుల జీవితంలో ఆర్యసమాజం అంతర్భాగం అయిపోయింది. అకాలీ ప్రభుత్వం గానీ కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం గానీ, ఆర్యసమాజాన్ని రెచ్చగొట్టడం అంటే పులిని రెచ్చగొట్టినట్లేనని భావించే స్థితి వచ్చింది. ఈ ఉద్యమంలో రాత్రింబగళ్లు ఏకం చేసి, నేను వహించిన పాత్ర ఆర్య జగత్తుకు సుపరిచితం. ఆ రోజుల్లో నేను పండిత్ వినాయకరావు

విద్యాలంకార్ గారికి వ్రాసిన లేఖలోని కొన్ని అంశాలను ఇక్కడ పొందుపరుస్తున్నాను.

"ప్రజాస్వామ్య ప్రభుత్వంలో సత్యాగ్రహాలు నిరాధారమైనవన్న మీ అభిప్రాయంతో కూడా నేను ఏకీభవిస్తున్నాను. అయితే ప్రభుత్వానికి నచ్చచెప్పడానికీ, న్యాయమైన కోర్కెలను ప్రభుత్వం చేత అంగీకరింప చేయడానికీ, రాజ్యాంగబద్ధంగా ఉన్న సాధనాలన్నీ విఫలమై పోయినప్పుడు, అనుసరించవలసిన మరో మార్గం ఏదైనా ఉన్నదా?"

"మెజారిటీ నిర్ణయం సదాసత్యమైన నిర్ణయమే అయితీర గలదన్న అభిప్రాయాన్ని నేను ఏ మాత్రం అంగీకరించలేక పోతు న్నాను. పార్టీ విధానాలను స్థిరంగా ఉంచడా నికి మెజారిటీ అప్పుడప్పుడు వ్యతిరేకంగా వెళ్లే అవకాశం కూడా ఉన్నది. వెళ్లవచ్చు. అలాగే మైనారిటీ వర్గం సదా అసత్యం పైనే స్వారీ చేయగలదన్న వాదాన్ని కూడా నేను అంగీకరించను. ఈ అభిప్రాయం అంగీక రించబడుతూనే వుంటుంది. మైనారిటీ కోర్కెలను అంగీకరించక తిరస్కరిస్తూ ఉండటం కూడా జరుగుతుంది. ఈ పద్ధతి కొనసాగినంత కాలం సత్యాగ్రహ పద్ధతిని అనుసరించక తప్పదు."

ప్రజాస్వామ్య వ్యవస్థలో ప్రతిపక్షం అవసరం. పరిపాలనా యంత్రాంగం "సరిగ్గా నడవకపోతే ప్రజలు జాగ్రత్త వహించవలసి ఉంటుంది. అవసరం వచ్చినప్పుడు అన్యా యాలనూ, అక్రమాలనూ, అత్యాచారాలనూ ఎదిరించడానికి ప్రజలు నడుం కట్టవలసి ఉంటుంది. ఎన్నికల పద్ధతిలో పార్టీ స్వామ్యం ఉన్నంతకాలం. ఎన్నికల్లో ఎన్నికైన శాసన సభ్యుడు లేదా పార్లమెంటు సభ్యుడు తన పార్టీకి విధేయుడైపోయి, పార్టీ విధానాలకు కట్టుబడి పోయినంత కాలం, ప్రజల సమస్యలను, ప్రజలు నేరుగా తమ ప్రతినిధి ద్వారా శాసన సభల్లోనూ విధానసభల్లోనూ వినిపించే హక్కు పొందనంత కాలం, ప్రజలు తమకు తాముగా ఆందోళనకు ఉపక్రమించే హక్కు ప్రజా స్వామ్య వ్యవస్థలో ప్రజలకు మౌలిక హక్కుగా లభించి తీరవలసిందే"

గోరక్షా ఉద్యమం

1966లో పూరీకి చెందిన జగద్గురు శంకరాచార్య నాయకత్వంలో గోరక్షా ఉద్యమం కొనసాగింది. 5 లక్షల మంది ప్రజలు చారిత్రాత్మకమైన ఊరేగింపు జరిపి లోక్‌సభ ముందు చేరారు. అక్కడ ప్రధాన మంత్రికీ, దేశీయాంగ శాఖామంత్రి శ్రీ గుల్జారీలాల్ నందా గారికీ గోరక్షా నియమావళిని రూపొందించాలని కోరుతూ ఒక విజ్ఞాపన పత్రం సమర్పించారు. ఈ ఉద్యమాన్ని అణచివేయడానికి కేంద్ర ప్రభుత్వం తన శక్తియుక్తులను వినియోగించడం ప్రారంభిం చింది. సత్యాగ్రహోద్యమం ఉధృతం కాసాగింది. వేలాది మంది ఆర్య సమాజీ యులు సత్యాగ్రహంలో పాల్గొన్నారు. 1968 లో హైదరాబాదులో జరిగిన గోరక్షా సమ్మేళనానికి పూరీ జగద్గురు శంకరాచార్య అధ్యక్షత వహించారు. తమ అధ్యక్షోప న్యాసంలో ఆయన "గోరక్షా ఉద్యమంలో ఆర్యసమాజం అందించిన అండదండలకు గాను నేను ఆర్య సమాజానికి జీవితాంతం కృతజ్ఞునిగా ఉంటాను." అని అన్నారు. ఈ ఉద్యమంలో 21 మంది గోభక్తులు అమరు లయ్యారు. అధికారంలో ఉన్న ప్రభుత్వం సాగించిన అత్యాచారాలూ, నిర్బంధాలూ, దెబ్బలకు ఓర్చి, దేశం నలుమూలల నుంచీ వేలాది మంది ఢిల్లీ, చేరుకోవడం, సత్యాగ్రహం చేసి అరెస్టు కావడం నిరాటంకంగా సాగిపోయింది. ఇలాంటి సందర్భంలో మౌనంగా చూస్తూ వుండటం నా స్వభావానికి భిన్నమైనది. అప్పుడు నేను ఢిల్లీ వెళ్లాను. ఢిల్లీలో 112 మంది సత్యాగ్రహులతో బాటు చాందినీ చౌక్ దగ్గర, వేలాది మంది ఆర్య సమాజీయులు, ప్రజల సమక్షంలో సత్యా గ్రహం చేసి అరెస్టయ్యాను. మా అందరినీ తిహార్ జైలుకు పంపారు. మెజిస్ట్రేటు మాకు ఒక్కొక నెల కారాగార శిక్ష విధించారు. హైదరాబాదు నుంచి శ్రీ మున్నాలాల్ మిశ్ర, శ్రీ గోపాలదేవ్‌శాస్త్రి, శ్రీ సోహన్‌లాల్ వానప్రస్థీ, శ్రీ బంసీలాల్ గార్లతో బాటు, జాల్నా, గుల్బర్గాల నుంచి అనేక మంది ఆర్యసమాజీయులు ఈ ఉద్యమంలో పాల్గొన్నారు. శ్రీ కరపాత్రీజీ స్వామీ గారి అసమర్థ నాయకత్వం ఫలితంగా ఈ ఉద్యమం విజయద్వారం దగ్గరికి చేరుకొనక ముందే ప్రభుత్వపు ద్రోహబుద్ధికి బలి అయిపోయింది.

సంయోజక పదవీ బాధ్యత

ఉత్తరప్రదేశ్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ పక్షాన 1960 లో మధురాలో దయానంద దీక్షా శతాబ్ది ఉత్సవాలు జరపాలని నిర్ణయించారు. దాన్ని నిర్వహించే సంపూర్ణ బాధ్యతను, స్వాగతాధ్యక్షి పదవినీ అప్పగించి నాభుజ స్కంధాల మీదవేశారు. ఔరంగాబాదుకు చెందిన శ్రీ జ్ఞానేంద్ర శర్మతో బాటు మధుర చేరుకొని ఉత్సవాల ఏర్పాట్లలో నిమగ్న మయ్యాను. భారత ప్రథమ రాష్ట్రపతి, అజాతశత్రువు బాబూ రాజేంద్ర ప్రసాద్ గారు దయానంద దీక్షాశతాబ్ది ఉత్సవాలకు ప్రారంభోత్సవం చేశారు. ఈ సందర్భంగా దాదాపు రెండు లక్షల మంది ఆర్య సమాజీయులు సమావేశమయ్యారు. ఈ శతాబ్ది ఉత్సవాల ఏర్పాట్లకు సంబంధించి నేను-చేసిన పనులు ఆర్య సమాజీయులను సంతృప్తి పరచి ఉంటాయి. అప్పటి నుంచీ సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభపక్షాన ఏ ఉత్సవం తలపెట్టినా ఏర్పాట్లు చేసే బాధ్యతను నాకే అప్పగించడం ప్రారంభించారు. 1972లో జరిగిన అలవర్ మహాసభలకూ, 1973 లో జరిగిన మారిషస్ ఆర్య సమ్మేళనానికి, 1975 లో ఢిల్లీలో జరిగిన ఆర్య సమాజ శతాబ్ది ఉత్సవాలకు సంయో జకునిగా నన్నే నియమించారు.

ఒక దుర్ఘటన

తాండూరు నుంచి చించోలీ వెళ్లే రోడ్డు మీద ఒక చిన్న గ్రామం కోతల్లాపూర్ అనేది ఉన్నది. అక్కడొక దేవీ మందిరం కూడా ఉన్నది. ప్రతి ఏటా అక్కడ జాతర జరుగు తుంది. ఈ మందిరం నలువైపులా నాలుగైదు ధర్మగుండాలున్నాయి. ఈ ధర్మగుండాలలోని నీరు త్రాగినందుకు ఓసారి దాదాపు వెయ్యి మంది మరణించారు. పరీక్షల ద్వారా ఆ గుండంలోని నీళ్లలో విషం కలిసిందని తేలింది. ఈ నీరు విషమయం కావడానికి ప్రకృతి సిద్ధమైన మార్పులే కారణమా, లేక ఎవరైనా సంఘద్రోహులు ఈ పని చేశారా అనేది చెప్పడం కష్టం. ఆ రోజుల్లో హైదరాబాదు నగరంలో హిందూముస్లిం తగాదాలు ఉధృతంగా జరిగాయి. ఈ దుర్ఘటన వార్త తెలియగానే నేనూ, స్వామీ అభయానందజీ తాండూరు వెళ్లాము. బొంబాయి, గుల్బర్గాల నుంచి కూడా

ఆర్యసమాజీయులు అక్కడికి చేరారు. ఒక నెల రోజుల పాటు మేమందరమూ సేవా సహాయక శిబిరాలు నెలకొల్పి పని చేశాం. ఆ నీరు త్రాగినందు వల్ల, రోగగ్రస్థులైపోయిన వేలాది మందికి టీకాలు వేయించాం. శవాలకు దహన సంస్కారాలు జరిపించాము. ఆర్యసమాజం రంగంలోనికి దిగి ఈ సేవా కార్యక్రమాలను చేపట్టి ఉండక పోయి నట్లయితే బహుశా పరిస్థితి మరింత విషమించి ఉండేదేమో !

మతం మార్పిడి నిరోధం

మజ్లిసె ఇత్తెహాదుల్ ముసల్మీన్ అధ్యక్షులు నవాబ్ బహాదుర్ యార్‌జంగ్, హైదరాబాదు రాష్ట్రంలోని తమ సంస్థ శాక లన్నింటికీ ఒక రహస్య సర్క్యులర్ పంపించారు. పేద హరిజనులను పెద్ద ఎత్తున ఇస్లాంమతంలోనికి మార్చాలనీ, అయితే యీ మతం మార్పిదు లను గురించి ప్రచారం మాత్రం చేయవద్దని యీ సర్క్యులర్‌లో ఆయన సూచించారు. స్వర్గీయ బి. వెంకటస్వామి ప్రయత్నాల వల్ల ఈ సర్క్యులర్ ప్రతి ఒక్కటి మాకు చిక్కింది. ఈ విషయం హైదరాబాదులోని ప్రముఖ నాయకులు పండిత్ వామన్‌నాయక్ గారికి తెలియగానే ఆయన, ఆర్యసమాజ్ నాయ కులు శ్రీ చందులాల్‌కు విషయం వివరిం చారు. ముస్లిములుగా మారిన హరిజనులకు శుద్ధి కార్యక్రమం చేపట్టాలని నిర్ణయమైంది. స్వర్గీయ శంకరరెడ్డి, శ్రీ బల్దేవ్ పతంగేలతో బాటు యీ కార్యభారం నాకు కూడా అప్పగించబడింది. నేను మిర్యాలగూడ, సూర్యాపేట, దేవరకదర, దేవరకొండ, పరకాల, వరంగల్, బాబాసాహెబ్‌పేట్ (బావుసాపేట) గ్రామాలను సందర్శించి, ఇస్లాం మతం పుచ్చుకున్న దాదాపు పదివేల మంది హరిజనులను శుద్ధిచేసి, తిరిగి వారిని హిందూమతంలోకి మార్చాను. యీ శుద్ధి కార్యక్రమంలో ఆ రోజుల్లో నాకు ఎదురైన ఇబ్బందులనూ అడ్డంకులనూ ఈనాడు తలచుకుంటే అంతా ఒక చమత్కారంగా తోస్తున్నది. శుద్ధి కార్యక్రమం విజయవంతం అవుతూవుండటాన్ని చూసిన నవాబ్ బహాదుర్ యార్‌జంగ్, దారుస్సలాం వార్షిక మహాసభలో ప్రసంగిస్తూ "జానెడంత పొట్టివాడు-నరేందర్-నా కృషినంతా క్షణంలో మట్టిపాలు చేయగలిగాడు- మీరంతా చేతులు కట్టుకుని కళ్ళప్పగించి చూస్తూన్నారు. ఈ విశాలమైన మహాసభలో ఒక్కరైనా ఇటువంటి వ్యక్తి లేదా......" ఈ వాక్యాలలో అతని ఉద్దేశమే మిటో మీరంతా గ్రహించవచ్చు. అయినా ఈశ్వరుని కృపవల్ల నేనింకా బ్రతికే వున్నాను.

ఆర్య సమాజం ఉనికిని ఈ ధరాతలం నుంచి పెరికి పారేస్తాం అని ప్రగల్భాలు పలికిన ఉస్మాన్ అలీఖాన్, ఆయనను సమర్థించిన నవాబ్ బహాదుర్ యార్ జంగ్ యీ ప్రపంచం నుంచి వెళ్లిపోయారు. వారి పేరూ ఊరూ ఏమీ మిగలలేదు. కాని ఆర్యసమాజపు 'ఓం' పతాకం యీ నాటికీ ఆకాశంలో భవ్యంగా ఎగురుతూనే ఉన్నది. యుగయుగాల వరకూ ఎగురుతూనే ఉండ గలదు. పుష్పాల సువాసనలా ఆర్యసమాజం విశ్వమంతటా వ్యాపించింది.

నిర్బంధంలో ఉండి సాక్ష్యమిచ్చిన సంఘటన

హైదరాబాదు నగరంలో ధూల్‌పేట ప్రాంతంలో సంభవించిన హిందూ-ముస్లిం తగాదా సందర్భంగా 21 మంది ఆర్య సమాజీయుల్ని అరెస్టు చేసి కేసు నడిపించారు. అరెస్టు చేసిన వారిలో స్వర్గీయ ఠాకూర్ ఉగ్రమావ్‌సింగ్, పండిత్ సోహన్‌లాల్ గార్లు కూడా ఉన్నారు. శ్రీ ఉగ్రమావ్‌సింగ్ పక్షాన నేను హైకోర్టులో డిఫెన్సు సాక్షిగా వాజ్మూలం ఇవ్వాల్సింది. అయితే వాజ్మూలం ఇవ్వాల్సిన తేదీకీ నాలుగు రోజులు ముందుగానే నన్ను అరెస్టుచేసి మానసూరులో నిర్బంధించారు. నా సాక్ష్యం తీసుకోవడానికి నన్ను హైకోర్టుకు తీసుకొని రావడమా, లేక హైకోర్టు తీసుకో వడానికి నన్ను హైకోర్టుకు తీసుకొని రావడమా, లేక హైకోర్టు వారే మానసూరు వెళ్లి సాక్ష్యం రికార్డు చేయడమా అన్న మీమాంస వచ్చింది. నిజాం ప్రభుత్వం చివరికి చేసిన నిర్ణయం నన్ను మానసూరు నుంచి, హైదరాబాదులోని చంచల్‌గుడా సెంట్రల్ జైలులో ప్రత్యేక న్యాయస్థానం ద్వారా నా సాక్ష్యాన్ని రికార్డు చేయించాలనే. మానసూరులో నిర్బంధించిన తర్వాత నాలుగో రోజున నన్ను ఇనస్పెక్టర్ అష్ఫాకుల్లా మానసూరు నుంచి చంచల్‌గూడా సెంట్రల్ జైలుకు తీసుకొని వచ్చారు. హైకోర్టు న్యాయ మూర్తి శ్రీ ఖలీలుల్లా సిద్దీఖి-జూరీ సమక్షంలో నా వాజ్మూలాన్ని తీసుకున్నారు. జైలు నాలుగు గోడల చుట్టూ గట్టి పోలీసు బందోబస్తు చేశారు. హిందువులు జైలు మీద దాడి చేయగలరని వారి భయమట.

ఖాధీభక్తి

45 ఏళ్ల క్రిందిమాట. 1931లో పండిత్ జవహర్‌లాల్ నెహ్రూ శ్రీలంక నుంచి తిరుగు ప్రయాణంలో హైదరాబాదుకు వచ్చారు. భారతకోకిల శ్రీమతి సరోజినీనాయుడు స్వగృహం గోల్డెన్ త్రెష్‌హోల్డ్‌లో బసచేశారు. అప్పుడే ఆయన తన కరకమలాలతో రెసిడెన్సీ వద్ద (ఇప్పుడీ ప్రాంతాన్నే సుల్తాన్ బజార్ అంటున్నారు) ఖాదీ బండారుకు ప్రారంభో త్సవం చేశారు. అప్పటికే శ్రీ రామకృష్ణ ధూత్ గారు సంఘసేవా కార్యక్రమాల్లో నిమగ్నులై వున్నారు. ఆయన ప్రయత్నాల ఫలితమే ఖాదీ భండార్ ప్రారంభోత్సవం.

ఆయన కార్యక్రమాలతో ప్రభావితుణ్ణయి, ఆయనతో సహకరించాలన్న తలంపుతో నేను, తోపుదు బండ్ల మీద ఖాదీవస్త్రాలు వేసుకొని వీధి వీధికీ తిరిగి ఖాదీ అమ్ముతుండేవాణ్ణి, అప్పటి నుంచే నేను గాంధీజీ రాజకీయ కార్యక్రమాలలోనూ, నిర్మాణ కార్యక్రమాల లోనూ సహకరించడం ప్రారంభమైంది.

నవజీవవ వైతాళికుడు

హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో కాంగ్రెసు స్థాపన విషయంలో కూడా అనేక ఇబ్బందులు, ఆటంకాలూ ఎదురయ్యాయి. ఫలితంగా హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో రాజకీయ చైతన్యం మృగ్యమైంది. ధర్మవీరుడు పండిత్ వామన్ నాయక్ గారూ, హైకోర్టు న్యాయమూర్తి కేశవరావు గార్లు అనేక విధాల సాంస్కృతిక, విద్యా, సాంఘిక కార్యక్రమాల పేరుతో పరోక్షంగా రాజకీయ చైతన్యం కల్గించటానికి ప్రయత్నాలు చేశారు. వారి కార్యక్రమాలకు కూడా ప్రభుత్వం అడ్డంకులు కలుగజేయడం ప్రారంభించింది.

1934లో మహాత్మాగాంధీజీ హరిజనో ద్ధరణ కార్యక్రమంలో హైదరాబాదుకు వచ్చారు. ఆ రోజు సాయంకాలం వివేకవర్ధనీ థియేటర్ మైదానంలో బ్రహ్మాండమైన బహిరంగ సభ జరిగింది. లక్షలాది సంఖ్యలో జనం వచ్చారు. సభలో హరిజనోద్ధరణ గురించిన తమ అభిప్రాయాలను గాంధీజీ వివరించారు. ఆ ఉపన్యాసం విని ప్రభావితుల మైన మేము కాచీగూడలో హరిజన విద్యార్థి వసతి గృహాన్ని స్థాపించాము.

దీనికి శ్రీవామన్‌నాయక్ అధ్యక్షులుగా ఉండేవారు. శ్రీ రావి నారాయణరెడ్డి కార్యదర్శిగాను, శ్రీ ఎర్రం సత్యనారాయణ కోశాధ్యక్షులు గానూ ఉండేవారు. నేను కార్యవర్గ సభ్యునిగా ఉండేవాణ్ణి. సాంఘిక కార్యక్రమాల్లో నాకు అభిరుచి ఈ రెండు సంస్థలతో సంబంధం ఏర్పడిన నాటి నుంచే ప్రారంభమైనదనవచ్చు.

పరిస్థితులు మారినందువల్ల నైతేనేమి, నిజాం ప్రభుత్వపు దయనకాండ తీవ్రరూప్ ధరించిన దువల్లనై తేనేమి హైదరాబాదులోని రాజకీయ నాయకులు కళ్లు తెరిచారు. సాంఘిక ఉద్యమాల ద్వారా ప్రజలలో రాజకీయ చైతన్యాన్ని కల్గించే ఉద్దేశంతో ప్రాంతీయ విద్యా మహాసభలు, హైదరాబాదు సాంఘిక మహాసభలు, గ్రంథాలయాలూ మొదలైన రూపాల్లో ఉద్యమాలు ప్రారంభమైనాయి. ఈ సందర్భంగా శ్రీ రాఘవేంద్రరావు శర్మ. అడ్వొకేట్‌ను రాజకీయ చైతన్యం కల్గిస్తున్నాడని ఆరోపించి, నగర బహిష్కారం (షహరెబదర్) చేశారు. ఈయన అకోలాలో శ్రీ రామచంద్రనాయక్ బార్-ఎట్-లా అధ్యక్షతన రాజకీయ మహాసభ జరిపి, ప్రభుత్వ దమనకాండనూ, అత్యాచారాలనూ, అక్రమాలనూ, హింసా ప్రవృత్తులను గురించి వర్ణిస్తూ ప్రసంగించారు. ఈ వర్ణన వల్ల రాష్ట్ర ప్రజానీకం త్వరలోనే తిరుగుబాటుకు సమాయత్తమౌతున్నదని ప్రభుత్వానికి భ్రమ కలిగింది. హైకోర్టు న్యాయమూర్తి పండిత్ కేశవరావు, పండిత్ వామన్‌నాయక్, శ్రీ లక్ష్మణ్‌రావు గానూ, పండిత్ వినాయక రావు విద్యాలంకార్, శ్రీ చౌదరి దిగంబరరావు, అడ్వొకేట్ (ఔరంగాబాద్), శ్రీ గోవిందరావు నానల్, శ్రీ కాశీనాథరావు, అడ్వొకేట్, శ్రీ మాడపాటి హనుమంతరావు, శ్రీ బి. రామ్‌కిషన్‌రావు, శ్రీ ఎం. నరసింగరావు (రయ్యత్, పత్రిక సంపాదకులు), శ్రీ దిగంబరరావు బిందూ, మొదలైన నాయకులు హైదరాబాదు రాష్ట్ర రాజకీయ చరిత్రలో ప్రముఖ స్థానం వహించారు. హైదరాబాదు ప్రజలు విపరీత పరిస్థితుల్లో తమ మనుగడ సాగిస్తూ వుండిన రోజులవి. ఇలాంటి పరిస్థితుల్లో పైన పేర్కొన్న మహానుభావులు తమ ప్రాణాలు గుప్పెట్లో పెట్టుకొని ప్రజలకు సేవ చేశారు. తత్ఫలితంగా హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో నవజీవన వాతావరణం కనిపిస్తూ వున్నది.

ఇక్కడొక చారిత్రాత్మకమైన, విప్లవ పూరితమైన విషయాన్ని వివరించాల్సి ఉంది. ప్రేమ్ థియేటర్‌లో కుర్తకోటి జగద్గురు శంకరా చార్యుల వారి అధ్యక్షతన సోషల్ కాన్ఫరెన్సు జరుగుతున్నది. రాజా ప్రతాప్‌గీర్‌జీ స్వాగత సమితి అధ్యక్షులుగా ఉండేవారు. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలోని ప్రముఖ హరిజన నాయకుడు శ్రీ భాగ్యరెడ్డి, ఆది హిందూ సోషల్ సర్వీసు లీగ్ అధ్యక్షులు. ఈ మహాసలో ఆయన కూడా పాల్గొన్నారు. హరిజనోద్ధరణ విషయంలో రాయ్‌బాల్ ముకుంద్ రాయ్ ప్రత్యేక శ్రద్ధ వహించేవారు. మధ్యాహ్నం సభకు వచ్చిన ప్రేక్షకులూ ప్రతినిధులూ భోజనాలకు లేచారు. భోజనాలు జరుగు తుండగా పండిత్ కేశవరావు కోరట్కర్, పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్ గార్లు శ్రీ భాగ్యరెడ్డిని బహిరంగంగా గురువుల పంక్తిలో కూచోబెట్టి భోజనాలు వడ్డించారు. దాంతో కాస్త హంగామా జరిగింది. సనాతన ధర్మసభకు చెందిన శ్రీ రామచంద్రరావు (గౌలీగూడ) శ్రీ వామన్‌నాయక్‌పై పెద్ద హంగామా లేవదీశారు. అనేక మంది హిందూ బ్రాహ్మణులు పంక్తిలో నుంచి లేచి వెళ్లిపోయారు. అయితే ఇంత తీవ్రమైన వ్యతిరేకత వచ్చినా లెక్కచేయకుండా పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్, పండిత్ కేశవరావు కోరాట్కర్‌లు, శ్రీ భాగ్యరెడ్డివర్మతో బాటు సహపంక్తి భోజనం చేశారు. ఆ రోజుల్లో నేను శ్రీ కృష్ణస్వామి ముదిరాజ్ గారితో బాటు వాలంటీరుగా పనిచేశాను. శ్రీ కృష్ణస్వామి ముదిరాజ్, వాలంటీర్ దళానికి నాయకుడిగా వుండేవారు. ఈ స్వల్ప సంఘటన నగర మంతటా దావానలంలా వ్యాపించింది. ఈ సంఘటన తర్వాతనే గౌలీగూడ రామమంది రంలో గాంధీ జయంతి రోజున హరిజన దేవాలయ ప్రవేశం జరిపించాలని మేం నవ యువకులం నిర్ణయించుకున్నాము. సాంఘిక సంస్కరణ రంగంలో మా మొదటి చర్య ఇది. దాదాపు 45 సంవత్సరాల క్రింది విషయం ఇది.

రాజకీయ పోరాటం

హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో చాలా వేగంగా పరిస్థిలు మారడం ప్రారంభమైనవి. రాజకీయ వాతావరణంలో కాఠిన్యం, ఉన్మాదం, భయంకరత్వం చోటుచేసుకొన్నాయి. ఇంత భయంకరమైన వాతావరణం ఉన్నప్పటికీ లెక్కచేయకుండా నాయకులు ఆంధ్ర మహాసభ ద్వారా తెలంగాణా ప్రాంతంలో రాజకీయ కార్యలాపాలు ప్రారంభించారు. శ్రీ మాడపాటి హనుమంతరావు గారు, శ్రీ వెంకట రంగారెడ్డి గారు, శ్రీ జమలాపురం కేశవరావు గారు, శ్రీ బూర్గుల రామకృష్ణారావు గారు, శ్రీ సురవరం ప్రతాపరెడ్డి గారు ప్రముఖ పాత్ర వహించారు. ఇదే ప్రకారంగా కర్నాటక మహాసభలో శ్రీ జనార్ధన్ రావు దేశాయి, డాక్టర్ జి.యస్. మెల్కోటే, శ్రీనివాసరావు అఖిలీకర్ గారలూ, మహారాష్ట్ర మహాసభలో స్వామీ రామనందతీర్థ, శ్రీ కాశీనాథ రావు వైద్య, శ్రీ వినాయకరావు విద్యాలంకార్, శ్రీ గోవిందదాస్ షరాఫ్, శ్రీ వైశంపాయన్, శ్రీ బాబాసాహెబ్ పరాంజపే, శ్రీ శేషరావువాఘ్ మారే గారలు ప్రముఖ పాత్ర వహించారు. ఈ మహానుభావులందరూ ప్రజానీకంలో ఆత్మగౌరవాన్నీ, స్వాతంత్ర్య పిపాసనూ జాగృతం చేశారు. నిజాం నిరంకుశత్వానికి వ్యతిరేకంగా ఈ మహానుభావుల నాయ కత్వంలో సాగిన రాజకీయ పోరాటాలతో, ఒక సామాన్య ప్రజాసేవకునిగా నాకూ సంబంధాలుండేవి. స్వామీ రామానందతీర్థ, శ్రీ దిగంబరరావు బిందూగార్ల సూచన మేరకు నన్ను ఆంధ్రమహాసభ (బి)కి అధ్యక్షుణ్ణి చేశారు. హైదరాబాదు, సికిందరాబాదు-తిర్మలగిరి ప్రాంతాలకు పరిమితమైన క్షేత్రమిది. ఇటువంటి స్థానిక సమ్మేళనాల నుంచే స్టేట్ కాంగ్రెసు అవత రించింది. స్టేట్ కాంగ్రెసుకు మొట్టమొదటి అధ్యక్షులుగా స్వామీ రామానందతీర్థను ఎన్నుకున్నారు. స్వామీజీ దృష్టిలో రాష్ట్రమంతా సంస్థను పటిష్టం చేయడం, ఎక్కడికక్కడ స్థానికంగా పురోగమించడం ప్రధాన లక్ష్యాలయ్యాయి. ప్రజాస్వామ్య సోషలిస్టు సిద్ధాంతాల పునాదులను గట్టిపరచడానికి కృషి చేశారాయన. స్వామీజీ నిస్వార్థ

వ్యక్తిత్వం, కార్యదీక్ష నన్ను చాలావరకు ప్రభావితుణ్ణి చేశాయి.

హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ప్రజలకు జవాబు దారీ వహించగల బాధ్యతాయుత ప్రభుత్వ స్థాపనకోసం ఆందోళనకు స్టేట్ కాంగ్రెసు ఇచ్చిన పిలుపును పురస్కరించుకొని నేను రాష్ట్రమంతటా పర్యటించి జాతీయ స్వాతంత్రపోరాటం గురించీ, స్వతంత్ర రాష్ట్రం కోసం త్యాగాలు చేయవలసిన అవశ్యకత గురించి విరివిగా ప్రచారంచేశాను. 1938లో స్టేట్ కాంగ్రెసు సత్యాగ్రహం ప్రారంభించింది. ఈ సత్యాగ్రహంలో శ్రీ గోవిందరావు నానల్, రామకృష్ణధూత్, రావి నారాయణరెడ్డి, శ్రీ శ్రీనివాసరావు బోరేకర్ గార్లు పాల్గొన్నారు.

ఒక నెల రోజుల తర్వాత మహాత్మాగాంధీ గారి ఆదేశాలమేరకు సత్యాగ్రహ ఉద్యమాన్ని నిలిపివేశారు. ఈ సత్యాగ్రహంతో పాటే, హిందూమహాసభ, ఆర్యసమాజం సత్యాగ్రహ ఉద్యమాలు కూడా ప్రారంభం అయ్యాయి. హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో ఆర్యసమాజం వారు జరిపిన సత్యాగ్రహ పోరాటం భారతదేశ చరిత్రలో సువర్ణాక్షరాలతో లిఖించదగింది. హైదరాబాదులో అన్యాయాన్ని ఎదుర్కొన డానికి, నిజాంతో తలపడటానికి, కాశ్మీరు నుంచి కన్యాకుమారి వరకున్న దేశం నలు మూలల నుంచి నవ యువకులు గుంపులు గుంపులుగా వచ్చి రాష్ట్రంలోని జైళ్లన్నింటినీ నింపివేశారు. హైదరాబాదుపై పోలీసు చర్యల అనంతరం సర్దార్ వల్లభాయి పటేల్ ఇలా అన్నారు :- "హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో అంతకుముందు ఆర్యసమాజం వారు భారీ సత్యాగ్రహం చేసి ఉండకపోయినట్లయితే మూడే మూడు రోజుల్లో విజయాన్ని సాధించి వుండేవాళ్లం కాదు" హైదరాబాదు రాష్ట్ర విముక్తి పోరాటంలో ఆర్యసమాజం వహించిన పాత్రకు ఈ వాక్యాలు అద్దంపట్టి నట్లున్నా యిగద.

1938లోనే నిజాం ప్రభుత్వం స్టేట్ కాంగ్రెసును నిషేధించింది. దాన్ని వ్యతిరే కించడానికి స్వామీ రామనందతీర్థ నాయ కత్వంలో వ్యక్తిగత సత్యాగ్రహం జరిగింది. ఆయన అరెస్టు అయితే, సత్యాగ్రహానికి నాయకత్వం వహించవలసిందిగా స్వామీజీ నన్ను నామినేట్ చేశారు. అయితే గాంధీజీ జోక్యం వల్ల, పండిత్ జవాహర్‌లాల్ నెహ్రూ జోక్యంవల్ల ఈ సత్యాగ్రహం నిలిచిపోయింది. అయితే కాంగ్రెసుకూ, హైదరాబాదు ప్రభుత్వానికీ మధ్య రాజకీయ పోరాటం మాత్రం అంతం కాలేదు.

స్వతంత్రం

1947 ఆగస్టులో భారతదేశానికి స్వాతంత్ర్యం సిద్ధించింది. అదేరోజున పాకిస్తాన్ కూడా అవతరించింది. అయితే నిజాం రాజు మాత్రం "నేను ఎందులోనూ చేరను- స్వతంత్రంగా ఉంటాను" అని ప్రకటించాడు. స్వతంత్ర హైదరాబాదు రాష్ట్రం అన్న ప్రకటనతో దేశమంతటా, ముఖ్యంగా హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో అసంతృప్తి జ్వాలలు వ్యాపించాయి.

నేను రాష్ట్రమంతటా పర్యటించి, నిజాం నిర్దయం వెనకఉన్న ఫాసిస్టు మనస్తత్వాన్ని విపులీకరిస్తూ, ప్రజలందరూ, స్వామీ రామానందతీర్థ నాయకత్వంలో దీర్ఘకాలిక స్వాతంత్ర్య పోరాటాన్ని సమాయత్తం కావాలనీ ఉద్బోధిస్తూ ప్రజలను పోరాటానికి సమా యత్తం కావాలని ఉద్బోధిస్తూ, ప్రజలను పోరాటానికి సమాయత్తపరిచాను. నిజాం ప్రభుత్వపు వంశపారంపర్య పాలనను ఏ పరిస్థితిలోనూ నేను సహించేవాణ్ణి కాదు. స్వతంత్ర హైదరాబాదు రాష్ట్ర నినాదం, మరో పాకిస్తానును ఏర్పాటు చేయడానికి జరిగిన కుట్ర అని నాకు తెలుసు. నేను హష్మత్ గంజ్‌లో (ఇప్పుడు దీనికే రామకృష్ణధూత్‌గంజ్ అని నామకరణం చేశారు) 'అయ్యంగార్ కమీషన్'కు వ్యతిరేకంగా ఉపన్యసించి ఆర్య సమాజ మందిరానికి తిరిగి వెళ్తున్న సమయంలో, సుల్తాన్ బజార్ పోలీసు ఇన్‌స్పెక్టరు నన్ను అరెస్టు చేసి, రాత్రికి రాత్రే, చంచల్‌గూడా సెంట్రల్ జైలుకు తరలించాడు. నన్ను అరెస్టు చేసిన తర్వాత కొద్ది రోజులకే స్వామీ రామానందతీర్థ, డాక్టర్ మెల్కోట్, కృష్ణాచార్యజోషీ, అడ్వొకేట్ గార్లను అరెస్టు చేశారు. ఈ ముగ్గూరూ సుల్తాన్ బజారులో జాతీయ పతాకాన్ని ఎగురవేసి అరెస్టయ్యారు. ఈ ముగ్గురినీ నేనున్న చోటికే తెచ్చారు. చూస్తూ చూస్తూ ఉండగానే సెంట్రల్ జైలు ఒక చిన్న బస్తీగా తయారైంది. సత్యాగ్రహం సమాప్తమయ్యే నాటికి అక్కడికి చేరిన వారిలో శ్రీ బూర్గుల రామకృష్ణారావు, శ్రీ కాశీనాథ రావు వైద్య శ్రీ వినాయక రావు విద్యాలంకార్. శ్రీ హరిశ్చంద్ర హెడా, శ్రీ కొండావెంకట రంగారెడ్డి, శ్రీ రామకృష్ణధూత్, డాక్టర్ చెన్నారెడ్డి, శ్రీ దత్తాత్రేయ ప్రసాద్, శ్రీ బి.యస్, శ్రీ బి.యస్. మహదేవ్ సింగ్, శ్రీ ఎస్. వెంకటస్వామి, శ్రీ బి. వెంకటస్వామి, శ్రీ కాలీచరణ్, శ్రీ బిర్దీచంద్ చౌదరి, శ్రీ గంగారామ్, శ్రీ గణపతిరావు వైద్య మొదలైన వారంతా ఉన్నారు. జైలు జీవితంలోని ఆరోజులు మరుపురానివి. ఈ నాయకు లందరి ఆలోచనలనూ, అభిప్రాయాలనూ, వారి ప్రవర్తనలనూ, నడవడులనూ అవగా హన చేసుకొనే అవకాశం నాకు లభించింది.

'పోలీసు చర్య' తర్వాత ప్రభుత్వం మొదట మా ముగ్గురిని- స్వామీ రామానందతీర్థ, పండిత్ వినాయకరావు విద్యాలంకార్, నన్నూ విడుదల చేసింది. అధికార పిపాసతో కాసిం రజ్వీ, ఆయన అనుయాయులు రాష్ట్ర మంతటా తమ కల్లోలాల అగ్ని జ్వాలలను ప్రజ్వరిల్ల చేశారు. ఇస్లాం మత రాష్ట్రాధిపతిగా భావించబడుతున్న నిజాం ప్రభువు స్వయంగా రజ్వీ ముఠాకు బందీ అయినట్లుగా ఏమీ చేయలేని పరిస్థితిలో నామమాత్రపు స్వేచ్ఛతో ఉండవలసిన పరిస్థితి వచ్చింది. నగరంలో పరిస్థితిని అదుపులోనికి తెచ్చి రాష్ట్రంలో శాంతి భద్రతలను పునరుద్ధరించడంలో సహకరించవలసిందిగా మమ్మల్ని కోరడానికే ముందుగా విడుదల చేశారు. నేను ఒక సంవత్సరం నాలుగు నెలల తర్వాత బయటి ప్రపంచాన్ని చూశాను. నా జీవితంలో మొత్తం ఐదారు సంవత్సరాలు జైలులోనే గడిచి పోయాయి. హైదరాబాదు రాష్ట్రం స్వతంత్ర భారతంలో భాగం అయిపోయిన మరుక్షణం నా బాధ్యత పెరిగింది. రాష్ట్రంలో శాంతి భద్రతలను పునరుద్ధరించడం మా ప్రథమ కర్తవ్యం. స్టేట్ కాంగ్రెసు అధ్యక్షులైన స్వామీ రామానందతీర్థ గారు 'అమన్ కమిటీ' పేర శాంతి సంఘాన్ని నెలకొల్పారు. నన్ను దానికి కార్యదర్శిగా చేశారు. నాతోబాటు శ్రీ బాకర్ అలీ మీర్జా గారు కూడా కార్యదర్శిగా ఉండేవారు.

హైదరాబాదు నగరంలో సంపూర్ణ శాంతిని స్థాపించడం, ఎటువంటి ఘర్షణలూ

జరగకుండా చూడటం అనేది చాలా బృహత్తరమైన బాధ్యత. శాంతి స్థాపన కోసం రాత్రింబగళ్లు పనిచేశాం. ముస్లిములలో నిరాశా నిస్పృహాలు కలుగడం, వారి ధైర్యసాహసాలు సడలి పోవడం సహజమే. వారికి ధైర్యం కలిగించాల్సిన ఆవశ్యకత ఎంతైనా ఉండేది. ప్రభుత్వం కూడా అమన్ కమిటీతో సహకరించింది. ముస్లిం నాయకులను వ్యక్తిగతంగా కలుసుకొని పరిస్థితిని అదుపుచేయడానికి ప్రయత్నాలు జరిగాయి. ఈ విషయంలో శాంతి సంఘానికి విజయం చేకూరింది. స్టేట్ కాంగ్రెసు అధ్యక్షులు స్వామీ రామానంద తీర్థ, అమన్ కమిటి కార్యకలాపాలను అభినందిస్తూ రాసిన లేఖలో ఇలా అన్నారు: "మీరూ-డాక్టర్ మెల్కోటేగారూ కలిసి, హైద్రాబాదు నగరంలో ఎటువంటి దుస్సంఘటన జరగకుండా తీసుకున్న జాగ్రత్తలు, చేసిన ప్రయత్నాలూ అభినందనీయం. మీ ఈ ప్రయత్నాల వల్ల ముస్లిములకు సంతృప్తి కలిగిందనడంలో సందేహం లేదు. మీ ఉబయులనూ కాంగ్రెసు పార్టీ పక్షాన హృదయ పూర్వకంగా అభినందిస్తున్నాను."

రాజకీయాల్లో అసహనం

హైదరాబాదు స్టేట్ కాంగ్రెసు స్థాపన జరిగినప్పటి నుంచీ నేనందులో సభ్యుణ్ణి. ఐదు సంవత్సరాల పాటు కార్యవర్గ సభ్యునిగా కూడా ఎన్నికయ్యాను. దానితో బాటే హైదరాబాదు నగర కాంగ్రెసు సభ్యుడిగా కూడా కొనసాగాను. 1951 లో నేను నగర కాంగ్రెసు అధ్యక్షుడిగా వున్న కాలంలోనే నగర పాలక సంస్థ ఎన్నికలు జరిగాయి. హైదరాబాదు నగరపాలక సంస్థ చరిత్రలో మొట్టమొదటి సారిగా కాంగ్రెసు పార్టీకి చెందిన 60 మంది అభ్యర్థులు ఏకగ్రీవంగా ఎన్నికయ్యారు. 1952 లో విధాన సభకు సాధారణ ఎన్నికలు జరిగాయి. హైదరాబాదు నగరంలో కాంగ్రెసుకు అఖండ విజయం చేకూరింది. నగరం నుంచి ఎన్నికైన కాంగ్రెసు శాసన సభ్యుల్లో నేను కూడా వున్నాను.

1953లో అఖిల భారత కాంగ్రెసు మహాసభ, హైదరాబాదులోని నానల్‌నగర్‌లో, పండిత్ జవాహర్‌లాల్ నెహ్రూ అధ్యక్షతన జరిగినప్పుడు నేను దాని ఆహ్వాన సంఘం కార్యదర్శిగా పనిచేశాను. అఖిల భారత కాంగ్రెసు కమిటీలో రెండేళ్ల పాటు సభ్యుడిగా కొనసాగాను. ఐదు సంవత్సరాల పాటు శాసన సభ్యునిగా ఉన్నాను. క్రియాశీల రాజకీయంలో నా చివర ఘట్టం ఇదే. రాష్ట్రంలో కాంగ్రెసు సంస్థను పటిష్టం చెయ్యడానికి, నాకర్తవ్యాన్ని నిజాయితీతో నిర్వహించడానికి నేను సర్వవిధాలా ప్రయత్నించాను. అయితే రాజకీయ రంగంలో కర్తవ్యనిష్ఠ, త్యాగం, నిజాయితీ మొదలైన సద్గుణాలకు స్థానం లేదని, స్వార్థం, అధికార దాహం విపరీతంగా పెరగడాన్ని గమనించాను.

"చిరాగోఁ పర్ హీ కుఛ్ నహీ మౌకూఫ్
ఆద్మీ-ఆద్మీ సే జలతే హైఁ"

(దీపాలేకాదు-మనిషి మనిషిని కాలుస్తు న్నాడు) అన్న విషయాన్ని కూడా అనుభరీత్యా చూడగలిగాను.

ఈ వాతావరణంలో స్వేచ్ఛ లేదని పించింది. వరక్తి కలిగింది. నాలాంటి ప్రకృతి, అలవాట్లు, స్వభావాలు కలవారికి రాజకీయ రంగంలో స్థానం లేదని నిర్ణయించుకున్నాను- కాంగ్రెసు నుంచి విడిపోవడమే ఉచితమని భావించుకున్నాను. చక్రవర్తి రాజగోపాలాచారి గారు అన్నమాటలు సదా గుర్తుకు వస్తాయి. "స్వాతంత్ర్య సేనానుల పవిత్ర సంస్థ అయిన కాంగ్రెసు ఈనాడు అధికారదాహుల, స్వార్థ శక్తుల కూటమిగా మారింది" అన్నారాయన.

రాజకీయాల నుంచి దూరం

ఆర్య సమాజం పవిత్రాదర్శాల ప్రచారానికి నా జీవితాన్ని సమర్పించుకున్నాను. నిరంతరం ఆ కార్యక్రమంలోనే నిమగ్నమై ఉన్నాను. మానవ జాతిని చైతన్య పరచి మానవత్వాన్ని వికసింపచేయడంలో ఆర్య సమాజం చాలా ప్రముఖమైన పాత్ర వహించింది.

ప్రజాసేవ అనేది మొదటి నుంచీ నా జీవిత లక్ష్యం. నేను నిరంతరం సేవా కార్యక్రమాలను ఆచరిస్తూ వచ్చాను. దేశం కోసం పోరాడేది, త్యాగాలు చేసేది, చరిత్రను నిర్మించేది ప్రజలే. ప్రజల మధ్య ఉంటేనే నాకు గౌరవం, తృప్తి.

హిందీ నా మాతృభాష, హిందీ భాషపట్ల నాకు ప్రేమాభిమానాలు ఉండటం సహజం. హిందీని జాతీయ భాషగా చెయ్యాలని భారత ప్రభుత్వం నిర్ణయించిందంటే దానికి ప్రధాన కారణం, మన దేశంలో అంతటా హిందీ భాషను మాట్లాడటం, అర్థం చేసుకోవడం సామాన్యంగా జరుగుతూ వుండటమే. వైదిక భాష సంస్కృతంతో దానికి సంబంధం వున్నది. భారతీయ సభ్యతా సంస్కృతులను సుపంపన్నం చేసిన భాష ఇది. దేశంలోని అనేక భాషలపైన మౌలికంగా సంస్కృతం యొక్క ప్రభావం ఉన్నది. దేవనాగరి లిపి సంపూర్ణమైనదే కాక సశాస్త్రీయమైనది. ఈ మౌలికమైన జాతీయ దృక్పథంతోనే నేను జాతీయ భాష అయిన హిందీ భాషా ప్రచారానికి యథాశక్తి కృషిచేస్తూ వచ్చాను. హైదరాబాదులో హిందీ ప్రచారసభ స్థాపించినప్పటి నుంచీ దాని సభ్యుడిగా ఉండే అదృష్టం నాకు లభించింది. 1949 లో 'సభ' ఆహ్వానంపై అఖిల భారత హిందీ సాహిత్య సమ్మేళనం మహాసభలు హైదరాబాదులో, ప్రముఖ హిందీ సాహిత్యాకారులు శ్రీ చంద్ర బలీ పాండేగారి అధ్యక్షతన జరిగినప్పుడు నేను రాష్ట్రభాషా పరిషత్తు ఆహ్వానసంఘానికి అధ్యక్షునిగా ఉండే భాగ్యం లభించింది. నాలుగు సంవత్సరాల పాటు హైదరాబాదు హిందీ ప్రచార సభకు అధ్యక్షుడిగా కూడా నేను పని చేశాను. 1963లో నేను హైదరాబాదు హిందీ ప్రచార సభ అధ్యక్షునిగా ఎన్నికయ్యాను, నేను అధ్యక్షునిగా ఉన్న కాలంలోనే ఈ సభ రజత జయంతి 1966లో జరిగింది.

1967లో ఆంధ్రప్రదేశ్ హిందీ సమ్మేళన ఆహ్వాన సంఘం కార్యదర్శి పదవి కూడా నాకే లభించింది. ఈ సమ్మేళనానికి హింది జగత్తు లోని ప్రజాదరణ పొందిన నాయకుడు సేఠ్ గోవింద దాస్ అధ్యక్షత వహించారు. మద్రాసు ప్రభుత్వం హిందీ పట్ల ప్రదర్శించిన దుర్వ్యవహారానికి వ్యతిరేకంగా హైదరాబాదులో పెద్ద ఎత్తున ఉద్యమం జరిపాం. హిందీలోనే దైనందిన కార్యకలాపాలను కొనసాగించ వలసిందిగా ఈ సమ్మేళనం ద్వారా ప్రజలను అభ్యర్థించాం.

ప్రజాసేవ, సాంఘిక సేవకు సంబంధించిన నా ఈ కార్యక్రమం అసలు 'జగదీశ్ సభ' నుంచి ప్రారంభమైంది. దీన్ని నేను మా

బసజ్జీ 'షాలీబండా'లో స్థాపించాను. దీనితో బాటు ఒక గ్రంథాలయం, పఠన మందిరం ఉండేవి. ఆంధ్ర మహాసభ పేరుతో శ్రీ మాడపాటి హనుమంతరావు గారి నాయకత్వాన రాష్ట్రంలో గ్రంథాలయోద్యమం జరిగిన రోజుల్లోనే నేనిది స్థాపించాను. నవ యువక సంఘాన్ని స్థాపించే అవకాశం. దేశంలోని నవ యువకుల సేవ చేసే భాగ్యం కూడా నాకు కలిగింది.

నా కార్యపద్ధతి నా ప్రకృతి ఫలితంగా కొంత మంది ప్రసిద్ధులైన వ్యక్తులతో ఎదిరించి పోరాడవలసి వచ్చిన ఘట్టాలు కూడా నాకు జీవితంలో ఎదురయ్యాయి. అయితే నా అవగాహనా లోపం వల్ల గానీ, యవ్వనపు పొంగువల్లగానీ ఇలాంటివి జరిగి ఉండవచ్చు. లేదా నా కార్యపద్ధతిని ఇతరులు మెచ్చక పోవడం వల్ల లేదా ఇష్టపడకపోవడం వల్ల సహజసిద్ధంగానే ఇలాంటి పరిస్థితి ఉత్పన్నమై ఉండనూవచ్చు. కార్యక్షేత్రంలో సంఘ సేవకుడన్నవాడు దుర్గమ వీహాంతరాలనూ, లోతైన నదీనదాలను అధిగమించి ముందుకు పోక తప్పదు.

ఎవరైనా వ్యక్తికి ఏదన్నా బాధ్యత అప్పగిస్తే అతను ఆ బాధ్యతను నిర్వర్తించడానికి అవసరమైన కార్యక్రమాన్ని స్వేచ్ఛగా రూపొందించుకునే అవకాశం ఉండాలని, అలా రూపొందించుకోగలిగితేనే ఆ బాధ్యతను అతడు విజయవంతంగా నెరవేర్చడానికి అవకాశం ఉంటుందని విశ్వసించేవాణ్ణి నేను. ఈ పద్ధతిని అందరూ అంగీకరించక పోవచ్చు; ఇది లోపభూయిష్టమైన పద్ధతే కావచ్చు. కాని అతని సహచరులు కార్యక్రమంలో పదే పదే అడ్డు తగులుతూ దాని స్వరూపాన్నీ, దిశనూ మారుస్తూవుంటే, ఫలితంగా ఆ కార్యక్రమం యొక్క మౌలిక ఉద్దేశమే దెబ్బతిన్నప్పుడు, అలాంటి పరిస్థితుల్లో సైతం నిశ్చలంగా ఉండగలగడం, ఆవేశాన్ని అదుపులో పెట్టుకోగలగడం ఎవరో అసామాన్యులైన మహాపురుషులకు సాధ్యం కావచ్చు కాని నా తోటి సామాన్యుడికి సాధ్యపడేది కాదు. నాలో ఉన్న ఈ అలవాటు ఫలితంగానే నేను అనేక మంది ఆదరణీయులైన, త్యాగశీలురైన ఆర్య సమాజ నాయకు

శేషము 35 పేజిపై...

సాహసవంతుడు, త్యాగశీలి

పండిత్ నరేంద్రజీ గురించి

ప్రముఖ స్వాతంత్ర్య సమరయోధుడు, నిస్వార్థ దేశభక్తుడూ, నవయువక హృదయ సామ్రాట్‌గా హైదరాబాదు ఉక్కు మనిషిగా ప్రసిద్ధి చెందిన పండిత్ నరేంద్రజీ హైదరాబాదు సంస్థాన ప్రజా పోరాటంలో నిర్వహించిన పాత్ర చిరస్మరణీయమైనది, చరిత్రాత్మకమైనది. ఆయన ఆర్యసమాజ్ అగ్రశ్రేణి నాయకుడు. ఆ రోజులలో నిజాం రాజుకు వ్యతిరేకంగా ఉద్యమం నిర్వహించడం అంటే ఎంతో సాహసంతో కూడుకొన్న పని. అటువంటి పరిస్థితిలో అడుగడుగునా ప్రాణాపాయాన్ని ఎదుర్కొంటూ ఎటువంటి బలిదానానికైనా సంసిద్ధమై నిజాం నిరంకుశ పరిపాలనకు వ్యతిరేకంగా సాహసాపేతమైన పోరాటం జరిపిన నరేంద్రజీ జీవిత చరిత్రయే హైదరాబాదు స్వాతంత్ర్య పోరాటం చరిత్ర.

పండిత్ నరేంద్రజీ వ్యక్తిత్వానికి హైదరాబాదు రాష్ట్రప్రజల సాంఘిక, రాజకీయ ధార్మిక చరిత్రలో ప్రముఖ స్థానం ఉన్నది. ముఖ్యంగా దక్షిణ భారతదేశంలో ఆర్య సమాజ్‌ను సజీవంగా ఉంచి ఈ సంస్థ నిర్మాణానికి అహోరాత్రులు కృషిచేసిన మహనీయుడాయన. ఖాదీ, గ్రామీణ పరిశ్రమల అభివృద్ధి, అస్పృశ్యతా నివారణ. నిరక్షరాస్యతా నిర్మూలన, గ్రంథాలయోద్యమం వంటి నిర్మాణ కార్యక్రమాలలో కూడా ఆయన పాల్గొని ఎంతో సేవచేశారు. రాష్ట్రభాష హిందీ ప్రచారానికి ఆయన చేసిన సేవ శ్లాఘనీయమైనది. తనకు జ్ఞాపకం ఉన్నంత వరకు అనేక సంఘటనలను ఆయన ఈ ఆత్మకథలో ఉల్లేఖించారు.

1975 జూన్ 21వ తేదీన పండిత్ నరేంద్రజీ అనారోగ్యానికి గురియై కొంత కాలం ఢిల్లీలోనూ, తరువాత హైదరాబాదులోనూ చికిత్స పొందారు. ఆసుపత్రిలో ఉన్న రోజులలోనే ఒక రోజున "హైదరాబాదు సమాచార్" హిందీ వార పత్రిక సంపాదకులు, సుప్రసతీద్ధ సమాజ సేవకులు శ్రీ మునీంద్రజీ వారిని చూడటానికి వెళ్లటం జరిగింది. మాటల సందర్భంలో నరేంద్రజీ జీవితంలోని జ్ఞాపకాలు, అనుభవాలు అక్షరబద్ధం చేస్తే బాగా ఉంటుందని శ్రీ మునీందర్‌జీ సూచించారు. మునీంద్రజీ కోర్కెను తీర్చురు పండిత్‌జీ. ఆ మేరకు ఆయన అక్షర బద్ధం చేసిన జ్ఞాపకాలను ఆత్మకథగా రూపొందింది. "జీవన్‌కీ ధూప్‌ఛాంవ్" కు ఇది తెలుగు అనువాదం. ప్రసిద్ధ రచయిత, సంఘసంస్కర్త శ్రీ సురవౌళి దీనిని తెలుగులోకి అనువదించారు.

పండిత్‌జీ జీవితగాథను రేఖా మాత్రంగా

వివరిస్తున్న ఈ గ్రంథం తెలుగు పాఠకులకు ముఖ్యంగా హైదరాబాదు స్వాతంత్ర్య ఉద్యమాన్ని గురించి తెలుసుకోవాలన్న కుతూహలం ఉన్నవారికి ఎంతో ఆసక్తి కరంగా ఉత్తేజకరంగా ఉంటుందని ఆశిస్తు న్నాను. -ఎం.ఎల్. నరసింహారావు

సాహసవంతుడయిన స్వాతంత్ర్య యోధుడు నరేంద్రజీ; అందరు ఆయనను ప్రేమతో పండిత్‌జీ అని పిలిచేవారు. నిజాం ఫ్యూడల్, నిరంకుశ పాలన నుంచి పూర్వపు హైదరాబాదు రాష్ట్రాన్ని విముక్తం చేయడానికి కొనసాగిన స్వాతంత్ర్య సమరానికి ఆయన జీవితం ప్రధానంగా అంకితమయింది; అస్వాతంత్ర్య ఉద్యమంలోనే ఆయన జీవితంలోని అధికభాగం గడచిపోయింది.

పూర్వపు హైదరాబాదు రాష్ట్రంలో హిందువుల సంఖ్య మొత్తం జనాభాలో ఎనభయి అయిదు శాతం కంటె ఎక్కువగా ఉండేది. అయినప్పటికీ, హిందువుల అకాంక్షకు, అభిప్రాయానికి భిన్నంగా నిజాం హైదరాబాద్ రాష్ట్రంలో ఉర్దూను అధికార భాషగా నిర్బంధంగా ప్రవేశపెట్టాడు. అత్యధిక సంఖ్యాకులయిన ప్రజలకు అవకాశం ఇవ్వలేదు.

నిజాం పాలనలో ప్రాథమిక విద్యాసౌక ర్యాలు చాల అసంతృప్తికరంగా ఉండేవి. ప్రజలలో అనేకులు దారిద్ర్య రేఖకు దిగువన దుర్భరమైన పేదరికం అనుభవించడం జరిగింది; ఈ నిరుపేదలలో మారుమూల ముస్లిం ప్రజలు గూడ ఉన్నారు. నిజాం ప్రభుత్వ సాంఘిక సంస్కరణలలో శ్రద్ధ చూపలేదు. హిందువుల ప్రయోజనాలకు భిన్నంగా నిజాం రాజు ముస్లిం ప్రజలపట్ల మొగ్గుచూపినాడు- ముస్లింలకు అన్ని విధాల అనుకూలంగా వ్యవహరించాడు. ఇటువంటి క్లిష్ట పరిస్థితిలో, హైదరాబాద్ రాష్ట్రంలో ఆర్యసమాజ్ స్థాపన జరిగింది.

ఆర్య సమాజ్ సంస్థకు నరేంద్రజీ మూలస్తంభంగా, అండగా నిలిచాడు; అంతేకాదు, ఆయన విరోచితరీతిలో, నిజాం ముష్కర పాలనకు వ్యతిరేకంగా అనేక పోరాటాలు నిర్వహించాడు. ఎన్నో పర్యాయాలు వ్యక్తిగతంగా ఆయన మీద దాడి జరిగింది. ఆయన పలుసందర్భాలలో గాయుపడ్డాడు; కారాగారవాస క్లేశం అనుభవించాడు. పండిత్ నరేంద్రజీ విశాల హృదయుడు; ఆయన నిజమైన మతాతీత లౌకిక వాది, జాతీయ నాయకుడు. హైదరాబాద్ రాష్ట్ర కాంగ్రెసు ప్రారంభించిన ఫ్యూడల్ వ్యతిరేక పోరాటంలో పండిత్ నరేంద్జీ ప్రముఖ పాత్ర నిర్వహించినాడు; జైలు శిక్ష గూడ అనుభవించాడు. ప్రజలను ఉత్తేజ పరచగలిగిన గొప్ప వ్యక్తి నరేంద్రజీ. ఆయన గంభీర ప్రసంగాలను వినడానికి దూర దూర ప్రాంతాలనుంచి వేలాది మంది తరలి వచ్చేవారు. ప్రజలను ఆయన అద్భుతంగా ఉత్తేజ పరచగలిగేవాడు.

పండిత్ నరేంద్రజీ త్యాగపురుషుడు. రాజకీయ పదవులలో, అధికారంలో ఆసక్తిలేని నిష్కామయోగి ఆయన. రాష్ట్ర శాసన సభ్యుడుగా ఆయన నిర్వహించిన పాత్ర చిరస్మరణీయమైనది. హిందీభాషలో ఉత్తమ శ్రేణి రచయిత నరేంద్రజీ, ఆయన ఆధునిక విజ్ఞాన పిపాస అపరిమితమైనది. ఆయన మిత్రుల అభిమానుల సంఖ్య అనేకం. జీవితంలో చివరిక్షణంవరకు పండిత్ నరేంద్రజీ అన్యాయాలకు, అక్రమాలకు వ్యతిరేకంగా పోరాటం జరపినాడు. భావితరాల వారికి నరేంద్రజీ జీవిత చరిత్ర నిరంతరం మార్గదర్శకం కాగలదని ఆశిస్తున్నాను. -గోపాల్ రావు ఎక్బోటే

హైదరాబాదు సంస్థాన స్వాతంత్ర్య ఉద్యమంలో పండిత్ నరేంద్రజీ నిర్వహించిన పాత్ర ప్రశంసనీయమైనది. అత్యంత ధైర్యసాహసాలు గల స్వాతంత్ర్య సమర యోధుడాయన. ఆర్య సమాజ్ నిర్మాణానికీ, ఆర్యసమాజ్ ప్రచారానికీ ఆయన తన జీవిత సర్వస్వాన్ని అంకితం చేసినాడు. పండిత్ నరేంద్రజీ ఉత్తేజకరమైన ఉపన్యాసాలకు ప్రభావితులై ఎందరో యువకులు స్వాతంత్ర్య ఉద్యమంలోకి దూకినారు. అటువంటి వారిలో నేనొకణ్ణి. పండిత్ నరేంద్రజీ ఆత్మకథ ఈ రూపంలో తెలుగులో ప్రచురితమవు తున్నందుకు నేను ఎంతో సంతోషిస్తున్నాను.

పండిత్ నరేంద్రజీ వంటి సాహస వంతులు, స్వాతంత్ర్య సమరయోధుల, త్యాగధనుల జీవిత చరిత్రలను ఈనాటి యువతీ యువకులు, భావితరాలవారు పఠించి, వారిని ఆదర్శంగా తీసుకున్నప్పుడే మన స్వాతంత్ర్యానికి శ్రీరామరక్ష.

రామచంద్రరావు కల్యాణి
మాజీ మంత్రి

34వ పేజీ శేషము...

లను సైతం ఎదిరించవలసి వచ్చింది. అందువల్ల వారిపట్ల నాకెలాంటి అనాదరణ భావంగానీ, అగౌరవంగానీ లేదని స్పష్టం చేస్తున్నాను. నిజానికి వారి కార్యదీక్షనూ, యోగ్యతనూ నేను సదా ఆదరిస్తాను. ఈనాటికీ, వారీ ప్రపంచంలో లేకపోయినా, ఉన్నవారిపట్ల కూడా నాకు అదే ఆదరభావం ఉన్నది. వారి నిస్స్వార్థ ప్రజాసేవ, అపూర్వ త్యాగాలూ నా జీవితానికి మార్గదర్శకాలయ్యా అనడంలో సందేహం లేదు.

నేనిప్పుడు నూతన జీవిత విధానంలో అడుగిడబోతున్నాను. అన్ని రకాల వృత్తుల నుంచి సంపూర్ణ ముక్తిని సాధించి హృద యాన్ని క్షాళనం చేసుకొని పవిత్ర పథంలో అడుగువేయబోతున్నాను. నా కర్తవ్య నిష్ఠలో ఇటువంటి వాటిని ఇక రానివ్వను. నా జీవితంలో నా కర్తవ్యాన్ని పూర్తి చేయడంలో ఎవరికన్నా కష్ట-నష్టాలు సంభవిస్తే అందుకు నేను క్షంతవ్యుణ్ణి అని మనవి చేస్తున్నాను.

50 ఏళ్లు గడిచాయి. అనేక కార్యక్రమాల్లో నిమగ్నమై ఉన్నందువల్ల ఈ జ్ఞాపకాలను వ్రాయడానికి, నా జీవితానుభవాలను అక్షరబద్ధం చెయ్యడానికి ఇంత సమయం ఎప్పుడూ దొరకలేదు. డైరీలు రాసుకునే అలవాటు కూడా లేదు. అందువల్ల నా జ్ఞాపకశక్తి తోడ్పడినంతవేరకు, నా స్మృతులనూ అనుభవాలనూ ఇక్కడ అక్షర బద్ధం చేశాను.

అగలోం కో జమానా క్యా దేగా
అపనీ తో కహానీ ఖతం హుయీ
(ముందు వారికి కాలం ఏమి ఇవ్వగలదో
-నా కథ అయితే సమాప్తం అయింది)

పండిత్ జీ జీవితంలో

కొన్ని ప్రధాన ఘట్టాలు

జననం **10 ఏప్రిల్, 1907** (శ్రీరామ నవమి)

1930 లాహోరులోని ఉపదేశక్ విద్యాలయం (ఆర్యసమాజం) లో విద్యాభ్యాసం.

1931 స్వదేశీ ఉద్యమం. ఆర్యసమాజం కార్యకలాపాల్లో పాల్గొనడం ప్రారంభం.

1932 సాంఘిక, విద్యావిషయిక, సాంస్కృతికాభ్యున్నతి కార్యక్రమాల్లో పాల్గొనడం, దళితవర్గాల, గిరిజన, హరిజనాభ్యున్నతి కార్యక్రమాలు.

1933 హైదరాబాదు ఆర్యసమాజ్ కార్యక్రమాలలో ప్రవేశం.

1936 సుల్తాన్ బజార్ ఆర్య సమాజ్ మంత్రిగా ఎన్నిక.

1938 సత్యాగ్రహ ఉద్యమంలో పాల్గొన్నందుకు, రాజకీయ ఖైదీగా 3 సంవత్సరాల పాటు మన్ననూరు జైలులో నిర్బంధం.

1940 మధ్య దక్షిణ ఆర్య ప్రతినిధి సభ మంత్రిగా ఎన్నిక.

1944 అంతర్జాతీయ-(ఇంటర్నేషనల్) ఆర్యన్ లీగ్ ఉపాధ్యక్షులుగా ఎన్నిక.

1945 నైజాం రాష్ట్ర ప్రభుత్వ ద్రోహిగా ప్రకటించబడి, రాజకీయ సభలమీద, ఉద్యమాలలో పాల్గొనడం మీదా, ఉపన్యాసాలపైన నిర్బంధాలు విధించబడి, ఒక సంవత్సరంపాటు కారాగారవాసం.

1947 జూలై 31 న అరెస్టు. హైదరాబాదు సెంట్రల్ జైలులో స్వర్గీయ స్వామీ రామానంద తీర్థ, బూర్గుల రామకృష్ణారావు గార్లతో గడిపారు.

1949 ఆంధ్ర 'బి' (నగర) కాంగ్రెసు కమిటీ అధ్యక్షపదవి, పి.సి.సి. సభ్యులు.

1950-1954 వరకు నగర కాంగ్రెసు కమిటీ అధ్యక్షులు.

1952 శాసన సభ్యుడుగా ఎన్నిక.

1953 నానల్ నగర్‌లో జరిగిన ఏ.ఐ.సి.సి. మహాసభ ఆహ్వాన సంఘు కార్యదర్శి.

1963 హైదరాబాద్ హిందీ ప్రచార సభ అధ్యక్షులు.

1967 ఆంధ్రప్రదేశ్ హిందీ సమ్మేళణం ఆహ్వాన సంఘం కార్యదర్శి.

1976 మార్చి 14వ తేదీన సన్యాసాశ్రమ స్వీకారం.

1976 24 సెప్టెంబర్ నాడు స్వర్గస్థులైనారు.

చరిత్ర కెక్కిన చరితార్థులు స్వాతంత్ర్య సమర యోధుడు

శ్రీ ఎ. బాల్ రెడ్డి

1930లో గాంధీజీ సహాయ నిరాకరణోద్యమాన్ని లేవదీశాడు. ఈ ఉద్యమం ప్రభావంతో ఎందరో జాతీయ భావం కలవారు విదేశీవస్తు బహిష్కరణ, ఖాదీవాడకాన్ని గూర్చి ప్రచారం చేయసాగారు. విదేశీవస్తు బహిష్కరణోద్యమం బొంబాయిలో బాగా కొనసాగింది. ఆనాడు బొంబాయిలో విదేశీవస్తు బహిష్కరణ పికెటింగ్‌లో పాల్గొని ఎందరో యువకులు అరెస్టయ్యారు.

చిన్ననాడే పరిస్థితులను అవగాహన చేసుకొని స్వాతంత్ర్యోద్యమంలో పాల్గొన్నారు. శ్రీ ఎ. బాల్‌రెడ్డి నూనూగు మీసాల వయస్సులోనే బొంబాయిలో సహాయ నిరాకరణోద్యమంలో పాల్గొని అరెస్టయ్యారు.

ఆ తర్వాత 1942 నాటి క్విట్ ఇండియా ఉద్యమం దేశంలోని అన్ని ప్రాంతాలతో పాటు హైదరాబాద్ రాష్ట్ర వ్యాప్తంగానూ హైదరాబాద్ నగరంలోనూ ఉవ్వెత్తున లేచింది హైదరాబాద్‌లో యువకులంతా పెద్ద ఎత్తున సమ్మెలు చేశారు. ప్రదర్శనలు జరిపారు. శ్రీ బాల్ రెడ్డి ఆనాటి ఉద్యమంలో కూడా పాల్గొన్నారు.

ఇక 1948లో నిజాం ప్రభుత్వ దమన నీతికి వ్యతిరేకంగా ఉద్యమం కొనసాగుతున్నప్పుడు ఆగస్టు 24వ తేదీన హైదరాబాద్ రాష్ట్ర కాంగ్రెస్ కార్యాచరణ కమిటీ సమావేశం బెజవాడలో జరిగింది. పోరాటాన్ని కొనసాగించాలన్న దృఢసంకల్పాన్ని కార్యచరణ కమిటీ పునరుద్ఘాటించింది.

స్వాతంత్ర్య సమరయోధుడు శ్రీ బాల్‌రెడ్డి ఆనాటి సత్యాగ్రహ ఉద్యమంలో పాల్గొని జైలు జీవితాన్ని అనుభవించాడు.

శ్రీ బాల్‌రెడ్డి అల్ హైదరాబాద్ ట్రేడ్ యూనియన్ కాంగ్రెస్‌కు కార్యదర్శిగా ఎంతో కాల్ పనిచేశాడు.

హైదరాబాద్ రాష్ట్ర ప్రజానీకాన్ని జాగృతం చేసి వారిలో రాజకీయ చైతన్యం కలిగించే ఉద్దేశంతో అక్కడక్కడా ఆర్య సమాజ్ సభలను ఏర్పాటు చేశారు. ఆనాడు శ్రీ బాల్‌రెడ్డి ఆర్య ప్రతినిధి సభకు కార్యదర్శిగా కూడా పని చేశారు.

శ్రీ బాల్ రెడ్డి రంగారెడ్డి జిల్లా పోచంపల్లిలో 1915లో జన్మించారు.

వీరు ఆర్య ప్రతినిధి సభ ప్రధాన కార్యదర్శిగా ఎనలేని సేవ చేశారు.

స్వాతంత్రోద్యమంలో పాల్గొని ప్రముఖ స్వాతంత్ర్య సమరయోధుడుగా పేరు తెచ్చుకున్న వీరు ఎన్నో సన్మానాలనూ, సత్కారాలను అందుకున్నారు.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना, हैदराबाद के तत्वावधान में आर्य समाज वैदिक बाज़ार में

स्व.पंडित बंसीलाल व्यास व स्व.पंडित वेंकटेश्वर शास्त्री जी की याद में संस्मरण सभा

दिनांक 1 सितम्बर 2021 बुधवार को सायं 4.00 बजे से आयोजित की गई

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, హైదరాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఆర్య సమాజము వైదిక్ బజార్‌లో

కీ॥ శే॥ పండిత్ బన్సీలాల్ వ్యాస్ మరియు కీ॥ శే॥ పండిత్ వేంకటేశ్వర్ శాస్త్రి గారి సంస్మరణ సభను

తేది : 1 సెప్టంబరు 2021 బుధవారము రోజున, సా॥ 4.00 గం॥ల నుండి నిర్వహించబడినది.

पंडित बंसीलाल व्यासजी त्याग के प्रतिमूर्ति पुरुष थे । गुरुकुल घटकेश्वर के संस्थापक पंडित बंसीलाल व्यास जी ने अपना सर्वस्व गुरुकुल को समर्पित किया । आपने आर्य सत्याग्रह के दौरान एक ओर नागरिक अधिकारों की लड़ाई को लड़ते हुए शिक्षा के महत्व को समझा था । इसीलिए उनका संकल्प था कि गुरुकुल कांगड़ी के तर्ज पर दक्षिण भारत में और विशेषकर हैदराबाद परिसर प्रांत में एक गुरुकुल की स्थापना की जाए । संकल्प के अनुसार व्यासजी अनंतगिरि, विकाराबाद के जंगल में गुरुकुल की स्थापना १९३८ में की, पश्चात वातावरण के दृष्टि से इस गुरुकुल को घटकेश्वर गाँव में स्थानान्तरित किया । गुरुकुल घटकेश्वर

नाम से यह गुरुकुल इतना प्रसिद्ध हुआ कि प्रान्त के ग्रामीण इलाकों के गरीब बच्चों के लिए यह एक अद्भुत शिक्षा का केन्द्र बना । साथ ही साथ राष्ट्र भक्ति और आज़ादि के राष्ट्रीय आँदोलन का सूत्रधार भी बना रहा । सरल जीवन तथा त्याग और तपस्या के धनी पं. बन्सीलाल व्यास जी का निधन भी १-९-१९५६ की रात्री में जड़चर्ला के समीप अप्पन्नापल्ली के पास भारी वर्षा के कारण रेल दुर्घटना की वजह से हुआ । उनकी याद में भी आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज वैदिक बाज़ार में संस्मरण सभा आयोजित की गई । इस सभा में मुख्य वक्ता के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विठ्ठल राव जी तथा डॉ. वसुधा शास्त्री जी, श्री अरविन्द शास्त्री जी, श्री वैद्यनाथ जी व समाज की मुख्य कार्यकर्ता सुश्री वेदश्री जी व अन्य आर्य समाजों के प्रमुख महानुभावों ने भाग लिया ।

आर्य समाज के आदर्श व्यक्तित्व वाले निराडम्बर जीवी, तपस्वी व निरंतर कार्य करने वाले महान पं. वेंकटेश्वर शास्त्री जी का निधन होकर ३० वर्ष पूर्ण होने के संदर्भ में उनकी स्मृति में भी संयुक्त रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में आर्य समाज वैदिक बाज़ार में संस्मरण सभा का आयोजन १ सितम्बर २०२१, बुधवार के दिन किया गया । पं. वेंकटेश्वर शास्त्री जी 'विराट' पत्रिका के सम्पादन के लिए स्मरणीय रहें है । उन्होंने जीवन के आखरी दिनों में यह संकल्प लिया था कि 'विराट' पत्रिका पाँच भाषाओं में प्रकाशित हो, साथ ही साथ चारों वेदों का भाष्य सहित प्रकाशन भी हो । उनका यह संकल्प आगे बढ़ता गया पर उन्हें उनका स्वास्थ्य साथ नहीं दिया । पं. वेंकटेश्वर शास्त्री जी पत्रिका के सम्पादन, प्रकाशन व वितरण में नियमितता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं । वेदों के तथा संस्कृत व आर्ष ग्रन्थों के अध्येता पं. वेंकटेश्वर शास्त्री जी सरल व्यक्तित्व के धनी थे और निराडम्बरता के लिए भी बहुत प्रसिद्ध रहें है । उनकी आकांक्षा रही है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली देश में सर्वत्र लागु हो तथा पुनः भारत चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना करें । उनके इस महान सपने को साकार करने के दिशा में आर्य समाज योजना बद्ध तरीके से निरंतर कार्य करता रहे तथा उनकी इस आशय की याद में, उनके कार्यों को पुर्नउद्घाटित करते हुए समिष्टिगत संकल्प लेने के लिए सबके सहयोग से शास्त्रीजी की स्मृति में संस्मरण सभा का आयोजन किया था ।

ఆర్య సమాజములో ఉన్నత వ్యక్తిత్వముగల, నిరాడంబరతకు ఆదర్శమూర్తియైన తపస్వీ పండిత వేంకటేశ్వర శాస్త్రి గారు స్వర్గస్థులై 30 సం॥లు పూర్తి అయినవి. ఈ సందర్భమున వారి స్మృతిలో ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, హైదరాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఆర్య సమాజము వైదిక్ బజార్‌లో సంస్మరణ సభ 1వ సెప్టంబరు 2021, బుధవారము నాడు నిర్వహించబడినది. పండిత వేంకటేశ్వర శాస్త్రి గారు 'విరాట్' పత్రిక సంపాదకులుగా చిరస్మరణీయులు. వారు విరామము లేకుండ నిరంతరముగ పని చేసే వ్యక్తిత్వముగల పండితులు. వేంకటేశ్వర

శాస్త్రి గారి చివరి సంకల్పము ఏమనగా 'విరాట్' పత్రికను ఐదు భాషలలో ప్రచురితం చేయడము మరియు నాలుగు వేదాలను భాష్య సహితముగా ప్రచురించడము. వేదములలో, సంస్కృత భాష మరియు ఆర్ష గ్రంథముల అధ్యయన అధ్యాపనములో నిష్ణాతులైన పండిత శ్రీ వేంకటేశ్వర శాస్త్రి గారు సరళ జీవితానికి ఆదర్శము. మహర్షి దయానంద సరస్వతి ప్రతిపాదించిన విద్యా విధానమును యావత్ భారతదేశములో అమలు చేయాలని శాస్త్రీ గారి ప్రగాఢ ఆకాంక్ష. ఇదే విధముగా భారతదేశము చక్రవర్తి సామ్రాజ్యమును స్థాపించి ప్రపంచానికే మార్గదర్శకం కావాలని వారి ఆకాంక్ష. శాస్త్రీ గారి ఆకాంక్షలను సాకారం చేయు దిశగా ఆర్య సమాజము నిబద్ధతతో నిరంతరముగా పనిచేయు సంస్థగా మారాలని, వారి స్మృతిలో వారి అభిప్రాయములు ఉటంకిస్తూ సమిష్టి సంకల్పము తీసుకోవుటకై అందరి సహకారంతో శాస్త్రీ గారి సంస్మరణ సభ నిర్వహించబడినది.

పండిత్ బన్సీలాల్ వ్యాస్

పండిత్ బన్సీలాల్ వ్యాస్ గారు త్యాగ పురుషులు. గురుకుల్ ఘట్‌కేశ్వర్ సంస్థాపకులైన పండిత్ వ్యాస్ గారు తన సర్వస్వాన్ని గురుకులానికి సమర్పించిన విషయము జగత్ విదితము. నైజాం కాలములో సామాన్యజనుల యొక్క సాంస్కృతిక, నాగరిక హక్కులను రక్షించుకోవుటకై ఆర్య ప్రతినిధి సభ ద్వారా ప్రారంభింపబడిన ఆర్య సత్యాగ్రహములో పాల్గొంటు విద్య యొక్క మహాత్యమును గుర్తించిన మహనీయుడు వ్యాస్‌జి. గురుకుల కాంగడి తరహాలో దక్షిణాత్య దేశంలో, ప్రత్యేకంగా హైదరాబాద్ పరిసర ప్రాంతములో గురుకుల్‌ను స్థాపించే ప్రగాఢ సంకల్పము వల్ల 1938లో గురుకుల్‌ను అనంతగిరి, వికారబాద్‌లో స్థాపించి తదుపరి ఘట్‌కేశ్వర్ గ్రామానికి తరలించారు. గ్రామీణ ప్రాంతవాసులైన పేద విద్యార్థులకు ఇది ఒక అద్భుతమైన విద్యాకేంద్రంగా మారింది. దేశభక్తితో పాటు స్వాతంత్ర్య పోరాటానికి సంబంధించిన జాతీయ ఉద్యమానికి కూడా ఒక ఊపు ఊపటానికి గురుకుల్ ఘట్‌కేశ్వర్ కేంద్ర బిందువుగా మారింది. పండిత్ బన్సీలాల్ వ్యాస్ గారి మరణము భారీ వర్షాల వల్ల జరిగిన రైలు దుర్ఘటనలో 1-9-1956 నాడు రాత్రి జడ్చర్ల మహబూబ్‌నగర్ మధ్యలో అప్పన్నపల్లి సమీపంలో జరిగినది.

ఈ సమావేశంలో ముఖ్యవక్తగా ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అధ్యక్షులైన ప్రొ॥ విఠల్‌రావు ఆర్య గారు, డా॥ వసుధా శాస్త్రి, శ్రీ అరవింద్ శాస్త్రి, శ్రీ వైద్యనాథ్ ఆర్య గారు, ఆర్య సమాజ్ వైదిక్ బజార్ ప్రముఖ కార్యకర్త సుశ్రీ వేదశ్రీ మరియు ఆర్య సమాజ ప్రముఖ కార్యకర్తలందరు పాల్గొన్నారు.

ఆర్య సమాజం మహబూబ్‌నగర్‌లో బ్రహ్మగా డా॥ విశ్వశ్రవ: గారు శ్రావణీ వేదప్రచార మహాయజ్ఞమును వారం రోజులపాటు నిర్వహించి వేదోపదేశము చేశారు. పూర్ణాహుతి రోజున ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారు, ఉపాధ్యక్షులు బాదమి శివకుమార్ గారు, ఉపాధ్యక్షులు డా॥ సి.హెచ్. చంద్రయ్య గారు ఆర్య సమాజ్ మహబూబ్‌నగర్ అధ్యక్షులు డా॥ భరద్వాజ్ నారాయణ రావు గారు, డి.ఇ.ఓ. శ్రీ రవీందర్ గారు, సభ ఉపమంత్రి శ్రీ కృష్ణ భగవాన్ గారు మరియు ప్రముఖులందరు పాల్గొన్నారు. శ్రీ నర్సింహ్మ రెడ్డి కార్యవాహక్ మంత్రి ఆర్య సమాజం మహబూబ్‌నగర్ కార్యక్రమాన్ని నిర్వహించారు.

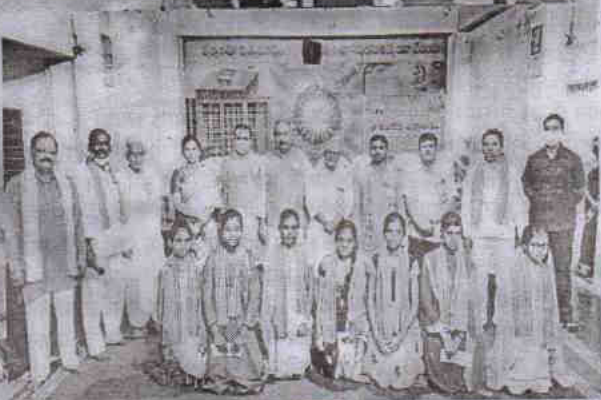

ఆర్య సమాజం ఉప్పల్, హైదరాబాద్‌లో బ్రహ్మగా శ్రీ పం. వేదసింధూ గారు శ్రావణీ వేదప్రచార మహాయజ్ఞమును నిర్వహించి వేదోపదేశము చేశారు. పూర్ణాహుతి రోజున పాల్గొన్న ప్రముఖులందరికి సన్మానిస్తున్న శ్రీ వేదసింధు గారు. చిత్రంలో అందరిని చూడవచ్చును.

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో బేగంపేట్‌లోని వైదిక్ ఆశ్రమం కన్యాగురుకులంలో శ్రావణీ పౌర్ణిమ నాడు ఉపాకర్మ పర్వమును నిర్వహించనైనది. అదే విధముగా ఆర్య సత్యాగ్రహంలో మాతృభూమికై బలిదానాలు ఇచ్చిన అమరవీరులకు శ్రద్ధాంజలి ఘటిస్తు సభను నిర్వహించనైనది. కార్యక్రమానికి సంబంధించిన చిత్రాలలో విద్వాంసులు, ప్రముఖులు మరియు యజ్ఞమును నిర్వహిస్తున్న పండిత్‌వర్యులను చూడవచ్చును.

ఆర్య సమాజం మహబూబ్‌నగర్ వారు శ్రావణీ వేదప్రచార సందర్భంలో విచ్చేసిన అతిథులను సన్మానిస్తున్న చిత్రం చిత్రంలో జడచర్ల ఆర్య సమాజానికి సంబంధించిన గుజ్జ అశోక్ గారు, శ్రీ బాదమి శివకుమార్ గారు తదితరులు

ఆర్య సమాజం కాచిగూడలో శ్రావణీ వేదప్రచార సందర్భంలో యజ్ఞమును నిర్వహిస్తున్న బ్రహ్మ పండితవర్యులు డా. సుమధ-అరవింద్ శాస్త్రి గారు.

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-09-2021 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 040-24760030, 040-24558707
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

ఆర్యసమాజ్ న్యూబోయిన్‌పల్లి

శ్రావణమాస పూర్ణాహుతి

తేది : 06-09-2021, సోమవారం
ప్లవనామ సం॥ర శ్రావణమాసం
బహుళ చతుర్థశి ప్రాతఃకాలం 6.00 గం॥లకు
శ్రావణమాస వేదప్రచార పూర్ణాహుతి జరుగును.

అందరికి ఇదే మా ఆహ్వానము

అందరు ఆహ్వానితులే

కార్యదర్శి : బృహస్పతి గురూజీ

ఆర్యసమాజ్ న్యూబోయిన్‌పల్లి SINCE - 1939
అనుబంధము
"ఆర్యప్రతినిధిసభ ఆం.ప్ర.తెలంగాణ"
పండిత్ నరేంద్రభవన్

వివరాలకు సంప్రదించండి

9652669732

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email :acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विठ्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिकडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.